महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर

(MGSUB)

मास्टर ऑफ् आर्ट्स (संस्कृत)

अर्द्धसत्रानुसारी

पाठ्यक्रम

MASTER OF ARTS (SANSKRIT)

SEMESTER SYSTEM

SYLLABUS

(LOCF)

शिक्षा-सत्र : 2025-2026

✍ निर्मिति ✍

संस्कृत–अध्ययन–मण्डल

पुरोवाक्

श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है कि संसार में ज्ञान के समान पवित्र कुछ भी नहीं है – "नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।" अतीत में जब इस भारतवर्ष में तक्षशिला, नालन्दा, वल्लभी, विक्रमशिला जैसे विद्यातीर्थकल्प ज्ञान-केन्द्र थे, तो यह राष्ट्र जगद्गुरुत्व के वैभव से मण्डित था और तब कोई आचार्य अनायास यह गर्वोक्ति कर सकता था कि विश्वभर से लोग यहाँ आएँ और हमसे सीखें – 'स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।' किञ्च, यह केवल हमारी आत्मप्रशस्ति न थी, बल्कि मेगस्थनीज़-फाह्यान-ह्वेनसांग-इत्सिंग-इब्नबतूता इत्यादि विदेशी लेखकों ने भी हमारी शिक्षा-व्यवस्था का मुक्तकण्ठ से यशोगान किया है। किन्तु, विदेशी दासता के सुदीर्घ दौर में हमारे स्वत्व का दलन हुआ, आत्म-विस्मरण हुआ, स्वाभिमान का क्षरण हुआ और शनैः शनैः हमारा वह शिक्षा-गौरव भी धूसर होता चला गया। उस विस्मृत-विगलित-विलुप्त शिक्षा-गौरव की पुनः प्रतिष्ठा करना वर्तमान समय की एक बड़ी चुनौती हमारे समक्ष है। स्वातन्त्र्य के पश्चात् भी सुदीर्घ काल तक हमारी शिक्षा-प्रणाली आलोचना का विषय रही। हिन्दी के प्रसिद्ध व्यङ्ग्यकार श्रीलाल शुक्ल ने 1970 में प्रकाशित अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'राग दरबारी' में एक जगह लिखा कि "भारतीय शिक्षा-पद्धति सड़क पर पड़ी कुतिया के समान है, जिसे कोई भी ठोकर मारकर चला जाता है।" शैक्षिक गोष्ठियों में, विद्वच्चर्चाओं में, अकादमिक बहस-मुबाहिसों में, राजनीतिक भाषणों में, अख़बारों के सम्पादकीय पन्नों में, पत्र-पत्रिकाओं के लेखों में सब कोई इस शिक्षा-प्रणाली की निन्दा करते रहे, मज़म्मत करते रहे, इसे गरियाते रहे, किन्तु कभी उसमें आमूल परिवर्तन नहीं हो सका।1986 की शिक्षा-नीति के बाद के काल में तो इस विषय में विशेष कोई प्रयास ही नहीं हुए।

परन्तु, अब लगभग तीन दशकों के बाद, इस विषय में व्यापक विमर्श (जिसमें 2 वर्ष का समय और 2 करोड़ से अधिक हितधारकों के सुझाव समाहित हैं) के पश्चात् सर्वव्यापी-सर्वस्पर्शी-सर्वसमावेशी राष्ट्रीय शिक्षा-नीति 2020 आई है, जो राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत होने के कारण वास्तविक अर्थ में 'राष्ट्रीय' शिक्षा-नीति है और वैश्विक स्तर पर जिसकी प्रशंसा हो रही है। इस शिक्षा-नीति में ज्ञानाधारित सर्जनात्मकता व रचनात्मकता के साथ प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्चतर शिक्षा का ख़ाका है। इस नीति में न केवल शिक्षा के अप्रासंगिक और कालबाह्य ढ़ाँचे को आमूल-चूल बदला गया है, अपितु शिक्षा में नवोन्मेष, नवाचार व नवानुसन्धान के साथ मनुष्य-निर्माण पर बल दिया गया है। यह नीति पूर्णतः भारत-केन्द्रित और विद्यार्थि-केन्द्रित है तथा अतीव समृद्ध प्राचीन भारतीय ज्ञान-कोष की महत्ता को रेखाङ्कित करती है।

यह मातृभाषाओं और हिन्दी-संस्कृत समेत समस्त भारतीय भाषाओं के महत्त्व को स्वीकार करती है। संस्कृत के विषय में इस शिक्षानीति से जो आश्वासन मिला है, उससे भारतीय संविधान की आत्मा को भी तोष होगा। मातृभाषाओं में प्राथमिक शिक्षा और भारतीय भाषाओं में सर्वविध शिक्षा, यह अब तक भारतीय-भाषाभिमानियों के लिए एक स्वप्न था। किन्तु अब अनेक स्थानों पर चिकित्सा व अभियान्त्रिकी आदि की शिक्षा भी भारतीय भाषाओं में उपलब्ध करवाने के प्रयास चल रहे हैं –

पाठ्यक्रम बन रहे हैं, तकनीकी शब्दावली का निर्माण हो रहा है, पुस्तक-लेखन हो रहा है। "...भारतीय भाषाओं में प्रवीणता को रोज़गार-अर्हता के मानदण्डों के एक हिस्से के तौर पर शामिल किया जाएगा" – यह राष्ट्रीय शिक्षा-नीति 2020 के भाषाओं पर केन्द्रित अध्याय 22 का अन्तिम वाक्य है। यह अकेला संकल्प ही अगर सत्यनिष्ठा से लागू कर दिया गया, तो हमारी संकटापन्न भाषाएँ फिर से जी उठेंगी।

वस्तुतः यह नीति छात्र, शिक्षक व भाषा के बीच का त्रिकोण है। इसका मुख्य उद्दिष्ट 'वाइब्रेंट नॉलेज सोसायटी' का निर्माण, उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, मानवीय व राष्ट्रीय भाव का जागरण, सत्परम्परा के संरक्षण के साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास और अन्तिम छोर पर विद्यमान व्यक्ति तक शिक्षा का उजास पहुँचाना है। 'नेशन फ़र्स्ट, कैरेक्टर मस्ट' यह इस शिक्षानीति का सूत्र-वाक्य है।

राष्ट्रीय शिक्षानीति का एक वैशिष्ट्य है – CBCS यानी 'विकल्पाधारित श्रेयाङ्क प्रणाली' (Choice Based Credit System)। पहली बार विषय-चयन की सीमाओं को तोड़ते हुए उसमें लचीलापन दिया गया है और शिक्षा-क्षेत्र में बहुविषयक (Multidisciplinary) और अन्तरानुशासनिक (Cross-disciplinary) अध्ययन के द्वार खुल रहे हैं। अब छात्र अपनी रुचि, मति और गति के अनुसार विषय-चयन कर सकेंगे। कितना अच्छा होगा, जब भौतिकशास्त्र का छात्र संस्कृत पढ़ सकेगा, संस्कृत का छात्र भी विज्ञान-वाणिज्यादि के विषय का चयन कर सकेगा और इसी तरह सर्वत्र एक अनुशासन में वर्तन करते हुए भी दूसरे अनुशासन में संक्रान्ति संभव होगी। इसी प्रकार अब छात्र एक उच्च शिक्षा-संस्थान से दूसरे संस्थान में संक्रमण कर सकेंगे। अब यदि किसी छात्र को त्रिवर्षीय स्नातक करते हुए एक या दो वर्ष का अध्ययन पूर्ण करके किसी कारण से अध्ययन बीच में छोड़ना पड़ गया, तो इस नई व्यवस्था में उसका पीछे का कृत श्रम व्यर्थ नहीं जाएगा, जैसा कि कर्मयोग के सन्दर्भ में श्रीमदभगवद्गीता में कहा गया है – 'नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते।' जितना कर लिया, उसका लाभ दो तरह से मिलेगा। एक तो इस दौरान उसके द्वारा अर्जित श्रेयाङ्क (क्रेडिट) 'एकेडेमिक क्रेडिट बैंक' में जमा हो जाएँगे और यदि वह छात्र एक निश्चित समयावधि में अपनी डिग्री पूरी करने के लिए वापस आ जाता है, तो बैंक में जमा ये क्रेडिट उसकी डिग्री में जुड़ जाएँगे (यहाँ उल्लेखनीय है कि विश्वविद्यालय के द्वारा छात्रों की एबीसी (Academic Bank Of Credit) आईडी बनवाने की प्रक्रिया पहले ही शुरू की जा चुकी है)। किसी अकादमिक कार्यक्रम से जुड़ने और उसे छोडने की यह लचीली व्यवस्था 'बहुविध प्रवेश तथा निकास' – Multiple Entry and Multiple Exit (MEME) कहलाएगी। साथ ही, स्नातक कार्यक्रम का केवल प्रथम वर्ष पूर्ण करने वाले छात्र को 'सर्टिफिकेट' तथा द्वितीय वर्ष पूर्ण करने वाले छात्र को 'डिप्लोमा' प्रदान किया जाएगा, ऐसी योजना है।

अन्तर्निहित सामर्थ्य की अभिव्यक्ति ही शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य है, किन्तु उसके लिए लक्ष्याभिमुख सात्त्विक श्रम चाहिये, तपस् चाहिये। शास्त्र कहता है कि तपस् से ही सिद्धि मिलती है, तपस् ही प्रत्येक साधन का मूल है – 'तपोमूलं हि साधनम्।' हमें भी अपने तपस् (Academic Rigour) से शिक्षा के लक्ष्य को अधिगत करना है। 'सा विद्या या विमुक्तये' – यह विद्या का वास्तविक लक्षण है, किन्तु आज का युगधर्म यह है कि हमें परा और अपरा दोनों

विद्या चाहिए, निःश्रेयस् (पारमार्थिक उन्नति) और अभ्युदय (लौकिक उन्नति) दोनों को देने वाली शिक्षा चाहिए, विद्या श्रेयस्करी के साथ अर्थकरी भी चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा-नीति का भी यह मन्तव्य है। हमें अपने संस्थानों और पाठ्यचर्या को तदनुकूल बनाना है। हमें उपनिषद् की उस चतुरङ्गिणी विद्या-संहिता का भी सदा स्मरण रखना है कि – आचार्य पूर्वरूप है, शिष्य उत्तररूप है, दोनों की सन्धि (संयोग से) विद्या प्राप्त होती है और प्रवचन (अध्यापन) ही आचार्य और शिष्य के बीच की योजक कड़ी है – 'आचार्यः पूर्वरूपम्, अन्तेवास्युत्तररूपम्, विद्या सन्धिः, प्रवचनं सन्धानम्।'

अतः प्रवचन के विषय-स्वरूप-मात्रादि का निर्धारण भी आवश्यक है। पाठ्यचर्या का निर्माण उसी आवश्यकता की पूर्ति का एक उपकरण है। शिक्षा-निकाय आचार्य-केन्द्रित (Teacher-centric) हों, आचार्य शिष्य-केन्द्रित (Disciple-centric) रहें, आचार्य और शिष्य की युति अध्ययन-केन्द्रित (Learning-centric) हो तथा अध्ययन आनन्द-केन्द्रित (Pleasure-centric) हो। इस चतुष्पदी व्यवस्था (Tetrapody) के निर्माण के लिए भी उद्देश्यपूर्ण, सर्वाङ्गपूर्ण, सन्तुलित व तर्कसंगत, मूल्याधारित, भारतीय ज्ञानपरम्परामूलक, रोचक, जीवनोपयोगी और भविष्योन्मुखी पाठ्यक्रम अपेक्षित है।

अस्तु, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, 'उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए यूजीसी गुणवत्ता अधिदेश-2021' तथा CURRICULUM AND CREDIT FRAMEWORK FOR POSTGRADUATE PROGRAMMES (UGC) इत्यादि के अनुरूप महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम की भी पुनारचना अपेक्षित थी। उसी सन्दर्भ में द्विवर्षीय परास्नातक (संस्कृत) का यह षाण्मासिक-अर्द्धसत्रानुसारी, संशोधित, परिष्कृत पाठ्यक्रम (परीक्षा-योजनादि के साथ) प्रस्तुत है।

✍ अस्वीकरण ✍

(Disclaimer)

पाठ्यक्रम को अकादमिक परिषद् और प्रबन्धन बोर्ड द्वारा अनुमोदित किया गया है। किसी भी पृच्छा के लिए कृपया सम्बन्धित सङ्काय से सम्पर्क करें।

सम्पर्क

डॉ. विक्रमजीत, प्रोफ़ेसर एवं प्रभारी,
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, राजकीय डूँगर महाविद्यालय,
बीकानेर, email: vkjdcb@gmail.com

अनुक्रमणिका

(TABLE OF CONTENTS)

क्रमाङ्क	सामग्री	पृष्ठाङ्क
1	पुरोवाक्	2-4
2	कार्यक्रम-फलितांश (Programme Outcomes)	7
3	कार्यक्रमविशिष्ट-फलितांश (Programme Specific outcomes)	8
4	शिक्षणाधिगम-प्रक्रिया (Teaching Learning Proces)	9
5	परास्नातक विशेषताएँ (Postgraduate Attributes)	9
6	कार्यक्रम-संरचना (प्रथमार्द्धसत्र से चतुर्थार्द्धसत्र पर्यन्त)	10-15
7	परीक्षा एवम् अङ्क-योजना	16
	प्रथमार्द्धसत्र (SEMESTER-I)	
	Ability Enhancement Course	
8	संस्कृत रचनानुवाद तथा संस्कृत-साहित्येतिहास – AEC-T101	17-18
	Discipline Centric Compulsory Courses	
9	वैदिक वाङ्मय – SANS-DCC-T102	19-22
10	साहित्य (गद्य-पद्य-नाट्य) तथा साहित्यशास्त्र – SANS-DCC-T103	23-26
11	सांख्य तथा योग दर्शन – SANS-DCC-T104	27-29
12	व्याकरण तथा भाषाविज्ञान – SANS-DCC-T105	30-33
	द्वितीयार्द्धसत्र (SEMESTER-II)	
	Discipline Centric Compulsory Courses	
13	वैदिक वाङ्मय – SANS-DCC-T202	34-36
14	साहित्य (गद्य-पद्य-नाट्य) तथा साहित्यशास्त्र – SANS-DCC-T203	37-40
15	न्याय तथा वेदान्त दर्शन – SANS-DCC-T204	41-43
16	व्याकरण तथा भाषाविज्ञान – SANS-DCC-T205	44-47
	तृतीयार्द्धसत्र (SEMESTER-III)	
	Discipline Centric Compulsory Courses	
17	संस्कृत निबन्ध, भाषानुवाद तथा व्याकरण – SANS-DCC-T302	48-51

18 19 20	शास्त्रीय साहित्य तथा गद्यकाव्य – SANS-DCC-T303(A) **अथवा** आधुनिक साहित्य – SANS-DCC-T303(B) **अथवा** आयुर्वेद, ज्योतिष तथा नित्यकर्मविधि – SANS-DCC-T303(C)	52-54 55-57 58-61
	Discipline Specific Elective Courses For Group 'A' (साहित्य) Students	
21	संस्कृत काव्यशास्त्र – SANS-DSE-GrA-T304	62-64
22 23 24	नाटक तथा नाट्यशास्त्र – SANS-DSE-GrA-T305(A) **अथवा** प्राचीन काव्य – SANS-DSE-GrA-T305(B) **अथवा** महाकवि कालिदास – SANS-DSE-GrA-T305(C)	65-67 68-70 71-73
	Discipline Specific Elective Courses For Group 'B' (व्याकरणशास्त्र) Students	
25	वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी – SANS-DSE-GrB-T304	74-76
26	शिक्षा तथा प्रक्रिया – SANS-DSE-GrB-T305	77-79
	चतुर्थार्द्धत्र (SEMESTER-IV)	
	Discipline Centric Compulsory Courses	
27	संस्कृत व्याकरण तथा व्याकरण-दर्शन – SANS-DCC-T402	80-82
28 29 30	शास्त्रीय साहित्य तथा गद्यकाव्य – SANS-DCC-T403(A) **अथवा** आधुनिक साहित्य – SANS-DCC-T403(B) **अथवा** आयुर्वेद, ज्योतिष तथा नित्यकर्मविधि – SANS-DCC-T403(C)	83-85 86-89 90-93
	Discipline Specific Elective Courses For Group 'A' (साहित्यशास्त्र) Students	
31	संस्कृत काव्यशास्त्र – SANS-DSE-GrA-T404	94-96
32	लघु शोध-प्रबन्ध/परियोजना (Dissertation/Project) – SANS-DSE-GrA-T405(A) **अथवा** नाटक तथा नाट्यशास्त्र – SANS-DSE-GrA-T405(B) **अथवा** प्राचीन काव्य – SANS-DSE-GrA-T405(C) **अथवा** महाकवि कालिदास – SANS-DSE-GrA-T405(D)	97-97 98-100 101-103 104-106
	Discipline Specific Elective Courses For Group 'B' (व्याकरणशास्त्र) Students	
33	वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी – SANS-DSE-GrB-T404	107-109
34	लघु शोध-प्रबन्ध/परियोजना (Dissertation/Project) – SANS-DSE-GrB-T405(A) **अथवा** व्याकरण महाभाष्य तथा प्रक्रिया – SANS-DSE-GrB-T405(B)	110-110 111-113
35	Useful links for E-Journals & other E-Resources	114-114

कार्यक्रम-फलितांश

Programme outcomes (POs)

On completing Masters in the faculty of Arts, the students shall be able —

POs	Description
PO1	To understand the word, their country, their society, as well as themselves and have awareness of ethical problems, social rights, values and responsibility to the self and to others. This is the awareness most needed today – 'वयं राष्ट्रे जागृयाम!'
PO2	To communicate effectively in Sanskrit, Hindi, English, Urdu, Punjabi and Rajasthani by oral, written, graphical and technological means. In today's external world, the skill of expression is a great power – 'अभिव्यक्तिः परा शक्तिः।'
PO3	To understand, analyse and explain the nuances expressed through language and literature and to develop newer ideas on the intellectual, organisational and personal level with the different perspective. Instead of being driven by the wisdom of others, they will be able to decide what is right and wrong using their own discretion, as stated – 'सन्तः परीक्ष्यान्यतरद्भजन्ते, मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः।'
PO4	To develop creative and critical insights, aesthetic sensibility, analytical skills and psychological and philosophical insights.
PO5	To recognise different value systems including their own, understand the moral dimensions of their decisions and accept responsibility for them.
PO6	To exercise values that reflect commitment to diversity and contribution to society.
PO7	To develop the skills to appreciate and participate in citizenship in the Academic community, in the larger community and in the world and be able to foster Bhāratīya ideals including truth and justice.
PO8	To elicit views of others, conduct meaningful discussions, agree to disagree, mediate disagreements and help reach conclusion in group settings. According to the Indian knowledge-tradition this is also considered a method of acquiring knowledge – 'वादे-वादे जायते तत्त्वबोधः।'
PO9	Develop knowledge of theories, concepts and research methods in humanities and social sciences.
PO10	Demonstrate skills to conduct research in accordance with the ethical standards of the discipline.
PO11	To know how to access written and visual primary and secondary sources of information, interpret concepts and data from a variety of sources in developing disciplinary and inter disciplinary analysis.
PO12	To develop effective teaching skills and be able to satisfy the university and the school-level expectation.
PO13	To be empowered to create an emotionally sensitive approach regarding social, cultural, political and mental issues of the society.
PO14	To acquire the ability to engage in self-directed, independent, philanthropic and self-satisfying lifelong learning. In fact, according to Indian tradition, education is a lifelong process – 'यावज्जीवमधीते विप्रः।'

कार्यक्रमविशिष्ट-फलितांशाः Programme Specific outcomes (PSOs)	
परास्नातक-संस्कृताध्ययनस्य केचन विशेषफलितांशास्तावदित्थं सन्ति –	
PSOs	**विवरणम्**
PO1	संस्कृतन्नाम नाना विद्यानामगाधो गभीरश्च रत्नाकरः। तत्र निमज्जनं विधाय शास्त्रजलमालोड्य विद्यारत्नस्य स्पर्शोऽपि कथञ्चिल्लभ्यते चेत् हृदयग्रन्थि-भेदनं, सर्वसंशयच्छेदनं, कर्मबन्धनाशनं, विमुक्तिद्वारोद्घाटनञ्च सम्भाव्यते। तदेव च विद्याधिगमस्य चरमं लक्ष्यम् – 'तत्कर्म यन्न बन्धाय, सा विद्या या विमुक्तये।'
PO2	संस्कृतं हि भारोपीय भाषा-परिवारस्य समृद्धतमा भाषा वर्तते। प्राचीनभारतीयेतिहासस्य, सभ्यतायाः, संस्कृतेः, धर्मस्य, दर्शनस्य, साहित्यस्य च विषये ज्ञातव्यञ्चेत् संस्कृताध्ययनमावश्यकम्। एम.ए. इति कार्यक्रमस्य पाठ्यक्रमस्तथा रचितः येन भारतस्य समृद्धज्ञानपरम्परायाः सम्यग्बोधो भवेत्।
PO3	साम्प्रतं सर्वसम्मतमेतत् तथ्यमस्ति यत् विश्वपुस्तकालयस्य प्राचीनतमो ग्रन्थः ऋग्वेदः विद्यते, तच्च संस्कृतेऽस्ति। गौरवाय इदं यत् अस्य ग्रन्थस्यापि आंशिकमध्ययनमत्र भविष्यति। एतेन न केवलं वैदिकसंस्कृतभाषायाः ज्ञानमपितु प्राचीन-ज्ञानराशेरपि साक्षात्कारः अध्येतॄणां भविष्यति।
PO4	प्राच्यविद्यानां तु प्रवेशद्वारमेव संस्कृतमस्ति। एतेन कार्यक्रमेण न केवलं श्रवणं-भाषणं-पठनं-लेखनमिति चतुर्णां भाषाकौशलानां विकासः सम्पत्स्यते किन्तर्हि प्राच्यविद्यानां क्षेत्रेऽप्रतिहता गतिरपि प्राप्स्यते।
PO5	वेदोपनिषद्-ब्राह्मणारण्यक-पुराण-शिक्षा-निरुक्त-व्याकरण-ज्योतिष-छन्दश्शास्त्र-धर्मशास्त्रार्थशास्त्र-नीतिशास्त्र-साहित्यशास्त्र-नाट्यशास्त्र-भाषाशास्त्र-षड्दर्शन-आधुनिकसाहित्यादिविविधविषयाणामध्ययनेन पूर्ण-व्यक्तित्व-विकासः संभविष्यति।
PO6	संस्कृत-काव्यानामनुशीलनेन नैतिक-सांस्कृतिक-सामाजिक-व्यावहारिक-मूल्यबोधावाप्तिः भविष्यति।
PO7	संस्कृत-साहित्य-रचना-संसारस्य परिचयः, साहित्यस्य साधुज्ञानेन प्रयोगबाहुल्याधिगमेन च प्रयोग-कौशलस्य वृद्धिः, श्लोकादिनिर्माणाय भाषावैचित्र्येऽधिकारश्च।
PO8	नानाविषयाणां सामान्याध्ययनेन संस्कृतसाहित्य-दर्शन-व्याकरणशास्त्राणाञ्च विशिष्टाध्ययनेन तुलनात्मकाध्ययनाय विवेकोपलब्धिः, शास्त्रान्तरेषु समीक्षणकलाविकासः, नानाविषयेषु गवेषणाय अर्हतालब्धिश्च।
PO9	नानाशास्त्रप्रवृत्तीनां रीतीनाञ्चावगमनेन तर्कशक्त्या शास्त्रोक्तसिद्धान्तानां खण्डन-मण्डनकौशलविकासः।
PO10	यूजीसी-परीक्षायां (NET/SLET) भागग्रहणार्हता, कनिष्ठ-वरिष्ठाध्येतावृत्ति(JRF/SRF)-लाभः, विद्यावारिधि(Ph.D.)-कृते प्रवेशार्हता च।
PO11	संस्कृतवाङ्मयस्य सतताध्ययनेन न केवलं भाषासंस्कारः दृढतरः भवति किन्तर्हि मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तस्यापि शोधनं सञ्जायते, यथोक्तम् – 'यदि नो संस्कृता वाणी, यदि नो संस्कृतं मनः। यदि नो संस्कृताचारः, संस्कृताध्ययनेन किम्?'
PO12	विश्वविद्यालये, महाविद्यालये, विद्यालये, इतरेषु शैक्षिकसंस्थानेषु च अध्यापकत्वावसरः। शोधप्रतिष्ठानेषु गवेषणाय अवसरप्राप्तिः, शोधपरियोजनासु नियोजनावसरश्च। संघलोकसेवायोग इत्यादि प्रतियोगिपरीक्षास्वपि साफल्य-सम्भावना। ज्योतिष-पौरोहित्यादि क्षेत्रेषु वृत्त्यवसरश्च। कृते प्रयत्ने फलप्राप्तिरवश्यम्भाविनी, फलप्राप्तौ च क्लेशापनयः भवतीति निश्चप्रचम् – 'क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते।'

शिक्षणाधिगम-प्रक्रिया
(Teaching Learning Process)

- प्रवचनम्।
- चर्चा-सत्रम्।
- स्पर्द्धायोजनम्।
- प्रश्नोत्तर-सत्रम्।
- भूमिका-निर्वहणम्।
- शोधपत्र-प्रस्तुतिः।
- सहभागात्मकं शिक्षणम्।
- सततं कक्षा-मूल्याङ्कनम्।
- लघुशोधप्रबन्धः परियोजनाकार्यञ्च।
- चतुर्विधभाषाकौशलानां शश्वद्विकासः।
- अधीतिबोधाचरणप्रचारणात्मकं वै प्रशिक्षणम्।

परास्नातक विशेषताएँ
(Postgraduate Attributes)

- यावज्जीवनं हि स्वाध्याय-प्रवचनाभ्यामप्रमादः।
- रचनात्मिका आलोचनात्मिका च विचारणा।
- आनुशासनिकं ज्ञानं विचार-गाम्भीर्यञ्च।
- तर्कशीलः वैज्ञानिकश्च स्वभावः।
- स्वकीय-ज्ञानपरम्परा-संरक्षणम्।
- चिन्तनशीला सात्त्विकी दृष्टिः।
- समस्या-समाधान-चातुरी।
- विश्लेषणात्मकं चिन्तनम्।
- शास्त्रपरम्परा-संरक्षणम्।
- धर्मसंस्कृति-संरक्षणम्।
- अनुसन्धान-कौशलम्।
- सम्प्रेषण-कौशलम्।
- नेतृत्व-कौशलम्।
- जीवन-कौशलम्।
- व्यवहार-शुचिता।
- नैतिकमूल्य-निष्ठा।
- सततं श्रमनिष्ठा।

स्नातकोत्तर (संस्कृत)
अर्द्धसत्रानुसारी
कार्यक्रम-संरचना

MASTER OF ARTS (SANSKRIT)

(STRUCTURE OF PROGRAMME)

सत्र : 2025-2026

प्रथमार्द्धसत्र - SEMESTER-I										
S.N.	**Course Title**	**Course Code**	**Level**	**L**	**T**	**P**	**Credits**	**Max. Marks (Ext.+Int.)**	**Minimum Passing Marks (%)**	**Hours in a Week**
	Ability Enhancement Course									
(i)	संस्कृत रचनानुवाद तथा संस्कृत-साहित्येतिहास	AEC-T101	6.5	2	0	0	2		Non-CGPA S/NS	2
	Discipline Centric Compulsory Courses									
(1)	वैदिक वाङ्मय	SANS-DCC-T102	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
(2)	साहित्य (गद्य-पद्य-नाट्य) तथा साहित्यशास्त्र	SANS-DCC-T103	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
(3)	सांख्य तथा योग दर्शन	SANS-DCC-T104	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
(4)	व्याकरण तथा भाषाविज्ञान	SANS-DCC-T105	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
	Total Credits						**26**			
	Total Maximum Marks							**600**		

शब्द-विस्तार

AEC	Ability Enhancement Course	L	Lecture
T-	Theory	T	Tutorial
SANS	Sanskrit	P	Practical
DCC	Discipline Centric Compulsory Course	CGPA	Cumulative Grade Point Average
Ext.+Ent	External+Internal	S/NS	Satisfied/Not Satisfied

द्वितीयार्द्धसत्र - SEMESTER-II										
S.N.	**Course Title**	**Course Code**	**Level**	**L**	**T**	**P**	**Credits**	**Max. Marks (Ext.+Int.)**	**Minimum Passing Marks (%)**	**Hours in a Week**
	Value Added Course									
(ii)	राष्ट्रीय एवं मानवीय मूल्य	VAC-T201	6.5	2	0	0	2		Non-CGPA S/NS	2
	Discipline Centric Compulsory Courses									
(5)	वैदिक वाङ्मय	SANS-DCC-T202	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
(6)	साहित्य (गद्य-पद्य-नाट्य) तथा साहित्यशास्त्र	SANS-DCC-T203	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
(7)	न्याय तथा वेदान्त दर्शन	SANS-DCC-T204	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
(8)	व्याकरण तथा भाषाविज्ञान	SANS-DCC-T205	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
	Total Credits						**26**			
	Total Maximum Marks							**600**		

शब्द-विस्तार

VAC	Value Added Course	L	Lecture
T-	Theory	T	Tutorial
SANS	Sanskrit	P	Practical
DCC	Discipline Centric Compulsory Course	CGPA	Cumulative Grade Point Average
Ext.+Ent	External+Internal	S/NS	Satisfied/Not Satisfied

तृतीयार्द्धसत्र - SEMESTER-III

S.N.	Course Title	Course Code	Level	L	T	P	Credits	Max. Marks (Ext.+Int.)	Minimum Passing Marks (%)	Hours in a Week
	Skill Development Course									
(iii)	Basic Communication Skills Or Basic Computer Course Or Seminar+Academic Writing	SDC-T301	6.5	2	0	0	2		Non-CGPA S/NS	2
	Discipline Centric Compulsory Courses									
(9)	संस्कृत निबन्ध, भाषानुवाद तथा व्याकरण	SANS-DCC-T302	6.5	5	1	0	6	150 (120+30)	36	6
(10)	शास्त्रीय साहित्य तथा गद्यकाव्य **अथवा** आधुनिक साहित्य **अथवा** आयुर्वेद, ज्योतिष तथा नित्यकर्मविधि	SANS-DCC-T303(A) **Or** SANS-DCC-T303(B) **Or** SANS-DCC-T303(C)	6.5	5	1	0	6	150 (120+30)	36	6
	Discipline Specific Elective Courses For Group 'A' (साहित्य) Students									
(11)	संस्कृत काव्यशास्त्र	SANS-DSE-GrA-T304	6.5	5	1	0	6	150 (120+30)	36	6
(12)	नाटक तथा नाट्यशास्त्र **अथवा** प्राचीन काव्य **अथवा** महाकवि कालिदास	SANS-DSE-GrA-T305(A) **Or** SANS-DSE-GrA-T305(B) **Or** SANS-DSE-GrA-T305(C)	6.5	5	1	0	6	150 (120+30)	36	6
	Discipline Specific Elective Courses For Group 'B' (व्याकरणशास्त्र) Students									
(11)	वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी	SANS-DSE-GrB-T304	6.5	5	1	0	6	150 (120+30)	36	6
(12)	शिक्षा तथा प्रक्रिया	SANS-DSE-GrB-T305	6.5	5	1	0	6	150 (120+30)	36	6
	Total Credits						**26**			
	Total Maximum Marks							**600**		

॰ अवधेयम् ॰

उपर्युल्लिखित Group ‘A’ (साहित्यशास्त्र) और Group ‘B’ (व्याकरणशास्त्र) में से किसी एक ही वर्ग (Group) का चयन करणीय है।

शब्द-विस्तार

SDC	Skill Development Course	Ext.+Ent.	External+Internal
T-	Theory	L	Lecture
SANS	Sanskrit	T	Tutorial
DCC	Discipline Centric Compulsory Course	P	Practical
DSE	Discipline Specific Elective Course	CGPA	Cumulative Grade Point Average
GrA, GrB	Group A, Group B	S/NS	Satisfied/Not Satisfied

चतुर्थार्द्धसत्र - SEMESTER-IV

S.N.	Course Title	Course Code	LVL	L	T	P	Credits	Max. Marks (Ext.+Int.)	Minimum Passing Marks (%)	Hours in a Week
	Ability Enhancement Course									
(iv)	Genral Health and Hygiene	AEC-T401	6.5	2	0	0	2		Non-CGPA S/NS	2
	Discipline Centric Compulsory Courses									
(13)	संस्कृत व्याकरण तथा व्याकरण-दर्शन	SANS-DCC-T402	6.5	5	1	0	6	150 (120+30)	36	6
(14)	शास्त्रीय साहित्य तथा गद्यकाव्य **अथवा** आधुनिक साहित्य **अथवा** आयुर्वेद, ज्योतिष तथा नित्यकर्मविधि	SANS-DCC-T403(A) **Or** SANS-DCC-T403(B) **Or** SANS-DCC-T403(C)	6.5	5	1	0	6	150 (120+30)	36	6
	Discipline Specific Elective Courses For Group 'A' (साहित्य) Students									
(15)	संस्कृत काव्यशास्त्र	SANS-DSE-GrA-T404	6.5	5	1	0	6	150 (120+30)	36	6
(16)	लघु शोध-प्रबन्ध/परियोजना (Dissertation/Project) **अथवा** नाटक तथा नाट्यशास्त्र **अथवा** प्राचीन काव्य **अथवा** महाकवि कालिदास	SANS-DSE-GrA-T405(A) **Or** SANS-DSE-GrA-T405(B) **Or** SANS-DSE-GrA-T405(C) **Or** SANS-DSE-GrA-T405(D)	6.5	5	1	0	6	150 (120+30)	36	6
	Discipline Specific Elective Courses For Group 'B' (व्याकरणशास्त्र) Students									
(15)	वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी	SANS-DSE-GrB-T404	6.5	5	1	0	6	150 (120+30)	36	6
(16)	लघु शोध-प्रबन्ध/परियोजना (Dissertation/Project) **अथवा** व्याकरण महाभाष्य तथा प्रक्रिया	SANS-DSE-GrB-T405(A) **Or** SANS-DSE-GrB-T405(B)	6.5	5	1	0	6	150 (120+30)	36	6
	Total Credits						**26**			
	Total Maximum Marks							**600**		

॰ अवधेयम् ॰

उपर्युल्लिखित Group ‘A’ (साहित्य) और Group ‘B’ (व्याकरणशास्त्र) में से किसी एक ही वर्ग (Group) का चयन करणीय है।

शब्द-विस्तार

AEC	Ability Enhancement Course	Ext.+Ent.	External+Internal
T-	Theory	LVL/L	Level/Lecture
SANS	Sanskrit	T	Tutorial
DCC	Discipline Centric Compulsory Course	P	Practical
DSE	Discipline Specific Elective Course	CGPA	Cumulative Grade Point Average
GrA	Group A	S/NS	Satisfied/Not Satisfied
GrB	Group B	OJT	On-Job Training
DPR	Dissertation, Project, Report	RCC	Research Credit Course

परीक्षा एवम् अङ्क-योजना

✍ प्रत्येक प्रश्नपत्र (Non-CGPA को छोड़कर) 30+120=150 अङ्क का होगा, जिसमें अर्द्धसत्र के दौरान 30 अङ्क का सतत आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा तथा 120 अङ्क की सैद्धान्तिक अर्द्धसत्रान्त (End semester) परीक्षा विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य होगी। अर्द्धसत्रान्त परीक्षार्थ कालावधि 03 घण्टा निर्धारित है।

✍ 30 अङ्कों के आन्तरिक मूल्याङ्कन में 20 अङ्कों का सैद्धान्तिक लिखित मूल्याङ्कन तथा 10 अङ्कों का व्यावहारिक वाचिक परीक्षण अपेक्षित है, जिसमें संगोष्ठी-पत्रवाचन-श्लोकपाठ-संस्कृतसम्भाषणकौशल-रूपकण्ठस्थीकरण-उच्चारणशुद्धि इत्यादि को सम्मिलित किया जा सकता है।

✍ परीक्षार्थी को सैद्धान्तिक, प्रायोगिक और आन्तरिक परीक्षा को उत्तीर्ण करने के लिए प्रत्येक में पृथक्-पृथक् न्यूनतम 36 प्रतिशत अङ्कार्जन करना होगा।

✍ गैर-सीजीपीए (Non-CGPA) पाठ्यक्रम मुख्यतः अभ्यासाधारित पाठ्यक्रम हैं। इनमें से प्रत्येक के लिए 2 क्रेडिट निर्धारित हैं। इनके क्रेडिट, क्रेडिट पॉइंट और ग्रेड 'गैर-सीजीपीए पाठ्यक्रम' के तहत 'मार्कशीट' में अलग से दर्शाए जाएँगे। कॉलेज द्वारा छात्र के 'संतोषजनक' या 'असंतोषजनक' (S/NS) क्रेडेंशियल्स ही केवल विश्वविद्यालय को भेजे जाएँगे।

✍ प्रत्येक प्रश्नपत्र का पाठ्यक्रम 5 अन्विितियों (इकाइयों) में विभाजित होगा।

✍ विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा —

- खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न क्र. I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न क्र. VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।
- खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
- खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न होगा। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

एम.ए. (संस्कृत) प्रथमार्द्धसत्र

SANS-AEC-T101

संस्कृत रचनानुवाद तथा संस्कृत साहित्येतिहास

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- संस्कृत साहित्य में स्नातकोत्तरोपाधि के लिए अध्ययन करने वाले छात्र को संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं का ज्ञान कराना और तत्तत्विधा के विस्तृत रचना-भण्डार में से कुछ प्रमुख रचनाओं का सामान्य परिचय कराना।
- संस्कृत भाषाबोध और भाषा-व्यवहार के लिए आवश्यक सामान्य और आधारभूत व्याकरण-नियमों में से कुछ का अपेक्षित बोध कराना।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- संस्कृत साहित्य के इतिहास के आलोडन से उसकी प्राचीनता, व्यापकता, गम्भीरता, मौलिकता, प्रासङ्गिकता और महत्ता का बोध होगा।
- वैदिक साहित्य से लेकर लौकिक साहित्य तक प्रसृत भारतीय ज्ञान-परम्परा के प्रति अहोभाव उत्पन्न होगा, गौरवबोध होगा।
- संस्कृत साहित्य की विधाओं के ज्ञान और प्रतिनिधि संस्कृत-रचनाओं के सामान्य अध्ययन के पश्चात् छात्रों में उन रचनाओं को मूल रूप में पढ़ने की रुचि उत्पन्न होगी
- प्रमुख व्याकरणिक कोटियों का बोध होगा तथा रचना और अनुवाद की क्षमता में विकास होगा।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. रचनानुवादकौमुदी (डॉ कपिलदेव द्विवेदी) – अभ्यास १-२५ में प्रदत्त निम्नलिखित से सम्बद्ध सामान्य व्याकरण-नियमों का ज्ञान अपेक्षित है – पुरुष, वचन, लिङ्ग, लकार, वर्णमाला, माहेश्वरसूत्र, प्रत्याहार, धातुरूप, शब्दरूप, कारक, सरल संस्कृतवाक्य-रचना, हिन्दी से संस्कृत तथा संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद, संस्कृत वाक्यों में अशुद्धि संशोधन।

इकाई - 2. वैदिक साहित्य का इतिहास – निम्नलिखित का सामान्य अध्ययन – संहिता (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद), ब्राह्मण-ग्रन्थ, आरण्यक-ग्रन्थ, उपनिषद्, वेदाङ्ग।

इकाई - 3. लौकिक संस्कृत साहित्येतिहास – निम्नलिखित का सामान्य अध्ययन – वीरकाव्य (रामायण एवं महाभारत) तथा महाकाव्य।

इकाई - 4. लौकिक संस्कृत साहित्येतिहास – निम्नलिखित का सामान्य अध्ययन – नाट्य-साहित्य, गद्य-साहित्य।

इकाई - 5. लौकिक संस्कृत साहित्येतिहास – निम्नलिखित का सामान्य अध्ययन – गीतिकाव्य, कथा-साहित्य तथा चम्पूकाव्य।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

यह एक Non-CGPA कोर्स है, अतः विश्वविद्यालय द्वारा सैद्धान्तिक परीक्षा आयोजित नहीं की जाएगी, केवल महाविद्यालय स्तर पर छात्र का सतत आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा और सत्रान्त में एक आन्तरिक वाक्परीक्षा (Viva) करके मात्र 'सन्तोषजनक' या 'असन्तोषजनक' प्रत्यय (क्रेडेंशियल्स) ही विश्वविद्यालय को प्रेषित किया जाएगा।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. रचनानुवादकौमुदी – डॉ कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा – पाण्डेय एवं व्यास, साहित्य निकेतन, कानपुर।
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास – आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी।
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी।
5. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास – प्रो राधावल्लभ त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
6. संस्कृत साहित्य का इतिहास – प्रीतिप्रभा गोयल, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।
7. History Of Classical Sanskrit Literature – A.B. Keith, Motilal Banarsidas, Delhi. हिन्दी अनुवाद सहित – मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. रचनानुवादकौमुदी – रचनानुवादकौमुदी – https://ia801406.us.archive.org/32/items/in.ernet.dli.2015.545725/2015.545725.Rachnanuvadh-Kumodi.pdf
2. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा (पाण्डेय एवं व्यास) – https://ia801805.us.archive.org/5/items/dli.ernet.525515/525515-Sanskrit%20Sahitya%20Ki%20Rooprekha.pdf

एम.ए. (संस्कृत) प्रथमार्द्धसत्र
SANS-DCC-T102
वैदिक वाङ्मय

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- वैदिक वाङ्मय के संहिता भाग के अन्तर्गत ऋग्वेद के प्रसिद्ध एवम् उपयोगी सूक्तों का भाष्य सहित विस्तृत अध्ययन कराना।
- ऋषियों द्वारा वेदराशि की रक्षार्थ विकसित पदपाठ की विधियों, वैदिक छन्दों एवं सामान्य व्याकरण से छात्रों को परिचित कराना।
- मन की शुद्धि और स्थिरता के लिए उपयोगी यजुर्वेद के अतीव प्रसिद्ध शिवसंकल्पसूक्त का विद्यार्थियों को ज्ञान कराना।
- कठोपनिषद् के नचिकेता के आख्यान के माध्यम से छात्रों में जिज्ञासाभाव को जगाकर गम्भीर अध्यात्मतत्त्व का सहज बोध कराना।
- निरुक्त के माध्यम से भाषाओं के वैज्ञानिक और तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि विकसित करना।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- सायणादि के प्रसिद्ध भाष्यों के माध्यम से ऋग्वेद का अध्ययन करके छात्र इसकी अगाध गम्भीरता, उच्चता एवं समृद्धि से परिचित हो पाएँगे।
- वेदाध्ययन के साथ पदपाठ की विधियों, प्रमुख वैदिक छन्दों एवं सामान्य वैदिक व्याकरण के नियमों से छात्रों का परिचय होगा।
- शिवसंकल्पसूक्त का अध्ययन विद्यार्थियों के मनस् को शुद्ध एवं सुदृढ बनाकर उन्हें चरित्र-सम्पन्न सुनागरिक बनाने में सहकारी होगा।
- कठोपनिषद् से विद्यार्थी 'प्रेयोमार्ग' और 'श्रेयोमार्ग' का ज्ञान प्राप्त कर लौकिक और पारलौकिक अभ्युदय की दिशा में अग्रसर होंगे।
- निरुक्त के अध्ययन से विद्यार्थियों में भाषाविज्ञान के प्रति अभिरुचि जागरित हो सकेगी।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. ऋग्वेद – अधोलिखित सूक्त अध्ययनार्थ निर्धारित हैं (आचार्य सायण, सातवलेकर, स्वामी दयानन्द इत्यादि के भाष्यों का ज्ञान भी अपेक्षित है) –

1. अग्नि (१.१) 2. सूर्य (१.११५) 3. विश्वामित्र-नदी-संवाद (३.३३) 4. उषस् (३.६१)
5. पुरुष (१०.९०) 6. वाक् (१०.१२५) 7. नासदीय (१०.१२९)।

इकाई - 2. पदपाठ, छन्द, शब्दरूप व धातुरूप –

(अ) पदपाठ – उपरि निर्धारित ऋक्सूक्तों में से किसी एक मन्त्र का पदपाठ।

(आ) छन्दोज्ञान – गायत्री, त्रिष्टुप्, जगती, अनुष्टुप्, पङ्क्ति, बृहती, उष्णिक्।

(इ) शब्दरूप – देव, अग्नि, अस्मद्, युष्मद्।

(ई) धातुरूप – भू, वद्, कृ, गम्।

इकाई - 3. यजुर्वेद – अध्याय ३४ (शिवसङ्कल्पसूक्त)

इकाई - 4. कठोपनिषद् – प्रथमाध्याय

इकाई - 5. निरुक्त (यास्क) – प्रथमाध्याय

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the Semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –
  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।
  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

3. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत–हिन्दी–अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा–माध्यम से दिये जा सकते हैं।
4. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
5. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
6. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत ऋग्वेद (इकाई 1) से मन्त्र-व्याख्या (08 अङ्क) संस्कृत-माध्यम से प्रष्टव्य है तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. ऋक्सूक्तसंग्रह – डॉ हरिदत्त शास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ।
2. वैदिकसूक्तमुक्तावली – डॉ लम्बोदर मिश्र, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
3. ऋक्सूक्तवैजयन्ती – डॉ एच.डी. वेलणकर, संशोधन मण्डल, पुणे।
4. वैदिकसूक्तसुधा – डॉ प्रद्युम्न द्विवेदी, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
5. वैदिक वाङ्मय : एक परिशीलन – ब्रज बिहारी चौबे, होशियारपुर।
6. वैदिक साहित्य का इतिहास – डॉ जयदेव वेदालङ्कार, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
7. वैदिक साहित्य का इतिहास – वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा प्रकाशन।
8. वैदिक साहित्य का इतिहास – डॉ पारसनाथ द्विवेदी, चौखम्बा प्रकाशन।
9. निरुक्त – डॉ उमाशंकर ऋषि, चौखम्बा प्रकाशन।
10. निरुक्त – आचार्य विश्वेश्वर, चौखम्बा प्रकाशन।
11. निरुक्त – डॉ देवेन्द्र नाथ पाण्डेय, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
12. निरुक्त – मुकुन्द झा बख्शी, चौखम्बा प्रकाशन।
13. शिवसंकल्पसूक्तम् (उव्वट–महीधरभाष्यसंवलितम्) – डॉ त्रिलोकीनाथ द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
14. शिवसंकल्पसूक्तम् – महामहोपाध्याय वागीश शास्त्री, Yogic Voice Consciousness Institute, Varanasi.
15. शिवसंकल्पसूक्त – स्वामी महेशानन्द गिरि, श्रीदक्षिणामूर्ति मठ प्रकाशन, वाराणसी।
16. कठोपनिषद् – गीताप्रेस, गोरखपुर।

17. वैदिक व्याकरण – उमेशचन्द्र पाण्डे, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

18. वैदिक व्याकरण – रामगोपाल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

19. वैदिक स्वरबोध – ब्रज बिहारी चौबे, होशियारपुर।

20. ऋग्भाष्य संग्रह – डॉ देवराज चानना।

21. वैदिक सिलेक्शन – पीटर्सन (सीरीज़ १ एवं २)।

22. वैदिक स्वर-मीमांसा – पं युधिष्ठिर मीमांसक।

23. ऋग्वेद भाष्य – स्वामी दयानन्द।

24. वैदिक रीडर – मैक्डॉनल।

25. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति – आचार्य बलदेव उपाध्याय।

26. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति का स्वरूप – प्रो ओमप्रकाश पाण्डेय, विश्व प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. शिवसंकल्पसूक्त – https://nios.ac.in/media/documents/bgp/Sr_Secondary_Hindi/Vedadhyan_345/Book_02/345_Book2_H_L23.pdf

2. ऋक्सूक्तसंग्रह – हरिदत्त शास्त्री – https://ia902209.us.archive.org/23/items/in.ernet.dli.2015.345820/2015.345820.Rik-Sookt.pdf

3. वैदिक सूक्त – https://www.mahakavya.com/wp-content/uploads/2021/02/Vedic-Sukta-Sangraha.pdf

4. वाक्सूक्त-पुरुषसूक्त – https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/71664/1/Unit-11.pdf

5. निरुक्त (हिन्द्यनुवाद एवं व्याख्यात्मक टिप्पण्यादिसहित) – अध्याय १,२,३,४,७ आचार्य उमाशङ्करशर्मा 'ऋषि' – https://ia600801.us.archive.org/33/items/in.ernet.dli.2015.478526/2015.478526.nirukta-of.pdf

6. निरुक्त (प्रथमाध्याय) – https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/94639/1/Block-1.pdf

7. कठोपनिषद् – http://www.shdvef.com/wp-content/uploads/2020/01/कठोपनिषद.pdf

8. शिवसंकल्पसूक्त (सस्वरपाठ) – https://youtu.be/iiKUNfcLWXs?si=nAiDXeJiSv7mEsyZ

एम.ए. (संस्कृत) प्रथमार्द्धसत्र

SANS-DCC-T103

साहित्य (गद्य-पद्य-नाट्य) तथा साहित्यशास्त्र

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- भावना और कल्पना के उदात्त मणिकाञ्चन-सङ्गमरूप उस मेघदूत की रमणीय काव्यकला का रसास्वादन कराना, जिसके अध्ययन में रत रहते हुए रसिक पूरी उम्र गुज़ार देने की बात करते हुए सुने गए हैं – 'मेघे माघे गतं वयः।'
- प्रसन्नराघवकार जयदेव द्वारा जिस बाणभट्ट की प्रशंसा में कहा गया है – 'हृदयवसतिः पञ्चबाणस्तु बाणः', कविताकामिनी के हृदय में बसने वाले उस पञ्चबाण (कामदेव)-रूप गद्यसम्राट् बाण की अत्यन्त प्रसिद्ध कृति 'कादम्बरी' के कथामुख भाग से विद्यार्थियों को परिचित कराना उद्दिष्ट है।
- दशभेदात्मक रूपकों में से अन्यतम 'प्रकरण' के मुख्य प्रतिनिधि शूद्रककृत 'मृच्छकटिकम्' की रसचर्वणा कराना।
- साहित्यशास्त्र के अध्ययन से विद्यार्थियों में विविध साहित्यिक सौन्दर्य-तत्त्वों तथा कलात्मक रूपों को समझने की क्षमता विकसित होती है, इस दृष्टि से विद्यार्थियों को साहित्यदर्पण के प्रथम तथा द्वितीय परिच्छेद के माध्यम से काव्यप्रयोजन, काव्यलक्षण तथा शब्दशक्तियों से परिचित कराना यहाँ उद्दिष्ट है।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- विद्यार्थी कविकुलगुरु कालिदास की विश्वविश्रुत रचना 'मेघदूत' की रसचर्वणा के साथ ही भारत की सांस्कृतिक एकता और प्राकृतिक विविधता से परिचित हो सकेंगे।
- विद्यार्थी 'कादम्बरी' के रूप में एक अत्यन्त मनोहारी कथा का रसास्वादन भी करेंगे और बाणभट्ट की गद्यशैली से भी परिचित हो सकेंगे।
- छात्र 'मृच्छकटिक' के रसास्वादन के साथ ही रूपक के भेद 'प्रकरण' की विशेषताओं तथा तत्कालीन नागर जीवन, शासनव्यवस्था, राज्यस्थिति, न्यायालय-पुलिस इत्यादि संस्थाओं की विद्रूपताओं, अवाञ्छित राजा के प्रति प्रजाद्रोह, जनमत के प्रभुत्व तथा समाज के अन्त्य व्यक्ति को साहित्य में स्थान देने की विरासत से परिचित होंगे।
- विद्यार्थी 'साहित्यदर्पण' के आद्य परिच्छेदद्वय के अध्ययन से काव्यप्रयोजन, काव्यलक्षण, काव्यहेतु, शब्दशक्त्यादि के साथ ही पूर्वमत-खण्डन तथा स्वमत-स्थापन की प्राचीन परम्परा का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. मेघदूतम् (कालिदास) – पूर्वमेघ।

इकाई - 2. कादम्बरी कथामुखम् (बाणभट्ट) – विन्ध्याटवी-वर्णन से लेकर शुकजन्म-वर्णनपर्यन्त ('प्रतिदिवसमात्मना च मदुपभुक्तशेषमकरोदशनम्' तक)।

इकाई - 3. मृच्छकटिकम् (शूद्रक) – प्रथमाङ्क से पञ्चमाङ्क पर्यन्त।

इकाई - 4. साहित्यदर्पणः (आचार्य विश्वनाथ) – प्रथम परिच्छेद।

इकाई - 5. साहित्यदर्पणः (आचार्य विश्वनाथ) – द्वितीय परिच्छेद।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत मेघदूत (इकाई 1) से 08 अङ्क की व्याख्या संस्कृत-माध्यम से प्रष्टव्य है तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. मेघदूत - पं तारिणीश झा. रामनारायण बेणीमाधव, इलाहाबाद।
2. मेघदूत – प्रह्लाद गिरि गोस्वामी, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
3. मेघदूत – आ. शेषराज शर्मा, चौखम्बा प्रकाशन।
4. मेघदूत – डॉ अर्कनाथ चौधरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
5. मेघदूत – रमाशंकर त्रिपाठी, जनार्दन शास्त्री पाण्डेय; मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
6. मेघदूत – संसारचन्द्र एवं मोहन देवपन्त, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
7. मेघदूत – बाबूराम त्रिपाठी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा।
8. मेघदूतम् (अष्टव्याख्याविभूषितम्) – कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी।
9. मृच्छकटिकम् (पृथ्वीधरकृत टीका-सहित) – निर्णय सागर प्रेस, मुंबई।
10. मृच्छकटिकम् – जगदीश चन्द्र मिश्र, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
11. मृच्छकटिकम् – आ. रामानन्द द्विवेदी, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
12. मृच्छकटिकम् – डॉ जयशंकरलाल त्रिपाठी, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
13. कादम्बरी (कथामुख) – पं. तारिणीश झा, रामनारायण लाल बेणीमाधव।
14. कादम्बरी (कथामुख) – रतिनाथ झा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
15. कादम्बरी (कथामुख) – प्रो समीर शर्मा, चौखम्बा प्रकाशन।
16. कादम्बरी – भट्ट मथुरानाथ शास्त्री, निर्णयसागर प्रेस, मुम्बई।
17. कादम्बरी – देवर्षि सनाढ्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
18. कादम्बरी – रामस्वरूप शास्त्री, रामनारायण लाल बेणीमाधव, प्रयागराज।
19. साहित्यदर्पण – आ. शालिग्राम शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
20. साहित्यदर्पण – निरूपण विद्यालंकार, साहित्य भण्डार, मेरठ।

21. साहित्यदर्पण – आ. लोकमणि दाहाल, चौखम्बा प्रकाशन।
22. साहित्यदर्पण – डॉ सत्यव्रत सिंह, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।।
23. संस्कृत के सन्देश काव्य – डॉ रामकुमार आचार्य।
24. मेघदूत : एक पुरानी कहानी – आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
25. मेघदूत : एक अध्ययन – वासुदेव शरण अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
26. कादम्बरी : एक सांस्कृतिक अध्ययन – वासुदेवशरण अग्रवाल, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. मेघदूतम् (सम्पूर्णम्) – (संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम्) – https://ia801609.us.archive.org/19/items/Meghadutam/Meghadutam.pdf
2. कादम्बरी (कथामुखम्) – संस्कृत-हिन्द्यनुवादसहितम्, आ. शेषराजशर्मा 'रेग्मी' – https://www.jainfoundation.in/JAINLIBRARY/books/Kadambari_009564_std.pdf
3. मृच्छकटिकम् (संस्कृत-हिन्दीव्याख्या) – https://ia801407.us.archive.org/30/items/in.ernet.dli.2015.407735/2015.407735.Mrichachhakam.pdf
4. साहित्यदर्पणम् – डॉ सत्यव्रत सिंह – https://ia601505.us.archive.org/11/items/in.ernet.dli.2015.326843/2015.326843.Sahitya-Darpan.pdf
5. साहित्यदर्पणम् (संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम्) – आ. शेषराजशर्मा 'रेग्मी' – https://www.jainfoundation.in/JAINLIBRARY/books/sahitya_darpanam_023456_std.pdf
6. मृच्छकटिकम् एवं साहित्यदर्पणः – https://mdu.ac.in/UpFiles/UpPdfFiles/2021/Jun/4_06-11-2021_17-37-22_Merichkatik%20Awam%20Sahityadarpan_II.pdf

एम.ए. (संस्कृत) प्रथमार्द्धसत्र

SANS-DCC-T104

सांख्य तथा योग दर्शन

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- पुरुष (आत्मा) की मुक्ति ही जीवन का चरम लक्ष्य है, किन्तु ज्ञान के विना मुक्ति सम्भव नहीं – 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।' जब मनुष्य सांख्यदर्शनोक्त २५ तत्त्वों को जान लेता है और प्रकृति तथा पुरुष के पार्थक्य का बोध कर लेता है, तभी वह दुःखत्रयाभिघात से मुक्ति पा सकता है – 'पञ्चविंशतितत्त्वज्ञो ... मुच्यते नाऽत्र संशयः।' इस उद्देश्य से सांख्य दर्शन का अध्ययन आवश्यक है।
- योग के महत्त्व से समस्त विश्व परिचित है। सभी देशों में 21 मई को प्रतिवर्ष योग-दिवस का आयोजन होता है। किन्तु मात्र आसन-प्राणायाम ही योग नहीं है। योग के वास्तव स्वरूप के ज्ञानार्थ पातञ्जल योगदर्शन का अध्ययन आवश्यक है। योग का मुख्य उद्देश्य है – पुरुष को दुःख व अज्ञान से मुक्त करना। इस विषय को इस दर्शन में हेय, हेयहेतु, हान और हानोपाय के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- छात्र षड्दर्शन-परम्परा में अतीव प्रसिद्ध और प्राचीन दर्शन (सांख्यदर्शन) का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- महर्षि कपिल द्वारा प्रवर्तित सांख्यदर्शन की परम्परा में सर्वाधिक प्रचलित और प्रसिद्ध ग्रन्थ ईश्वरकृष्ण द्वारा विरचित सांख्यकारिका से छात्रों का परिचय हो सकेगा।
- व्यक्त प्रकृति, अव्यक्त प्रकृति तथा पुरुष के रूप में सांख्यदर्शनसम्मत २५ तत्त्वों का ज्ञान (व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञान) प्राप्त करने के साथ ही छात्र प्रकृति और पुरुष का विभेद कर सकेंगे।
- सांख्य की सृष्टि-प्रक्रिया का अध्ययन करते हुए छात्र यह जानकर चकित और गौरवान्वित होंगे कि अत्यन्त प्राचीन भारतीय ज्ञान-परम्परा में भी किस प्रकार वैज्ञानिक चिन्तन विद्यमान था।
- छात्रों में दार्शनिक व आध्यात्मिक अभिरुचि का जागरण होगा।
- योग दर्शन के समाधिपाद के अध्ययन से विद्यार्थी योग के मूल स्वरूप से अवगत हो सकेंगे। अपनी चित्तवृत्तियों को परिष्कृत, नियन्त्रित एवं मनस् को एकाग्र कर अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकेंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. सांख्यकारिका (ईश्वरकृष्ण) – ०१ से ११ कारिका पर्यन्त।

इकाई - 2. सांख्यकारिका (ईश्वरकृष्ण) – १२ से २२ कारिका पर्यन्त।

इकाई - 3. सांख्यकारिका (ईश्वरकृष्ण) – २३ से ७२ कारिका पर्यन्त।

इकाई - 4. योगसूत्र (पतञ्जलि) – समाधिपाद ०१ से २३ सूत्र पर्यन्त।

इकाई - 5. योगसूत्र (पतञ्जलि) – समाधिपाद २४ से ५१ सूत्र पर्यन्त।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –
  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।
  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत सांख्यकारिका (कारिका 1 से 11 तक) से 08 अङ्क की व्याख्या संस्कृत-माध्यम से प्रष्टव्य है तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. सांख्यकारिका (गौडपादभाष्यसहिता) – पं ज्वालाप्रसाद गौड़, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
2. सांख्यकारिका – डॉ श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, चौखम्बा प्रकाशन।
3. सांख्यकारिका – जगन्नाथ शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
4. सांख्यकारिका – पं बलराम उदासीन, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
5. सांख्यकारिका – ब्रजमोहन चतुर्वेदी
6. सांख्यकारिका – आचार्य निगम शर्मा, परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली।
7. सांख्यतत्त्वकौमुदी – गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
8. सांख्यकारिका – पण्डितराज ढुण्ढिराजशास्त्री, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, वाराणसी।
9. सांख्यकारिका – रमाशंकर त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
10. सांख्यकारिका – डॉ देवेन्द्र नाथ पाण्डेय, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
11. पातञ्जल योगदर्शन – आ. भवानीशंकर शर्मा 'महाजनीय', जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
12. पातञ्जल योगसूत्र (समाधिपाद) – डॉ सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
13. योगदर्शनम् – आ. उदयवीर शास्त्री, विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द प्रकाशन, नई दिल्ली।
14. महर्षि पतञ्जलिकृत योगदर्शन – गीताप्रेस, गोरखपुर।
15. योगसूत्रम् – महाप्रभुलाल गोस्वामी, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
16. योगसूत्रम् – रमाशंकर त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
17. पातञ्जलयोगदर्शनम् – स्वामी हरिहरानन्द 'आरण्यक', मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. सांख्यकारिका (मूलमात्रम्) – https://sanskritdocuments.org/doc_z_misc_major_works/IshvarakRiShNasAnkyakArikA.pdf
2. सांख्यकारिका (मूलम् भावार्थेन सहितम्) – https://www.scribd.com/document/663731658/ईश-वरकृष-ण-की-सांख-यकारिका-सम-पूर-ण
3. सांख्यकारिका – पं. श्रीज्वालाप्रसाद गौड़ (गौडपादभाष्यसहिता, हिन्दी-संस्कृतव्याख्योपेता च – https://epustakalay.com/book/27531-sankhyakarika-by-shri-isvarakrsna/
4. पातञ्जल योगसूत्र (साधारण हिन्दी-भाषाटीकासहित) – गीताप्रेस, गोरखपुर – https://ia600204.us.archive.org/17/items/YogaDarshanGitaPressGorakhpur/Yoga%20Darshan%20-%20Gita%20Press%20Gorakhpur.pdf
5. पातञ्जल योगसूत्र (सम्पूर्ण) – इसमें से मात्र समाधिपाद ही पठनीय है – https://epustakalay.com/book/27531-sankhyakarika-by-shri-isvarakrsna/

एम.ए. (संस्कृत) प्रथमार्द्धसत्र

SANS-DCC-T105

व्याकरण तथा भाषाविज्ञान

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- जो भी भाषा व्यवहार-भाषा नहीं है, उस भाषा में प्रवेश और विशेषतः गति के लिए व्याकरण-बोध आवश्यक है। व्याकरण में सुँबन्त प्रकरण की महत्ता सर्वविदित है। अतः यहाँ अजन्त पुँल्लिङ्ग प्रकरण शिक्ष्य है।
- समस्त अजन्त प्रकरण में निपुणता हेतु इसके स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग प्रकरण की भी उपादेयता विद्वज्ञन द्वारा स्वीकृत है।
- भाषा में अजन्त संज्ञा शब्दों के साथ हलन्त संज्ञा शब्द भी प्राचुर्येण उपलब्ध हैं। हलन्त संज्ञा शब्दों के साधुत्वज्ञान हेतु हलन्त पुँल्लिङ्ग प्रकरण का सम्यग्बोध अपेक्षित है।
- हलन्त पुँल्लिङ्ग प्रकरण के साथ ही इसके स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग प्रकरण का अध्ययन भी समग्र ज्ञान हेतु आवश्यक है।
- भाषाविज्ञान का आविर्भाव संस्कृत से ही हुआ है। इसके अध्ययन का उद्देश्य है – अपनी भाषा के विषय में जिज्ञासा की तृप्ति या शङ्काओं का निर्मूलन, ऐतिहासिक भाषिक संस्कृति का परिचय, शब्दों के क्रमिक सफ़र को समझना, उच्चारण सम्बन्धी समस्याओं का समाधान एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वैश्विक भाषाओं के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- जो पद नहीं हैं, ऐसे शब्दों का संस्कृत भाषा के वाक्यों में प्रयोग नहीं हो सकता (अपदं न प्रयुञ्जीत)। सुँबन्त या तिङन्त होने से ही शब्द पद बन पाते हैं। सुँबन्त-प्रकरण के अधिगम से छात्र सुँबन्त पद-निर्माण-पद्धति में अभ्यस्त होंगे और भाषिक व्यवहार में पदों (सुँबन्तों) का उचित प्रयोग कर सकेंगे।
- अजन्त और हलन्त पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग प्रकरण के अध्ययन से विद्यार्थियों में सुँबन्त प्रकरण के शब्दरूपों की सूत्र-दर-सूत्र समझ विकसित होगी और वे षड्लिङ्गप्रकरण के शब्दरूपों की ससूत्र सिद्धि कर सकेंगे।
- विद्यार्थी भाषाविज्ञान के अन्तर्गत भाषा व भाषाविज्ञान का सामान्य परिचय, भाषोत्पत्ति तथा विकास, भाषाओं का वर्गीकरण इत्यादि भाषाशास्त्रीय विषयों को वैज्ञानिक रूप से जान सकेंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. लघुसिद्धान्तकौमुदी (वरदराज) – अजन्त-पुँल्लिङ्ग-प्रकरण (राम, सर्व, हरि, सखि, क्रोष्टु तथा गो शब्द)।

इकाई - 2. लघुसिद्धान्तकौमुदी (वरदराज) – अजन्त-स्त्रीलिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग-प्रकरण (रमा, सर्वा, मति, गौरी, स्वसृ, ज्ञान तथा वारि शब्द)।

इकाई - 3. लघुसिद्धान्तकौमुदी (वरदराज) – हलन्त-पुँल्लिङ्ग-प्रकरण (लिह्, दुह्, चतुर्, इदम्, राजन्, तद्, अस्मद्, युष्मद् तथा भवत् शब्द)।

इकाई - 4. लघुसिद्धान्तकौमुदी (वरदराज) – हलन्त-स्त्रीलिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग प्रकरण {उपानह्, गिर्, इदम् (स्त्री), तद् (स्त्री), वाच्, अप्, सजुष्, स्वनडुह्, अहन् तथा पयस् शब्द}।

✍ **अवधेय** – इकाई १-४ में केवल उपरि निर्धारित शब्दों की रूपसिद्धियाँ तथा तदन्तर्गत सूत्र पठनीय हैं।

इकाई - 5. भाषाविज्ञान – भाषाविज्ञान का सामान्य परिचय (नामकरण, परिभाषा, क्षेत्र, अङ्ग, उपयोगिता इत्यादि), भाषा का सामान्य परिचय (अर्थ, परिभाषा, विविध रूप, उत्पत्ति और विकास, सामान्य विशेषताएँ तथा प्रवृत्तियाँ इत्यादि), विश्वभाषाओं के वर्गीकरण के प्रमुख आधार (आकृतिमूलक व पारिवारिक वर्गीकरण), भारोपीय भाषा-परिवार, वैदिक तथा लौकिक संस्कृत में अन्तर।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

– खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

– खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

– खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत अजन्त-पुँल्लिङ्ग-प्रकरण (इकाई 1) से 08 अङ्क की शब्द-सिद्धियाँ संस्कृत-माध्यम से प्रष्टव्य हैं तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-१) – भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली।
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी – महेश सिंह कुशवाहा, चौखम्बा प्रकाशन।
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी – अर्कनाथ चौधरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी – डॉ सुरेन्द्र देव स्नातक, चौखम्बा पब्लिशर्स।
5. लघुसिद्धान्तकौमुदी – धरानन्द शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
6. लघुसिद्धान्तकौमुदी – सत्यपाल सिंह, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली।
7. लघुसिद्धान्तकौमुदी आधारित कम्प्यूटरकृत सुबन्तरूपसिद्धि प्रक्रिया – विद्यानिधि प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. भाषाविज्ञान – डॉ कर्णसिंह, साहित्य भण्डार, मेरठ।

9. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र – डॉ कपिल देव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

10. तुलनात्मक भाषाशास्त्र – डॉ मंगलदेव शास्त्री।

11. भाषाविज्ञान – डॉ भोलानाथ तिवारी, किताब महल, प्रयागराज।

12. संस्कृत भाषाविज्ञानम् – चक्रवर्ती श्रीरामाधीन चतुर्वेदी, चौखम्बा, वाराणसी।

13. Linguistic Survey Of India – G. A. Grierson

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-१) – https://ia801203.us.archive.org/6/items/LaghuSiddhantaKaumudiBhaimiVyakhyaPart1BhimSenShastri/Laghu%20Siddhanta%20Kaumudi%20Bhaimi%20Vyakhya%20%20Part%201%20-%20Bhim%20Sen%20Shastri.pdf

2. संस्कृत-भाषाविज्ञान – डॉ शिवबालक द्विवेदी – https://ia800505.us.archive.org/4/items/SanskritBhashaVigyanShivBalakDwivedi/Sanskrit%20Bhasha%20Vigyan%20-%20Shiv%20Balak%20Dwivedi.pdf

3. भाषाविज्ञान – भोलानाथ तिवारी – https://ia600800.us.archive.org/25/items/in.ernet.dli.2015.541422/2015.541422.Bhasha-Vigyan.pdf

एम.ए. (संस्कृत) द्वितीयार्द्धसत्र

SANS-DCC-T202

वैदिक वाङ्मय

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- अथर्ववेद के महत्त्व के विषय में कहा गया है कि जिस राष्ट्र में शान्तिकामी अथर्ववेद जानने वाले विद्वान् निवास करते हैं, वह राष्ट्र निर्विघ्न विकास करता है – 'यस्य राज्ञो जनपदे अथर्वा शान्तिपारगः निवसत्यपि तद्राराष्ट्रं वर्धते निरुपद्रवम्।' ऐसे महनीय वेद के कुछ प्रमुख एवं प्रासंगिक सूक्तों का विस्तृत अध्ययन कराना उद्दिष्ट है।
- यम–नचिकेता–संवाद के माध्यम से दुर्ज्ञेय आत्मतत्त्व के स्वरूप को सहजता से स्पष्ट करते हुए औपनिषदिक धरोहर को संजोकर रखना, यह पाठ्यक्रम में कठोपनिषद् की योजना का उद्देश्य है।
- वैदिक शब्दों के अर्थज्ञान के लिए महर्षि यास्क का निरुक्त सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। यास्क द्वारा प्रदत्त वैदिक शब्दों के निर्वचन मन्त्रार्थ–प्रकाशन में प्रदीप का कार्य करते हैं। एतदर्थ निरुक्त का द्वितीय अध्याय पठनीय है।
- वैदिकसाहित्य का समग्रता से परिचय कराने हेतु वैदिकसाहित्येतिहास विशेष रूप से पठनीय है।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- विद्यार्थी निर्धारित सूक्तों के अध्ययन से मेधाशक्ति और गृहनिर्माणविषयक वैदिकज्ञान, राष्ट्रियैक्य, पर्यावरण–संवेदना, कालमहत्ता इत्यादिप्रकारक प्राचीन आर्षज्ञान से सम्पन्न हो सकेंगे।
- कठोपनिषद् के द्वितीय अध्याय में वर्णित आत्मतत्त्व–ब्रह्मतत्त्व के साथ ब्रह्मनिष्ठ का स्वरूप भी छात्र जान सकेंगे।
- विद्यार्थियों में शब्दों के निर्वचन की समझ व क्षमता विकसित होगी। वेदार्थविषयक अभिरुचि जागरित होगी।
- विद्यार्थी वैदिकसाहित्य की विशालता से परिचित होकर वेदवेदाङ्गों के विस्तृत ज्ञान की दिशा में उन्मुख होंगे।
- वेद का संरक्षण धर्म–संस्कृति–अध्यात्म–दर्शनादि के लिए परमावश्यक है और वैदिक वाङ्मय के अध्ययन तथा अर्थबोध के विना वेदराशि का संरक्षण सम्भव नहीं है। अतः वेदविद्यारक्षणार्थ यावच्छक्य वैदिक ग्रन्थों के अध्ययनाध्यापन की इस योजना से छात्र वेदाध्ययन–संरक्षण के लिए प्रवृत्त होंगे – 'रक्षणार्थं वेदस्याध्येयो वेदः।'

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. अथर्ववेद – अधोलिखित सूक्त अध्ययनार्थ निर्धारित हैं –

1. मेधाजनन (१.१) 2. शालानिर्माण (३.१२) 3. राष्ट्रसभा (७.१२)

4. भूमिसूक्त (१२.१) – मन्त्र क्र. १ से १५ 5. कालसूक्त (१९.५३)।

इकाई - 2. कठोपनिषद् – द्वितीयाध्याय।

इकाई - 3. निरुक्त (यास्क) – द्वितीयाध्याय से केवल शब्दों के निर्वचन।

इकाई - 4. वैदिक साहित्येतिहास – संहिता, ब्राह्मण तथा आरण्यक।

इकाई - 5. वैदिक साहित्येतिहास – उपनिषद् तथा षड्वेदाङ्ग।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –
  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।
  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।

3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत निरुक्त (इकाई 3) से 08 अङ्क के निर्वचन संस्कृत-माध्यम से प्रष्टव्य हैं तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. वैदिकसूक्तमुक्तावली – डॉ लम्बोदर मिश्र, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
2. वैदिकसूक्तसुधा – डॉ प्रद्युम्न द्विवेदी, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
3. वैदिक वाङ्मय : एक परिशीलन – ब्रज बिहारी चौबे, होशियारपुर।
4. वैदिक साहित्य का इतिहास – डॉ जयदेव वेदालङ्कार, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
5. वैदिक साहित्य का इतिहास – वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा प्रकाशन।
6. वैदिक साहित्य का इतिहास – डॉ पारसनाथ द्विवेदी, चौखम्बा प्रकाशन।
7. निरुक्त – डॉ उमाशंकर ऋषि, चौखम्बा प्रकाशन।
8. निरुक्त – आचार्य विश्वेश्वर, चौखम्बा प्रकाशन।
9. निरुक्त – डॉ देवेन्द्र नाथ पाण्डेय, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
10. निरुक्त – मुकुन्द झा बख्शी, चौखम्बा प्रकाशन।
11. कठोपनिषद् – गीताप्रेस, गोरखपुर।
12. वैदिक स्वरबोध – ब्रज बिहारी चौबे, होशियारपुर।
13. वैदिक सिलेक्शन – पीटर्सन (सीरीज़ १ एवं २)।
14. वैदिक स्वर-मीमांसा – पं युधिष्ठिर मीमांसक।
15. वैदिक रीडर – मैक्डॉनल।
16. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति – आचार्य बलदेव उपाध्याय।
17. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति का स्वरूप – प्रो ओमप्रकाश पाण्डेय, विश्व प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. कठोपनिषद् – http://www.shdvef.com/wp-content/uploads/2020/01/कठोपनिषद.pdf
2. निरुक्त (हिन्द्यनुवाद एवं व्याख्यात्मक टिप्पण्यादिसहित) – अध्याय १,२,३,४,७ आचार्य उमाशङ्करशर्मा 'ऋषि' – https://ia600801.us.archive.org/33/items/in.ernet.dli.2015.478526/2015.478526.nirukta-of.pdf
3. वैदिक साहित्य का इतिहास – https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/71633/1/Block-1.pdf
4. वेदाङ्ग साहित्य – https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/102118/1/Unit-4.pdf
5. अथर्ववेद के सूक्त – https://vedpuran.net/wp-content/uploads/2011/10/arthved-part-1.pdf

एम.ए. (संस्कृत) द्वितीयार्द्धसत्र

SANS-DCC-T203

साहित्य (गद्य-पद्य-नाट्य) तथा साहित्यशास्त्र

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- भावना और कल्पना के उदात्त मणिकाञ्चन-सङ्गमरूप उस मेघदूत की रमणीय काव्यकला का रसास्वादन कराना ही प्रमुख उद्देश्य है, जिसके अध्ययन में रत रहते हुए रसिक पूरी उम्र गुज़ार देने की बात करते हुए सुने गए हैं – 'मेघे माघे गतं वयः।'
- साहित्यिक मौलिकता को लेकर जिस बाणभट्ट की प्रशंसा में कहा गया है कि समूचा साहित्य-जगत् बाणभट्ट की जूठनमात्र है – 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्', कविताकामिनी के हृदय में बसने वाले उस पञ्चबाण (कामदेव)-रूप गद्यसम्राट् बाण की अत्यन्त प्रसिद्ध कृति 'कादम्बरी' (के कथामुख भाग से) विद्यार्थियों को परिचित कराना है।
- दशभेदात्मक रूपकों में से एक भेद है 'प्रकरण'। प्रकरण-विधा के मुख्य प्रतिनिधि शूद्रककृत 'मृच्छकटिकम्' की रसचर्वणा कराना उद्दिष्ट है।
- साहित्यशास्त्र के अध्ययन से विद्यार्थियों में विविध साहित्यिक सौन्दर्य-तत्त्वों तथा कलात्मक रूपों को समझने की क्षमता विकसित होती है, इस दृष्टि से विद्यार्थियों को साहित्यदर्पण के तृतीय तथा चतुर्थ परिच्छेद के माध्यम से रसस्वरूप तथा काव्यभेद (ध्वनिकाव्य एवं गुणीभूतव्यङ्ग्यकाव्य) से परिचित कराना यहाँ उद्दिष्ट है।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- विद्यार्थी कविकुलगुरु कालिदास की विश्वविश्रुत रचना 'मेघदूत' के उत्तरार्द्ध (उत्तरमेघ) की रसचर्वणा के साथ ही कविकुलकमलदिवाकर कालिदास की काव्यकला से परिचित हो सकेंगे।
- उत्तरमेघ के अधीती छात्र शृङ्गाररस के भेदद्वय (सम्भोग तथा विप्रलम्भ) के सम्यक् बोध के साथ ही यह भी जान पाएँगे कि काव्य में विप्रलम्भ (वियोग) का इतना महत्त्व क्यों माना गया है – 'न विना विप्रलम्भेन सम्भोगः पुष्टिमश्नुते।'
- विद्यार्थी 'कादम्बरी' के रूप में एक अत्यन्त मनोहारी कथा का रसास्वादन भी करेंगे और बाणभट्ट की गद्यशैली से भी परिचित हो सकेंगे।
- छात्र प्राचीन गद्यकाव्यविधा के भेदद्वय – कथा व आख्यायिका से परिचित होंगे।
- छात्र 'मृच्छकटिक' के रसास्वादन के साथ ही रूपक के भेद 'प्रकरण' की विशेषताओं तथा तत्कालीन नागर जीवन, शासनव्यवस्था, राज्यस्थिति, न्यायालय-पुलिस इत्यादि संस्थाओं की विद्रूपताओं, अवाञ्छित राजा के प्रति प्रजाद्रोह, जनमत के प्रभुत्व तथा समाज के अन्त्य व्यक्ति को साहित्य में स्थान देने की विरासत से परिचित होंगे।
- विद्यार्थी 'साहित्यदर्पण' के परिच्छेद ३-४ के अध्ययन से रसस्वरूप तथा काव्यभेद विषयक बोध से सम्पन्न होंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. मेघदूतम् (कालिदास) – उत्तरमेघ।

इकाई - 2. कादम्बरी कथामुखम् (बाणभट्ट) – प्रभात-वर्णन ('एकदा तु प्रभातरागलोहिते गगनतले' इत्यादि) से लेकर शबरचरित-वर्णनपर्यन्त ('शनैः शनैरभिमतं दिगन्तरमयासीत्' तक)।

इकाई - 3. मृच्छकटिकम् (शूद्रक) – षष्ठाङ्क से दशमाङ्क पर्यन्त।

इकाई - 4. साहित्यदर्पणः (आचार्य विश्वनाथ) – तृतीय परिच्छेद (०१ से २९वीं कारिका तक)।

इकाई - 5. साहित्यदर्पणः (आचार्य विश्वनाथ) – चतुर्थ परिच्छेद।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –
  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।
  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।

2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।

3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।

4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत मेघदूत (इकाई 1) से 08 अङ्क की व्याख्या संस्कृत-माध्यम से प्रष्टव्य है तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. मेघदूत - पं तारिणीश झा. रामनारायण बेणीमाधव, प्रयागराज।
2. मेघदूत – प्रह्लाद गिरि गोस्वामी, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
3. मेघदूत – आ. शेषराज शर्मा, चौखम्बा प्रकाशन।
4. मेघदूत – डॉ अर्कनाथ चौधरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
5. मेघदूत – रमाशंकर त्रिपाठी, जनार्दन शास्त्री पाण्डेय; मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
6. मेघदूत – संसारचन्द्र एवं मोहन देवपन्त, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
7. मेघदूत – बाबूराम त्रिपाठी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा।
8. मेघदूतम् (अष्टव्याख्याविभूषितम्) – कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी।
9. मृच्छकटिकम् (पृथ्वीधरकृत टीका-सहित) – निर्णय सागर प्रेस, मुंबई।
10. मृच्छकटिकम् – जगदीश चन्द्र मिश्र, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
11. मृच्छकटिकम् – आ. रामानन्द द्विवेदी, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
12. मृच्छकटिकम् – डॉ जयशंकरलाल त्रिपाठी, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
13. कादम्बरी (कथामुख) – पं. तारिणीश झा, रामनारायण लाल बेणीमाधव, प्रयागराज।
14. कादम्बरी (कथामुख) – रतिनाथ झा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
15. कादम्बरी (कथामुख) – प्रो समीर शर्मा, चौखम्बा प्रकाशन।
16. कादम्बरी – भट्ट मथुरानाथ शास्त्री, निर्णयसागर प्रेस, मुम्बई।
17. कादम्बरी – देवर्षि सनाढ्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
18. कादम्बरी – रामस्वरूप शास्त्री, रामनारायण लाल बेणीमाधव, प्रयागराज।
19. साहित्यदर्पण – आ. शालिग्राम शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

20. साहित्यदर्पण – निरूपण विद्यालंकार, साहित्य भण्डार, मेरठ।

21. साहित्यदर्पण – आ. लोकमणि दाहाल, चौखम्बा प्रकाशन।

22. साहित्यदर्पण – डॉ सत्यव्रत सिंह, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

23. संस्कृत के सन्देश काव्य – डॉ रामकुमार आचार्य।

24. मेघदूत : एक पुरानी कहानी – आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

25. मेघदूत : एक अध्ययन – वासुदेव शरण अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

26. कादम्बरी : एक सांस्कृतिक अध्ययन – वासुदेवशरण अग्रवाल, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. मेघदूतम् (सम्पूर्णम्) – (संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम्) – https://ia801609.us.archive.org/19/items/Meghadutam/Meghadutam.pdf
2. कादम्बरी (कथामुखम्) – संस्कृत-हिन्द्यनुवादसहितम्, आ. शेषराजशर्मा 'रेग्मी' – https://www.jainfoundation.in/JAINLIBRARY/books/Kadambari_009564_std.pdf
3. मृच्छकटिकम् (संस्कृत-हिन्दीव्याख्या) – https://ia801407.us.archive.org/30/items/in.ernet.dli.2015.407735/2015.407735.Mrichachhakam.pdf
4. साहित्यदर्पणम् – डॉ सत्यव्रत सिंह – https://ia601505.us.archive.org/11/items/in.ernet.dli.2015.326843/2015.326843.Sahitya-Darpan.pdf
5. साहित्यदर्पणम् (संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम्) – आ. शेषराजशर्मा 'रेग्मी' – https://www.jainfoundation.in/JAINLIBRARY/books/sahitya_darpanam_023456_std.pdf
6. मृच्छकटिकम् एवं साहित्यदर्पण – https://mdu.ac.in/UpFiles/UpPdfFiles/2021/Jun/4_06-11-2021_17-37-22_Merichkatik%20Awam%20Sahityadarpan_II.pdf

एम.ए. (संस्कृत) द्वितीयार्द्धसत्र
SANS-DCC-T204
न्याय तथा वेदान्त दर्शन

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- प्रमेय को प्रमाण से ही जाना जा सकता है, जैसा कि कहा गया है – 'मानाधीना मेयसिद्धिः' अथवा 'प्रमेय सिद्धिः प्रमाणाद्धि।' तर्कभाषा के यहाँ पाठ्यत्वेन निर्धारित अंश का उद्देश्य है – विद्यार्थियों को प्रमाण के सर्वाङ्गपूर्ण व निर्दोष लक्षण का अवबोध कराना।
- चतुर्विध प्रमाणों में अन्यतम प्रत्यक्ष प्रमाण का विशिष्ट ज्ञान कराना अपेक्षित है।
- प्रत्यक्षभिन्न अनुमिति, उपमिति तथा शाब्द ज्ञान को जानने के लिए अनुमान, उपमान और शब्द प्रमाण का विवेचन आवश्यक है। प्रमाणों के समग्र स्वरूप के परिज्ञान हेतु यह अंश पाठ्यक्रम में निर्धारित किया गया है।
- सदानन्द योगी विरचित वेदान्तसार के अध्ययन का उद्दिष्ट है वेदान्त दर्शन के सिद्धान्तों में सहजता से प्रवेश के लिए मार्ग प्रशस्त करना।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- अपने अल्पश्रुत के साथ आया न्यायदर्शनानभिज्ञ और श्रमभीरु छात्र भी न्याय-नय में प्रवेश की पात्रता अर्जित कर सकेगा।
- विद्यार्थी न्यायशास्त्र के षोडश पदार्थ, न्यायशास्त्र की त्रिविध प्रवृत्ति के साथ ही प्रमाण, प्रमा, करण, कारण, कारणभेद इत्यादि का सोदाहरण सहज ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- विद्यार्थी प्रत्यक्ष के लक्षण, प्रमा, त्रिविध करण, इन्द्रियार्थसन्निकर्ष के भेद इत्यादि को स्पष्टता से जान सकेंगे।
- इस अध्ययन से विद्यार्थी अनुमान, उपमान एवं शब्द प्रमाण के ज्ञान के साथ ही अनुमिति, उपमिति एवं शाब्दी प्रमा के बोध से सम्पन्न हो सकेंगे।
- विद्यार्थी वेदान्तशास्त्र के अनुबन्धचतुष्टय (अधिकारि-विषय-सम्बन्ध-प्रयोजनानि) आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- वेदान्तसार लोकप्रिय प्रकरण ग्रन्थ है। इसके अधीती छात्रों को अज्ञान, मायाशक्ति, पञ्चकोष तथा सूक्ष्मशरीरोत्पत्ति का व्यवस्थित परिज्ञान हो सकेगा।
- वेदान्तसार के द्वारा पञ्चीकरण, महावाक्य, लक्षणा, समाधि, जीवन्मुक्त आदि विषयों का भी ज्ञान होगा, जो कि वेदान्त दर्शन के प्रारम्भिक जिज्ञासु के लिए आवश्यक है।
- वेदान्तसार के अधीती विद्यार्थियों का वेदान्त के दुरूह ग्रन्थों में सहजता से प्रवेश हो सकेगा।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. तर्कभाषा (केशव मिश्र) – उपोद्घात से लेकर प्रमाणपदार्थनिरूपण पर्यन्त।

इकाई - 2. तर्कभाषा (केशव मिश्र) – प्रत्यक्षनिरूपण।

इकाई - 3. तर्कभाषा (केशव मिश्र) – अनुमान, उपमान तथा शब्दप्रमाण का निरूपण।

इकाई - 4. वेदान्तसार (सदानन्द) – सूक्ष्मशरीरोत्पत्तिपर्यन्त (ग्रन्थारम्भ से लेकर 'एवं सूक्ष्मशरीरोत्पत्तिः' तक का अंश)।

इकाई - 5. वेदान्तसार (सदानन्द) – 'स्थूलभूतानि तु पञ्चीकृतानि' से लेकर ग्रन्थान्तपर्यन्त।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –
  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।
  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।

3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।

4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत तर्कभाषा (इकाई 1) से 08 अङ्क की व्याख्या संस्कृत-माध्यम से प्रष्टव्य है तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. तर्कभाषा – आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि, चौखम्बा संस्कृत ऑफिस, वाराणसी।
2. तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ।
3. तर्कभाषा – आचार्य बदरीनाथ शुक्ल, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
4. तर्कभाषा – सुरेन्द्र नाथ शास्त्री, भारतीय विद्या भवन, दिल्ली।
5. तर्कभाषा – डॉ अर्कनाथ चौधरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
6. वेदान्तसार – आचार्य बदरीनाथ शुक्ल, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
7. वेदान्तसार – पं तारिणीश झा, रामनारायणलाल बेणीमाधव, प्रयागराज।
8. वेदान्तसार – पं रामगोविन्द शुक्ल, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
9. वेदान्तसार – आचार्य राममूर्ति शर्मा, चौखम्बा ओरियंटालिया, दिल्ली।
10. वेदान्तसार – रामशरण शास्त्री, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
11. वेदान्तसार – सन्त नारायण श्रीवास्तव, पीयूष प्रकाशन, प्रयागराज।
12. वेदान्तसार – डॉ शिवसागर त्रिपाठी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
13. वेदान्तसारः (सुबोधिनी-विद्वन्मनोरञ्जनीसहितः) – चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. तर्कभाषा – डॉ श्रीनिवासशास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ – https://ia801408.us.archive.org/11/items/puWK_tark-bhasha-of-keshav-mishra-edited-by-shrinivas-shastri-sahitya-bhandar-merath/Tark%20Bhasha%20Of%20Keshav%20Mishra%20Edited%20By%20Shrinivas%20Shastri%20-%20Sahitya%20Bhandar%2C%20Merath.pdf
2. तर्कभाषा – हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, वाराणसी – https://ia601802.us.archive.org/33/items/tarka-bhasha-hindi-commentary-acharya-vishweshvar/Tarka%20Bhasha%20Kesava%20Misra%20Tattva%20Loka%20Sanskrit%20%26%20Hindi%20Commentaries%20Rudradhara%20Jha%20Chowkambha.pdf
3. वेदान्तसार – डॉ आद्याप्रसाद मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, प्रयागराज – https://ia801300.us.archive.org/26/items/HindiBookSadanandaSVedantaSaraDrAdyaPrasadMishra/Hindi%20Book-Sadananda-s-Vedanta-Sara-Dr-Adya-Prasad-Mishra.pdf

एम.ए. (संस्कृत) द्वितीयार्द्धसत्र

SANS-DCC-T205

व्याकरण तथा भाषाविज्ञान

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- भाषिक व्यवहार में प्रायः संक्षेपण में लोगों की रुचि देखी जाती है – 'संक्षेपरुचिर्हि लोकः।' वैयाकरणों (व्याकरणाध्येताओं एवं व्याकरणज्ञों) को तो यह संक्षेप अतिशय प्रिय होता है – 'अर्द्धमात्रालाघवं पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैयाकरणाः।' भाषा में संक्षिप्तीकरण का ही एक उपकरण 'समास' है, अतः समास-बोधन उद्दिष्ट है।
- सन्धि-समासादि संस्कृतभाषारूपी दुर्ग की बाह्य परिखाएँ हैं, जिन्हे पार किये विना अन्तःप्रवेश दुष्कर है, अतः पूर्वतन अध्ययन में सन्ध्यादि-बोधानन्तर क्रमप्राप्त समासबोध आवश्यक है।
- कारक-प्रकरण/विभक्त्यर्थ-प्रकरण/सुँबर्थ-प्रकरण वाक्यज्ञान के लिए महोपकारक प्रकरण है। लघुसिद्धान्तकौमुदी में यह प्रकरण अतिसंक्षिप्त है, अतः इस प्रकरण के सम्यक् अधिगम के उद्देश्य से यहाँ वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीस्थ कारक-प्रकरण अध्ययनार्थ निर्धारित किया गया है।
- संस्कृतभाषा के वैज्ञानिक अध्ययन के उद्देश्य से भाषाविज्ञान को पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- समास-प्रकरण के आद्योपान्त अध्ययन से छात्र भाषा-प्रयोग में संक्षिप्तीकरण की कला में नैपुण्य प्राप्त कर सकेंगे, जो कि संस्कृत-व्यवहार में उपयोगी होगा।
- समास-प्रकरण में कृताभ्यास छात्रों के लिए किसी शब्द के विभक्तिरूपादि का स्मरण न रहने पर भी वाक्य-रचना-सौकर्य रहेगा, क्योंकि समास में अन्तर्वर्तिनी विभक्ति का लोप होने जाने से विभक्तिरूपज्ञान की आवश्यकता ही नहीं रहती (यथा, गङ्गा का जल – 'गङ्गायाः जलम्।' यहाँ गङ्गाशब्द के षष्ठ्यन्तरूप का स्मरण न रहने पर भी समासज्ञानवान् छात्र 'गङ्गाजलम्' ऐसा शुद्ध-सरल-वैकल्पिक समस्तपद-प्रयोग सहजरूप से कर सकता है)।
- समास में कौशल अधिगत होने से छात्र समासबहुला गौडी इत्यादि काव्यशैलियों में निबद्ध बाणभट्टादि के काव्यों को सरलता से समझ पाने में सक्षम होंगे।
- कारक-प्रकरण के अधिगम से छात्र वाक्यबोध में समर्थ होंगे तथा वाक्य-निर्माण-पद्धति में अभ्यस्त होंगे, जिससे संस्कृत-भाषण व लेखन में कौशल प्राप्त कर सकेंगे।
- विद्यार्थी भाषाविज्ञान के अन्तर्गत वाग्यन्त्र, ध्वनि-उत्पत्ति-प्रक्रिया, ध्वनिवर्गीकरण, ध्वनिपरिवर्तन, ध्वनिनियम, अर्थपरिवर्तन इत्यादि भाषाशास्त्रीय विषयों को वैज्ञानिक रूप से जान सकेंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. लघुसिद्धान्तकौमुदी (वरदराज) – समास-प्रकरण में केवल समास, अव्ययीभाव समास तथा तत्पुरुष समास (मध्यमपदलोपिसमास अथवा शाकपार्थिवादिसमास पर्यन्त)।

इकाई - 2. लघुसिद्धान्तकौमुदी (वरदराज) – समास-प्रकरण में नञ्तत्पुरुषसमास से प्रारम्भ करके तत्पुरुष समास का शेषांश तथा बहुव्रीहिसमास और द्वन्द्वसमास-प्रकरण।

इकाई - 3. सिद्धान्तकौमुदी (भट्टोजि दीक्षित) – कारक-प्रकरण (उपपदविभक्तियों सहित) – कर्तृकारक से सम्प्रदानकारक पर्यन्त।

इकाई - 4. सिद्धान्तकौमुदी (भट्टोजि दीक्षित) – कारक-प्रकरण (उपपदविभक्तियों सहित) – अपादानकारक से अधिकरणकारक पर्यन्त।

इकाई - 5. भाषाविज्ञान – ध्वनि की उत्पत्ति-प्रक्रिया, वाग्यन्त्र (उच्चारण-संस्थान), ध्वनियों का वर्गीकरण (स्वर, व्यञ्जन इत्यादि), ध्वनि-परिवर्तन (दिशाएँ एवं कारण), ध्वनि-नियम (ग्रिम-नियम, ग्रासमैन-नियम, वर्नर-नियम) अर्थ-परिवर्तन (दिशाएँ एवं कारण)।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –
  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।
  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत समास-प्रकरण (इकाई 1) से 08 अङ्क की शब्द-सिद्धियाँ संस्कृत-माध्यम से प्रष्टव्य हैं तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी – (भैमी व्याख्या, भाग-४) – भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली।
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी – महेश सिंह कुशवाहा, चौखम्बा प्रकाशन।
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी – अर्कनाथ चौधरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी – डॉ सुरेन्द्र देव स्नातक, चौखम्बा पब्लिशर्स।
5. लघुसिद्धान्तकौमुदी – धरानन्द शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
6. लघुसिद्धान्तकौमुदी – सत्यपाल सिंह, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली।
7. लघुसिद्धान्तकौमुदी – गीताप्रेस, गोरखपुर।
8. सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) – दिनेश चन्द्र गुहा, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी।
9. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) – अर्कनाथ चौधरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
10. कारक प्रकरण (सि.कौ.) – डॉ कलानाथ झा, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
11. प्रौढरचनानुवादकौमुदी – डॉ कपिल देव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
12. सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) – डॉ आद्याप्रसाद मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, प्रयागराज।
13. भाषाविज्ञान – डॉ कर्णसिंह, साहित्य भण्डार, मेरठ।
14. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र – डॉ कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
15. तुलनात्मक भाषाशास्त्र – डॉ मंगलदेव शास्त्री।
16. भाषाविज्ञान – डॉ भोलानाथ तिवारी, किताब महल, प्रयागराज।

17. तुलनात्मक भाषाविज्ञान – भोलानाथ तिवारी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

18. संस्कृत भाषाविज्ञानम् – चक्रवर्ती श्रीरामाधीन चतुर्वेदी, चौखम्बा, वाराणसी।

19. संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन – भोलाशंकर व्यास, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

20. Linguistic Survey Of India – G. A. Grierson

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या) – https://avg-sanskrit.org/avgclasses/LSK/000-Books/LSKBmV-4-Samas.pdf

2. सिद्धान्तकौमुदी-कारकप्रकरण – https://uou.ac.in/sites/default/files/slm/MASL-603.pdf

3. संस्कृत-भाषाविज्ञान – डॉ शिवबालक द्विवेदी – https://ia800505.us.archive.org/4/items/SanskritBhashaVigyanShivBalakDwivedi/Sanskrit%20Bhasha%20Vigyan%20-%20Shiv%20Balak%20Dwivedi.pdf

4. भाषाविज्ञान – भोलानाथ तिवारी – https://ia600800.us.archive.org/25/items/in.ernet.dli.2015.541422/2015.541422.Bhasha-Vigyan.pdf

एम.ए. (संस्कृत) तृतीयार्द्धसत्र

SANS-DCC-T302

संस्कृत निबन्ध, भाषानुवाद तथा व्याकरण

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- संस्कृत-निबन्ध-लेखन का उद्दिष्ट है किसी विषय पर अपने विचारों और भावों को सुन्दर, सुगठित, सुबोध एवं क्रमबद्ध रूप से लिखने का अभ्यास।
- संस्कृत-व्याकरण के नानाविध प्रत्ययों में से कृत्य-प्रकरण, पूर्वकृदन्त-प्रकरण तथा उत्तरकृदन्त-प्रकरण का बोध करवाना।
- कृदन्त-ज्ञान का एक उद्देश्य यह है कि यह विद्यार्थियों के लिए यह अत्यन्त उपकारी है। कृदन्तों के ज्ञान से अनुवाद तथा भाषणादि में संस्कृत की सुषमा बहुत निखरती है। यथा सोऽगमत्, सोऽपश्यत् इत्यादि तिङन्त प्रयोगों के स्थान पर स गतः, स गतवान्, तेन दृष्टम्, स दृष्टवान् इत्यादि कृदन्तों का प्रयोग अति सुन्दर प्रतीत होता है।
- हिन्दी से संस्कृत तथा संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद का अभ्यास भी उद्दिष्ट है, क्योंकि इससे भाषा पर अधिकार प्राप्त होता है और भाषा में अधिकार के पश्चात् विषय की समझ विकसित होती है।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- छात्र निबन्ध के प्रकार, निबन्ध के प्रस्तावनादि उपसंहारान्त भाग, निबन्ध की शैली, निबन्धों के भेद इत्यादि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- निबन्ध-लेखनाभ्यास से छात्र किसी भी विषय पर व्यवस्थित तथा सौष्ठवपूर्ण विचाराभिव्यक्ति में सामर्थ्य-अर्जन करेंगे।
- कृदन्तों के ज्ञान से छात्रों को संस्कृत-साहित्य के बोध में बहुत लाभ होगा, क्योंकि पञ्चतन्त्र, हितोपदेश, संस्कृत नाटक, उपन्यास इत्यादिकों का अधिकांश भाग इन कृदन्तों के प्रयोग से भरा पड़ा है।
- कृदन्तों के अध्ययन से छात्रों में प्रकृति-प्रत्यय-विभाग की समझ विकसित होगी।
- प्रायः कृदन्त प्रयोग तिङन्त प्रयोगों से अधिक सुगम होते हैं, किञ्च कृदन्त शब्दों की रूपसिद्धि भी ४-५ सूत्रों से ही निष्पन्न हो जाती है, अतः छात्र कृदन्तों को शीघ्र अधिगत करके उनका भाषा में (लेखन व भाषण के समय) अव्यवहित स्वैर प्रयोग भी कर सकेंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. निबन्ध – वैदिक वाङ्मय, ललित साहित्य, भारतीय दर्शन, पुराणेतिहास, व्याकरण तथा आधुनिक संस्कृत साहित्य – इन विषयों पर संस्कृत-निबन्ध-लेखन।

इकाई - 2. अनुवाद – हिन्दी वाक्य/अवतरणादि का संस्कृतानुवाद, संस्कृत वाक्यों में अशुद्धि-संशोधन।

इकाई - 3. अनुवाद – अपठित संस्कृत वाक्य-श्लोक-गद्यावतरणादि का हिन्द्यनुवाद।

इकाई - 4. लघुसिद्धान्तकौमुदी – कृदन्त-प्रकरण (कृत्य एवं पूर्वकृदन्त)।

इकाई - 5. लघुसिद्धान्तकौमुदी – कृदन्त-प्रकरण (उत्तरकृदन्त)।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।

2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।

3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।

4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत 08 अङ्क का हिन्दी से संस्कृत अनुवाद करणीय है तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. संस्कृतनिबन्धशतकम् – डॉ कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. वृहद् संस्कृतनिबन्धकलिका – पं शिवप्रसाद द्विवेदी, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
3. प्रबन्धरत्नाकर – डॉ रमेशचन्द्र शुक्ल, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
4. प्रौढनिबन्धसौरभम् – पं विश्वनाथ मिश्र, राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र, जयपुर।
5. संस्कृत निबन्ध-पथ-प्रदर्शक – वामन शिवराम आप्टे, रामनारायण लाल, प्रयागराज।
6. रचनानुवादकौमुदी – डॉ कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
7. प्रौढरचनानुवादकौमुदी – डॉ कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
8. वृहद्-अनुवाद-चन्द्रिका – चक्रधर हंस नौटियाल, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
9. लघुसिद्धान्तकौमुदी – (भैमी व्याख्या, भाग-३) – भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली।
10. लघुसिद्धान्तकौमुदी – महेश सिंह कुशवाहा, चौखम्बा प्रकाशन।
11. लघुसिद्धान्तकौमुदी – अर्कनाथ चौधरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
12. लघुसिद्धान्तकौमुदी – डॉ सुरेन्द्र देव स्नातक, चौखम्बा पब्लिशर्स।
13. लघुसिद्धान्तकौमुदी – धरानन्द शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
14. लघुसिद्धान्तकौमुदी – सत्यपाल सिंह, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली।
15. लघुसिद्धान्तकौमुदी – गीताप्रेस, गोरखपुर।
16. एम.ए. संस्कृत व्याकरण – डॉ श्रीनिवास शास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ।
17. सम्भाषण-सन्देशः (संस्कृत मासिक पत्रिका) – अक्षरम्, गिरिनगरम्, बेंगलूरु।
18. भारती (मासिक संस्कृत-पत्रिका) – भारती भवन कार्यालय, न्यू कॉलोनी, जयपुर।
19. स्वरमङ्गला (त्रैमासिक संस्कृत-पत्रिका) – राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर।

20. सारस्वत सुषमा – सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

21. सागरिका – डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश।

22. संस्कृत प्रतिभा – साहित्य अकादमी, दिल्ली।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

23. लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या) – कृदन्त-प्रकरण (पृष्ठाङ्क १-२९५) – https://avg-sanskrit.org/avgclasses/LSK/000-Books/LSKBmV-3-Kridanta.pdf

24. रचनानुवादकौमुदी (डॉ कपिलदेव द्विवेदी) – https://ia801406.us.archive.org/32/items/in.ernet.dli.2015.545725/2015.545725.Rachnanuvadh-Kumodi.pdf

25. प्रौढरचनानुवादकौमुदी (निबन्ध-लेखन हेतु द्रष्टव्य पृ. २८४-३२०) – https://ia600601.us.archive.org/26/items/in.ernet.dli.2015.327450/2015.327450.Praudh-rachnanuvad-Kaumudi.pdf

26. संस्कृतनिबन्धशतकम् – https://www.jainfoundation.in/JAINLIBRARY/books/sanskrut_nibandh_shatakam_006194_hr6.pdf

एम.ए. (संस्कृत) तृतीयार्द्धसत्र

SANS-DCC-T303(A)

शास्त्रीय साहित्य तथा गद्य काव्य

पाठ्यक्रमोद्देश्य :
(Course Objectives)

- संस्कृत काव्यशास्त्र के षड्विध संप्रदायों में आचार्य कुन्तक द्वारा प्रतिष्ठापित वक्रोक्ति संप्रदाय अत्यन्त महनीय है। आचार्य कुन्तक वक्रोक्ति को ही काव्यात्मा मानते हैं। अतः वैदग्ध्यभङ्गीभणितिरूप वक्रोक्ति के परिज्ञान के लिए वक्रोक्तिजीवित का प्रथम उन्मेष पाठ्यक्रम में निर्धारित किया गया है ।
- प्रथमोन्मेष के निर्धारित अंश विचित्रमार्ग तथा मध्यममार्ग के स्वरूपगुणों तथा तीनों काव्य-मार्गों के साधारण गुणौचित्य को जानने के उद्देश्य से अत्यन्त उपयोगी हैं।
- यायावरीय (राजशेखर) द्वारा रचित काव्यमीमांसा महत्त्वपूर्ण साहित्यशास्त्रीय ग्रन्थ है। काव्यशास्त्र के मूलस्रोत, विद्यास्थान, काव्यशास्त्रीय विषय, काव्यशास्त्र का स्थान, काव्यपुरुषोत्पत्ति, वृत्ति, प्रवृत्ति एवं रीति इत्यादि के परिज्ञान के प्रयोजन से इसके प्रथम तीन अध्याय अध्येय हैं।
- काव्यविद्या के अधिकारी, काव्यजननी प्रतिभा एवं व्युत्पत्ति, कविभेद आदि विषयों की समझ बढ़ाने के उद्देश्य से चतुर्थ व पञ्चम अध्याय काव्यमीमांसा से निर्धारित किए गए हैं।
- गद्य काव्य के अंतर्गत गद्यसम्राट् बाणभट्ट विरचित हर्षचरित ऐतिहासिक कृति है। ऐतिहासिक महत्त्व, साहित्यिक शैली, सांस्कृतिक अन्तर्दृष्टि और महत्त्वपूर्ण घटनाओं का चित्रण प्राचीन भारत के राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिदृश्य को समझने का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। इसी प्रयोजन से इस कृति का पञ्चमोच्छ्वास निर्धारित किया गया है।

अधिगम-फलितांश :
(Learning Outcomes)

- विद्यार्थी काव्यप्रयोजन, काव्यलक्षण, वक्रोक्ति के स्वरूप, तत्प्रकार, काव्य के त्रिविध मार्ग के अन्तर्गत सुकुमारमार्ग के स्वरूप व गुणों से परिचित हो सकेंगे।
- विद्यार्थी विचित्र मार्ग और मध्यम मार्ग के स्वरूप को समझकर कविस्वभावभेद कर सकेंगे।
- काव्यमीमांसा के आद्य तीन अध्यायों के अध्ययन से विद्यार्थियों के साहित्यशास्त्रीय ज्ञान में यथेष्ट वृद्धि होगी। वे शास्त्रीय विषयों को प्रस्तुत करने की शैली से भी परिचित हो सकेंगे।
- काव्यमीमांसा के चतुर्थ व पञ्चम अध्यायों के अध्येता विद्यार्थी अध्यायोक्त विषयों को सहजता से समझ कर तुलनात्मक अध्ययन के प्रति अभिरुचि प्रदर्शित कर सकेंगे।
- विद्यार्थी उपन्यासकल्प गद्यकाव्य (हर्षचरित) के निर्धारित अंश के अध्ययन से बाणभट्ट की गद्य शैली के साथ ही तत्कालीन ऐतिहासिक तथ्यों को काव्यात्मक रूप से समझ सकेंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई -1. वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथमोन्मेषः) (कारिका ०१–३३ पर्यन्त)।

इकाई - 2. वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथमोन्मेषः (कारिका ३४ से समाप्ति पर्यन्त))।

इकाई - 3. काव्यमीमांसा (०१–०३ अध्याय)।

इकाई - 4. काव्यमीमांसा (०४–०५ अध्याय)

इकाई - 5. हर्षचरितम् – पञ्चमोच्छ्वास ('नियतिर्विधाय' से लेकर 'कथमपि निनाय निशाम्' तक का अंश)।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –
  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।
  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।

3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत काव्यमीमांसा (इकाई 3) से व्याख्या/प्रश्न (08 अङ्क) संस्कृत-माध्यम से प्रष्टव्य है तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथमोन्मेषः) – आचार्य विश्वेश्वर
2. वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथमोन्मेषः) – राधेश्याम मिश्र, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
3. वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथमोन्मेषः) – पं परमेश्वरदीन पाण्डेय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
4. वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथमोन्मेषः) – आचार्य लोकमणि दाहाल, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
5. वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथमोन्मेषः) – प्रो ओमनाथ बिमली, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली।
6. काव्यमीमांसा (अध्याय १-५) – श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
7. काव्यमीमांसा – पं केदारनाथ शर्मा सारस्वत, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
8. काव्यमीमांसा – हरिदास-संस्कृत-ग्रन्थमाला, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ ऑफिस, वाराणसी।
9. काव्यमीमांसा (अध्याय १-५) – डॉ रविकान्त मणि, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
10. हर्षचरितम् – जगन्नाथ पाठक, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
11. हर्षचरितम् – मोहनदेव पन्त, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
12. हर्षचरितम् (पञ्चमोच्छ्वासः) – डॉ निरञ्जन मिश्र, हंसा प्रकाशन, जयपुर।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. वक्रोक्तिजीवितम् (सटिप्पणं हिन्दीव्याख्योपेतम्) – https://www.jainfoundation.in/JAINLIBRARY/books/Vakrokti_Jivitam_009709_std.pdf
2. काव्यमीमांसा – https://ia601008.us.archive.org/10/items/KavyaMimansaSanskritHindiVyakhyaTill5thChapterPt.MadhuSudanMishra/Kavya%20Mimansa%20Sanskrit%20Hindi%20Vyakhya%20Till%205th%20Chapter%20-%20Pt.%20Madhu%20Sudan%20Mishra.pdf
3. काव्यमीमांसा-प्रोक्तानि विद्यास्थानानि – https://www.jainfoundation.in/JAINLIBRARY/books/Vakrokti_Jivitam_009709_std.pdf
4. हर्षचरितम् (सम्पूर्ण) – जगन्नाथ पाठक, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – https://ia904504.us.archive.org/9/items/harshacharitam-in-hindi/Harshacharitam.pdf

(इसमें केवल 'महाराज-मरण-वर्णन' नामक पञ्चमोच्छ्वास (पृ.२५०-२९८) से निर्धारित अंश पठनीय है।)

एम.ए. (संस्कृत) तृतीयार्द्धसत्र
SANS-DCC-T303(B)
आधुनिक साहित्य

पाठ्यक्रमोद्देश्य :
(Course Objectives)

- बालरामायणम्, हनुमन्नाटकम् इत्यादि कुछ रचनाएँ आचार्य विश्वनाथोक्त लक्षण (एतदेव यदा सर्वैः पताकास्थानकैर्युतम् अङ्कैश्च दशभिर्धीरा महानाटकमूचिरे) के अनुसार महानाटक की कोटि में परिगणित हैं, किन्तु ये पाठ्यक्रमों में प्रायः नहीं देखी जातीं। अतः छात्रों का एक महानाटक से परिचय करवाने के प्रयोजन से 'विवेकानन्दविजयम्' महानाटक को पाठ्यत्वेन रखा गया है।
- पुण्यश्लोक, हिन्दुधर्मधुरन्धर, भरतभू-वैजयन्ती को भुवन में उत्तोलित करने वाले सन्न्यासी, स्वामी विवेकानन्द के अद्भुत चरित से छात्रों का साक्षात्कार करवाना भी उद्दिष्ट है।
- स्वामी रामकृष्ण परमहंस की कथा, स्वामी विवेकानन्द की युवावस्था, उनकी राजस्थान-यात्रा, खेतड़ी-नरेश के साथ उनकी मैत्री, राजसभा में पहले नर्तकी (वाराङ्गना/वेश्या) की उपेक्षा और पुनः उसके द्वारा प्रस्तुत भजन 'प्रभु मोरे अवगुण चित न धरो' को सुनकर स्वामी जी का भावविह्वल हो जाना, उसी सभा में दम्भी मानसिंह नरेश के साथ उनका संवाद, वहीं प्रसंगवश मूर्तिपूजा का रहस्योद्घाटन – इत्यादि सत्य घटनाओं का छात्रों को सुरुचिपूर्ण ढंग से ज्ञान करवाना।
- 'कुसुमलक्ष्मीः' नामक उपन्यास, जो कि एक अभिनव प्रणयकथा है, के माध्यम से रसानुभूति के साथ आधुनिक उपन्यास विधा से छात्रों का परिचय करवाना।
- सामान्य अध्ययन के अन्तर्गत कतिपय आधुनिक संस्कृत कवियों का परिचय करवाना।

अधिगम-फलितांश :
(Learning Outcomes)

- छात्र महानाटक के लक्षण तथा पताकास्थानकादि पारिभाषिक संज्ञाओं से परिचित होंगे।
- छात्र स्वामी जी के विलक्षण व्यक्तित्व से परिचय पाकर तत्प्रेरणा से स्व-व्यक्तित्व-विकास-परिष्कार कर सकेंगे।
- छात्र स्वामी विवेकानन्द के जीवन-लक्ष्य 'मोक्षार्थमात्मनो जन्म हिताय जगतस्तथा' को पढ़कर अपने जीवन की दिशा भी तय कर सकेंगे।
- छात्र 'कुसुमलक्ष्मीः' नामक उपन्यास के रूप में एक सरल और रोचक प्रेम-कथा से सद्यः परनिर्वृति को प्राप्त होंगे।
- छात्र उपन्यास में प्रयुक्त अनेक नवीन संस्कृत-शब्दों से परिचित हो सकेंगे, यथा आसित्र (अड्डा), वाष्पगन्त्री (रेलगाड़ी), पत्रावली (पत्तल), द्रव्योपहस्तिका (बटुआ), मुखधूसिका (फ़ेस-क्रीम), पद्या (फुटपाथ), ब्रह्मकषाय (कॉफी) इत्यादि।
- छात्र आधुनिक काल के संस्कृत रचनाकारों और उनके रचनाकर्म से परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई -1. विवेकानन्दविजयम् (श्रीधरभास्कर वर्णेकर) अङ्क १-२ (प्रस्तावना-सहित)

इकाई - 2. विवेकानन्दविजयम् (श्रीधरभास्कर वर्णेकर) अङ्क ३-४

इकाई - 3. विवेकानन्दविजयम् (श्रीधरभास्कर वर्णेकर) अङ्क ५-६

इकाई - 4. कुसुमलक्ष्मीः (आनन्दवर्धन रत्नपारखी) प्रथमः समुच्छ्वासः

इकाई - 5. सामान्य अध्ययन – निम्नलिखित आधुनिक संस्कृत कवियों का अध्ययन – भट्ट मथुरानाथ शास्त्री, श्रीगणेशराम शर्मा, श्री नित्यानन्द शास्त्री, प्रो. श्रीनिवासरथ, डॉ हरिराम आचार्य, पं. नवल-किशोर कांकर, श्री पद्म शास्त्री, पं. विश्वनाथ मिश्र।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत विवेकानन्दविजयम् (इकाई 1) से 08 अङ्क की संस्कृत-व्याख्या प्रष्टव्य है तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. विवेकानन्दविजयम् (मूलमात्रम्) – विवेकानन्द शिला-स्मारक प्रकाशन, चेन्नई।
2. विवेकानन्दविजयम् (हिन्दी-व्याख्या) – डॉ विक्रमजीत व डॉ भवानीशंकरशर्मा 'महाजनीय', हंसा प्रकाशन, जयपुर।
3. प्रज्ञाभारती श्रीधरभास्कर वर्णेकरः – लीना रस्तोगी, साहित्य अकादेमी, दिल्ली।
4. कुसुमलक्ष्मीः (हिन्द्यनुवादसहित) – डॉ कृष्णकुमार, साहित्य भण्डार, मेरठ।
5. आधुनिक संस्कृत साहित्य – महामहोपाध्याय आचार्य दयानन्द भार्गव, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
6. राजस्थानस्य अभिनव-संस्कृत-साहित्यम् – राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर।
7. राजस्थान के संस्कृत कवि – राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर।
8. राजस्थान-गौरवम् – डॉ गंगाधरभट्ट, राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर।
9. नवोन्मेषः – सं. डॉ रामचन्द्र द्विवेदी, राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर।
10. साहित्यस्रष्टा पं विद्याधर शास्त्री – डॉ परमानन्द सारस्वत, बीकानेर।
11. सागरिका (संस्कृत-पत्रिका) – डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश।
12. सम्भाषण-सन्देशः (संस्कृत मासिक पत्रिका) – अक्षरम्, गिरिनगरम्, बेंगलूरु।
13. भारती (मासिक संस्कृत-पत्रिका) – भारती भवन कार्यालय, न्यू कॉलोनी, जयपुर।
14. स्वरमङ्गला (त्रैमासिक संस्कृत-पत्रिका) – राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर।
15. सारस्वत सुषमा (संस्कृत-पत्रिका) – सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।
16. संस्कृत प्रतिभा (संस्कृत-पत्रिका) – साहित्य अकादमी, दिल्ली।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. कुसुमलक्ष्मीः (सम्पूर्णं, मूलमात्रम्) – https://ia804708.us.archive.org/17/items/in.ernet.dli.2015.406195/2015.406195.Kusumlaxmi.pdf
2. श्रीधरभास्कर वर्णेकर : एक परिचय – https://www-warnekar-net.translate.goog/pradnyabharati?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc

एम.ए. (संस्कृत) तृतीयार्द्धसत्र

SANS-DCC-T303(C)

आयुर्वेद, ज्योतिष तथा नित्यकर्मविधि

पाठ्यक्रमोद्देश्य :
(Course Objectives)

- आयुर्वेद के महान् उपकारक ग्रन्थ 'अष्टाङ्गहृदय' में वर्णित आयुर्वेद के अष्ट अङ्गों का ज्ञान कराना। इस ग्रन्थ का महत्त्व 'न मात्रामात्रमप्यत्र किञ्चिदागमवर्जितम्' (अर्थात् इस सम्पूर्ण ग्रन्थ में एक मात्रा भी शास्त्रों के विपरीत नहीं है), इस सूक्ति से समझा जा सकता है।
- स्वस्थ जीवन-शैली के शिक्षण के साथ ही आयुर्वेद के मूलोपदेश 'हितभुक् मितभुक् ऋतभुक्' का ज्ञान कराना।
- ज्योतिषशास्त्र के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'वृहत्संहिता' के द्वारा ग्रहाचार, खगोलीय घटनाओं तथा वास्तुकला आदि उपयोगी विषयों का सम्यक् बोध कराना मुख्य उद्देश्य है।
- ब्रह्म के स्वरूप को समझाकर उसका ध्यान व सन्ध्योपासना की विधि का ज्ञान करवाना।
- आचमन, प्राणायाम इत्यादि क्रियाएँ सिखाकर ईश्वर-स्तुति, प्रार्थना, उपासना की उचित विधि की जानकारी प्रदान करना।
- यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले पात्र व सामग्री आदि की जानकारी प्रदान करना तथा पञ्चमहायज्ञों से जीवन में उत्कर्ष का आधान कराना। कहा भी गया है - 'महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः।'
- कतिपय चयनित स्तोत्रों को पाठ्यक्रम में रखने का उद्देश्य – सस्वर गान, शुद्धोच्चारण तथा अर्थावबोध का सामर्थ्य विकसित करना भी है।

अधिगम-फलितांश :
(Learning Outcomes)

- आयुर्वेद के अध्ययन से स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता विकसित होगी और 'स्वस्थस्य स्वास्थ्य-रक्षणमातुरस्य विकार-प्रशमनञ्च' का आयुर्वेदोक्त लक्ष्य सिद्ध होगा।
- छात्र तिथि, नक्षत्र, माह, ऋतु, अयन आदि का निर्णय करने में समर्थ होंगे।
- छात्र लुप्तप्राय यज्ञीय परम्परा को स्वयं समझकर अन्यों को प्रेरित करने में सफल होंगे, जिससे इस श्रेष्ठ परम्परा का संरक्षण होगा।
- छात्र वेदमन्त्रों के शुद्ध उच्चारण में समर्थ होंगे तथा यज्ञों व मन्त्रों के आध्यात्मिक, आधिदैविक व आधिभौतिक महत्त्व को समझने में भी सफल हो सकेंगे।
- आदि शङ्कराचार्य, गोस्वामी तुलसीदास इत्यादि द्वारा रचित सुन्दर स्तोत्रों के आस्वादन व अर्थबोध के साथ-साथ छात्रों को स्वर, ताल, लय, राग आदि का भी बोध हो सकेगा।
- पौरोहित्य कर्म तथा ज्योतिष में रुचिमन्त छात्रों को इस क्षेत्र में वृत्ति के अवसर भी सहज उपलब्ध हो पाएँगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई 1. अष्टाङ्गहृदयम् (वाग्भट) – सूत्रस्थान, अध्याय ०१ से ०२ तक।

इकाई 2. अष्टांगहृदयम् (वाग्भट) – सूत्रस्थान, अध्याय ०३ मात्र।

इकाई 3. बृहत्संहिता (वराहमिहिर) – अध्याय ०१ से ०३ तक।

इकाई 4. पञ्च महायज्ञ – ब्रह्मयज्ञ- वैदिक सन्ध्या (गायत्री मन्त्र, आचमन आदि से लेकर नमस्कार मन्त्र पर्यन्त), अग्निहोत्र (संकल्प से पूर्णाहुति पर्यन्त), पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ। यज्ञों से सम्बन्धित प्रश्न, मन्त्रपूर्ति, यज्ञों का महत्त्व इत्यादि।

इकाई 5. स्तोत्रसाहित्य - अधोलिखित संस्कृत-स्तोत्रों का अर्थावबोधपूर्वक सस्वर गानाभ्यास अपेक्षित है –

(१) गणेश-पञ्चरत्नम् – आदिशङ्करभगवत्पादविरचितम्।

(२) नाम-रामायणम् – लक्ष्मणाचार्यकृतम्।

(३) रुद्राष्टकम् – गोस्वामितुलसीदासकृतम्।

(४) चर्पटपञ्जरिका/मोहमुद्गर-स्तोत्रम् – श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतम्।

(५) देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम् (श्रीमच्छङ्करभगवत्पादविरचितम्)।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –
  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।
  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत इकाई 5 में से एक प्रश्न (08 अङ्क) संस्कृत-माध्यम से करना होगा तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. अष्टाङ्गहृदयम् - टीकाकार कविराज अत्रिदेव गुप्त, सं. वैद्य यदुनन्दन उपाध्याय, चौखम्भा संस्कृत सीरीज़, वाराणसी।
2. अष्टाङ्गहृदयम् - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।
3. आयुर्वेद का वृहत् इतिहास अत्रिदेव विद्यालंकार, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
4. वृहत्संहिता – पं अच्युतानन्द झा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
5. पञ्चमहायज्ञवाणी – डॉ कर्णदेव आर्य शास्त्री, नई दिल्ली।
6. नित्यकर्म-पूजाप्रकाश – पं लालबिहारी मिश्र, गीताप्रेस, गोरखपुर।
7. आदर्श नित्यकर्मविधि – स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती।
8. संस्कारविधि – स्वामी दयानन्द सरस्वती।
9. दुर्गासप्तशती – गीताप्रेस गोरखपुर।
10. आर्यपर्वपद्धति – विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई दिल्ली।
11. स्तोत्ररत्नावली – गीताप्रेस, गोरखपुर।
12. शिवस्तोत्ररत्नाकर – गीताप्रेस, गोरखपुर।
13. देवीस्तोत्ररत्नाकर – गीताप्रेस, गोरखपुर।
14. ब्रह्मनित्यकर्म समुच्चय – शास्त्री दुर्गाशङ्कर ठाकर, मुम्बई।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. अष्टाङ्गहृदयम् (वाग्भट) – डॉ ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली – https://ia601200.us.archive.org/19/items/AstangaHrdayam_Hindi/Astanga-hrdayam_Hindi.pdf

2. वृहत्संहिता (वराहमिहिर) – https://ia803209.us.archive.org/32/items/brihat-samhita-/%E0%A4%AC%E0%A5%83%E0%A4%B9%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A4%BE%20Brihat%20Samhita%20B.P%20Mishra.pdf
3. पञ्चमहायज्ञविधि – https://ia902900.us.archive.org/14/items/20200312_20200312_1554/%E0%A4%AA%E0%A4%82%E0%A4%9A%20%E0%A4%AE%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%AF%E0%A4%9C%E0%A5%8D%E0%A4%9E%20%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A7%E0%A4%BF.pdf
4. पञ्चमहायज्ञ-विवेचन – http://hjssh.sharadpauri.org/papers/Volume%2011%202016%20HJSSH/HJSC%2014%20Bhatt.pdf
5. नित्यकर्मपूजाप्रकाश – गीताप्रेस, गोरखपुर – https://ia802200.us.archive.org/2/items/HindiBookNityaKarmPoojaPrakashCompletebyGitaPress/Hindi%20Book-Nitya-Karm-Pooja-Prakash%28Complete%29by%20Gita%20Press.pdf
6. गणेश-पञ्चरत्नम् – (सस्वर गायन : सूर्यगायत्री एवं कुलदीप एम. पाई) – https://youtu.be/L9FekdPOs1M?si=L8MolV5Wy-rFRslf
7. गणेश-पञ्चरत्नम् (मूलपाठः, आंग्लभाषानुवादश्च) – https://static1.squarespace.com/static/610bfd9a13fdd76b157818f6/t/6138916cc0d6e77fc12bb5df/1631097197267/Shri+Ganesh+Pancharatnam.pdf
8. रुद्राष्टकम् (पाठ्यसहित सस्वर गायन, स्वर : श्रीरमेशभाई ओझा) – https://youtu.be/m3m1dXmTrJU?si=2HrcyT00VHs80Nko
9. चर्पटपञ्जरिका/मोहमुद्गर/भज गोविन्दम् (पाठ्यसहित सस्वर गायन, स्वर : एमएस सुब्बुलक्ष्मी) – https://youtu.be/f7IzjfwJQXo?si=plNcLsjRv7FyyJ7I
10. लक्ष्मणाचार्यकृतं नामरामायणम् (पाठ्यसहित सस्वर गायन, स्वर : एमएस सुब्बुलक्ष्मी) – https://youtu.be/e6XTVyVi5H0?si=-UYVHVPeGDmb05H5
11. लक्ष्मणाचार्यकृतं नामरामायणम् (मूलपाठः) – https://sanskritdocuments.org/doc_raama/naamaraamaayana.html
12. देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम् (मूलपाठः) – https://sanskritdocuments.org/doc_devii/dapradh.pdf
13. देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम् (पाठ्यसहित सस्वर गायन) – https://youtu.be/bHVtLb9ulLI?si=2oHpWK096zzmGGa4

एम.ए. (संस्कृत) तृतीयार्द्धसत्र

वर्ग 'अ' साहित्य

SANS-DSE-Gr.A-T304

संस्कृत-काव्यशास्त्र

पाठ्यक्रमोद्देश्य :
(Course Objectives)

- काव्य की परख करने हेतु आचार्य मम्मट-विरचित विस्तृत एवं प्रामाणिक ग्रन्थ काव्यप्रकाश, संस्कृत-साहित्य के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। काव्यप्रयोजन, काव्यहेतु एवं काव्यस्वरूप के परिज्ञान के उद्देश्य से इस ग्रन्थ का प्रथमोल्लास पाठ्यत्वेन निर्धारित किया गया है।
- 'शब्दार्थशरीरं तावत् काव्यम्' के अनुसार शब्द और अर्थ काव्य का शरीर है। अतः शब्दार्थ के विशद ज्ञान हेतु काव्यप्रकाश का द्वितीयोल्लास अध्येय और ज्ञेय है।
- काव्य के प्रथम भेद 'ध्वनिकाव्य' (उत्तम काव्य) के विशिष्ट अध्ययन के लिए काव्यप्रकाश का चतुर्थोल्लास अत्यन्त उपादेय होने से पाठ्यक्रम में रखा गया है।
- काव्य के 'गुणीभूतव्यङ्ग्य' और 'चित्रकाव्य' नामक भेदद्वय के परिज्ञानार्थ काव्यप्रकाश का पञ्चम व षष्ठोल्लास निर्धारित किया गया है।
- संस्कृतकाव्यशास्त्र की परम्परा के समग्रज्ञान के लिए काव्यशास्त्र के प्रमुख सम्प्रदायों का ज्ञान अपेक्षित है। इस हेतु संस्कृत 'काव्यशास्त्र के प्रमुख सम्प्रदाय' विषय पाठ्यक्रम में रखा गया है।

अधिगम-फलितांश :
(Learning Outcomes)

- विद्यार्थी कविसृष्टि की विशेषताओं, काव्यप्रयोजन, काव्यहेतु, काव्यलक्षण आदि का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- विद्यार्थी शब्दशक्तियों तथा अर्थ की व्यञ्जकता से परिचित हो सकेंगे।
- छात्र रसस्वरूप, रसनिष्पत्ति, रस का ध्वनि से तादात्म्य तथा रसवदलङ्कारों का बोध कर सकेंगे।
- विद्यार्थी काव्यभेदों को, तत्तद्भेद के लक्षण तथा उदाहरण के साथ स्पष्ट रूप से जान सकेंगे।
- काव्यशास्त्र के प्रमुख सम्प्रदायों के अधीती विद्यार्थी संस्कृत-काव्यशास्त्र की चिन्तनदृष्टि से परिचय पाकर विभिन्न सम्प्रदायों और उनके आचार्यों के विषय में जान सकेंगे। विभिन्न सम्प्रदायों की शक्ति और सीमाओं का बोध भी कर सकेंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. काव्यप्रकाश (मम्मट) – प्रथम उल्लास।

इकाई - 2. काव्यप्रकाश (मम्मट) – द्वितीय एवं तृतीय उल्लास।

इकाई - 3. काव्यप्रकाश (मम्मट) – चतुर्थ उल्लास।

इकाई - 4. काव्यप्रकाश (मम्मट) – पञ्चम एवं षष्ठ उल्लास।

इकाई - 5. काव्यशास्त्र के प्रमुख सम्प्रदाय।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।

4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत काव्यप्रकाश प्रथमोल्लास से एक प्रश्न/व्याख्या (08 अङ्क) संस्कृत-माध्यम से करणीय है तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. काव्यप्रकाश – वामनाचार्य झळकीकर, निर्णयसागर प्रेस, मुम्बई।
2. काव्यप्रकाश – आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि, चौखम्बा
3. काव्यप्रकाश – रामसागर त्रिपाठी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
4. काव्यप्रकाश – श्रीनिवास शास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ।
5. काव्यप्रकाश – डॉ सत्यव्रत सिंह, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
6. काव्यप्रकाशः (सोलह टीकाओं सहित) – ज्योत्स्ना मोहन, नाग प्रकाशक, दिल्ली।
7. रससिद्धान्त की शास्त्रीय समीक्षा – प्रो सुरजनदास स्वामी, जोधपुर।
8. रसालोचनम् – डॉ ब्रह्मानन्द शर्मा, शरण पुस्तक भण्डार, जयपुर।
9. काव्यदोष : उद्भव और विकास (खण्ड १-२) – डॉ माधोदास व्यास।
10. Sanskrit Poetics – S. K. De
11. भारतीय साहित्यशास्त्र – आचार्य बलदेव उपाध्याय, प्रसाद परिषद्, वाराणसी।
12. भारतीय साहित्यशास्त्र कोश – डॉ राजवंश सहाय हीरा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना।
13. अलंकारशास्त्र की परम्परा – डॉ राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. काव्यप्रकाश (सम्पूर्ण, व्याख्या - डॉ श्रीनिवास शास्त्री) – https://ia804706.us.archive.org/13/items/in.ernet.dli.2015.545697/2015.545697.Mamta-Chariya.pdf
2. काव्यप्रकाश (संक्षिप्त) – https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/83501/1/Block-1.pdf
3. काव्यप्रकाश-खण्डनम् (महामहोपाध्याय-खुश्फहम्-सिद्धिचन्द्रगणि-रचितम्) – https://www.jainfoundation.in/JAINLIBRARY/books/Kavya_Prakash_Khandana_002506_HR.pdf
4. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख सम्प्रदाय – https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/24262/1/Unit-5.pdf
5. रस सम्प्रदाय और उसके प्रमुख आचार्य – https://hindisarang.com/ras-siddhant/
6. काव्यप्रकाश उल्लास १-२ के लिए कतिपय व्याख्यान (प्रो. विक्रम जीत) – https://youtube.com/playlist?list=PL_3xM73ZBglw-CNz9KFlpkGPWE4ZcKyWY&si=iB0uow9YgjPkGMPT

एम.ए. (संस्कृत) तृतीयार्द्धसत्र

वर्ग 'अ' साहित्य

SANS-DSE-Gr.A-T305(A)

नाटक तथा नाट्यशास्त्र

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- परम्परातिक्रमी व कारुण्यप्रधान 'उत्तररामचरितम्' भवभूतिकृत महत्त्वपूर्ण नाटक है, जो कवि की कल्पनाशीलता, भाषिकचातुर्य और नाटकीय कौशल का अद्भुत निदर्शन है। इसके बिना संस्कृत साहित्य का अध्ययन अधूरा है। अतः स्नातकोत्तर कार्यक्रम के तृतीय षाण्मासिक सत्र में इसके आद्य चार अङ्क निर्धारित किए गए हैं।
- 'वेणीसंहार' भीम की प्रतिज्ञा पर आधारित और वीररसप्रधान भट्टनारायणविरचित 6 अङ्कों का नाटक है। यह गौडी रीति व ओजोगुणप्रधान नाटक का आदर्श उदाहरण है। अतः इस पाठ्यक्रम की एक इकाई में इसके प्रथम तीन अङ्क निर्धारित किए गए हैं।
- आचार्यभरतमुनिविरचित 'नाट्यशास्त्र' 36 अध्यायों का विशाल ग्रन्थरत्न है, जो नाट्य का साङ्गोपाङ्ग विश्लेषण और विवरण प्रस्तुत करता है। अतः प्रकृत पाठ्यक्रम में इसका प्रथम अध्याय पठनीय है।
- नाट्यमण्डप की रचना के ज्ञान हेतु नाट्यशास्त्र का द्वितीय अध्याय यहाँ अध्ययन के लिए निर्दिष्ट किया जाता है।
- धनञ्जयविरचित 'दशरूपकम्' नाट्य के कुछ लक्षणों को संक्षेप में प्रस्तुत करने वाला अत्यन्त सुगठित ग्रन्थ है । रूपकों के लक्षण और प्रकार व उनके भेदकतत्त्व वस्तु-नेता-रस के परिज्ञानार्थ इसका प्रथम-प्रकाश अध्येय है।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- उत्तररामचरितम् के निर्धारित अंश के अधीती विद्यार्थी संस्कृतसाहित्य की विशेषताओं को समझ कर भवभूति की रचना-शैली की पहचान कर सकेंगे, नाटकीय संरचना और नाट्यतत्त्वों का विश्लेषण कर सकेंगे। छायाङ्क के अध्ययन से विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति ऊर्वरा होगी।
- उत्तररामचरित के अध्ययन से छात्र राम के अनेक चारित्रिक गुणों, उनकी लोकाराधनपरायणता, राम-सीता के अद्वैत दाम्पत्य इत्यादि तत्त्वों का परिचय प्राप्त करेंगे।
- विद्यार्थी भरतमुनि तथा नाट्यशास्त्र का परिचय, नाट्यशास्त्रीय प्राचीनपरम्परा, नाट्यवेद की उत्पत्ति, नाट्यवृत्तियाँ, नन्दी, जर्जर इत्यादि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- नाट्यशास्त्र के द्वितीय अध्याय के अध्येता नाट्यमण्डप के प्रकार, तन्निर्माणविधि, नेपथ्य, रङ्गशीर्ष, रङ्गपीठ, मत्तवारणी इत्यादि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- दशरूपक के प्रथम-प्रकाश के अध्ययन से विद्यार्थी रूपक के लक्षण तथा प्रकार, कथावस्तु के भेद, नाट्यसन्धि, सन्ध्यङ्ग और नाट्योक्ति के विषय में ज्ञान प्राप्त कर इनका विश्लेषण कर सकेंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई -1. उत्तररामचरितम् – भवभूति (०१-०४ अङ्क)।

इकाई - 2. वेणीसंहारनाटकम् – भट्टनारायण (०१-०३ अङ्क)।

इकाई - 3. नाट्यशास्त्रम् – भरतमुनि (प्रथम अध्याय)।

इकाई - 4. नाट्यशास्त्रम् – भरतमुनि (द्वितीय अध्याय)।

इकाई - 5. दशरूपकम् – धनञ्जय (प्रथम प्रकाश)।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –
  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।
  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत उत्तररामचरितम् (इकाई 1) से एक व्याख्या (08 अङ्क) संस्कृत-माध्यम से करणीय है तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. उत्तररामचरितम् – तारिणीश झा, रामनारायणलाल बेनीप्रसाद, प्रयागराज।
2. उत्तररामचरितम् – श्रीशेषराज शर्मा शास्त्री काव्यतीर्थः, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ ऑफिस, वाराणसी।
3. उत्तररामचरितम् – डॉ रमाकान्त त्रिपाठी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी।
4. उत्तररामचरितम् – डॉ शिवबालक द्विवेदी, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
5. वेणीसंहारनाटकम् – पं तारिणीश झा, रामनारायण बेणीमाधव, प्रयागराज।
6. वेणीसंहारनाटकम् – रमाशंकर त्रिपाठी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
7. वेणीसंहारनाटकम् – पं परमेश्वरदीन पाण्डेय, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
8. वेणीसंहारनाटकम् – डॉ ठक्कन मिश्र, परिमल प्रकाशन, दिल्ली।
9. वेणीसंहारनाटकम् – डॉ बालगोविन्द झा, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
10. वेणीसंहारनाटकम् – आचार्य माधव जनार्दन रटाटे, भारतीय बुक कॉरपोरेशन, दिल्ली।
11. नाट्यशास्त्रम् – सं. डॉ पारसनाथ द्विवेदी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
12. नाट्यशास्त्रम् (प्रथम, द्वितीय, षष्ठाध्याय) प्रो ब्रजमोहन चतुर्वेदी, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली।
13. नाट्यशास्त्रम् (प्रथमो भागः, अध्याय १-७) – डॉ रविशंकर नागर, परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली।
14. नाट्यशास्त्रम् (प्रारम्भिकाध्यायद्वयमात्रम्) – पं श्रीजगन्नाथशास्त्री तैलङ्ग, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
15. नाट्यशास्त्रम् – सं. बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ ऑफिस, वाराणसी।
16. नाट्यशास्त्रम् – काशी संस्कृत ग्रन्थमाला, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
17. नाट्यशास्त्रम् – काव्यमाला संस्करणम्, सं. पं केदारनाथ, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
18. भारतीय नाट्यशास्त्र की परम्परा एवं विश्व रङ्गमञ्च – राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रतिभा पब्लिकेशन।
19. नाट्यशास्त्रसोपानम् (प्रश्नोत्तरात्मकम्) – डॉ शिवप्रसाद द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
20. नाट्यशास्त्रम् (प्रथम-द्वितीयाध्यायौ) – सं. डॉ श्रीकृष्ण 'जुगनू', चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ ऑफिस, वाराणसी।
21. दशरूपकम् – डॉ रामजी उपाध्याय, भारतीय विद्या संस्थान, वाराणसी।
22. दशरूपकम् – श्रीनिवास शास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ।
23. दशरूपकम् – डॉ रमाशङ्कर त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
24. दशरूपकम् – लोकमणि दाहाल, चौखम्बा अमरभारती, वाराणसी।
25. दशरूपकम् – डॉ रविकान्तमणि, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर।
26. दशरूपकम् – डॉ भोलाशंकर व्यास, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
27. अभिनव भारती (अभिनव गुप्त) – दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. उत्तररामचरितम् (तारिणीश झा) – https://ia801405.us.archive.org/6/items/in.ernet.dli.2015.400856/2015.400856.Uttarramcharitam.pdf
2. वेणीसंहारनाटकम् (चौखम्बा अमरभारती) – https://ia601506.us.archive.org/28/items/in.ernet.dli.2015.400877/2015.400877.Venisamhara-Nataka.pdf
3. दशरूपकम् – https://archive.org/details/Dasarupaka
4. नाट्यशास्त्रम् (अध्याय- १,२,३) – https://ia904603.us.archive.org/33/items/in.ernet.dli.2015.487502/2015.487502.Naatyashashtram.pdf

एम.ए. (संस्कृत) तृतीयार्द्धसत्र

वर्ग 'अ' साहित्य
SANS-DSE-Gr.A-T305(B)
प्राचीन काव्य

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- उपमा, अर्थगौरव और पदलालित्य (माघे सन्ति त्रयो गुणाः) से पूरित महाकवि माघ की पाण्डित्यपूर्ण रचना 'शिशुपालवधम्' के कला एवं भावसौन्दर्य से साक्षात्कार करवाना।
- संस्कृत-वाङ्मय में काव्य को समस्त सुख-सम्पत् का सरल साधन आचार्यों ने माना है और आचार्य भरत मुनि का तो स्पष्ट कथन है कि धर्मार्थियों को धर्म, कामार्थियों को काम, विद्याभिलाषियों को विद्या तथा दीनार्तों व शोक-संतप्तों को परम शान्ति देने वाला एकमात्र साधन काव्य ही है। ऐसे काव्य के द्वारा पाठकों को पुरुषार्थ-चतुष्टय-प्राप्तिरूप धन्यता से युक्त करवाना उद्दिष्ट है।
- संस्कृत-काव्यविधा के 'चिकुरनिकर' महाकवि बिल्हण-विरचित 'विक्रमाङ्कदेवचरितम्' के माध्यम से कविता की प्रौढि, वक्रता, सुष्ठु पदविन्यास, अर्थचारुता, ध्वनि की भङ्गिमा, रस और भाव की हृदयहारिता, अलौकिक भाव-मणियों के गुम्फन तथा ऐतिहासिकता और कलात्मकता – इन सब गुणों से छात्रों का युगपत् परिचय करवाना।
- संस्कृत-साहित्य-रत्नाकर में अवगाहन करवाकर विविध काव्यकृतिरूप रत्नों का परिचय करवाना व आर्ष ग्रन्थों के शाश्वत मूल्यों को आत्मसात् करवाना।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- शिशुपालवध महाकाव्य के रसास्वाद के साथ-साथ विद्यार्थी पण्डित माघ के पाण्डित्य किंवा विविधविद्याविशारदत्व से भी रू-ब-रू होंगे।
- छात्र उस माघकाव्य के शब्द-भण्डार से भी अवगत होंगे, जिसके विषय में प्रसिद्धि है कि नवें सर्ग तक पहुँचने पर ऐसा कोई नवशब्द शेष नहीं रह जाता, जिसका प्रयोग कवि ने न किया हो – 'नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते।'
- छात्र बिल्हण के प्रसादगुण-मण्डित वैदर्भी शैली में निबद्ध विक्रमाङ्कदेवचरित काव्य के सूक्तियुक्त, सरस और भावपूर्ण प्रथम सर्ग को पढ़कर 'साहित्यपाथोनिधिमन्थनोत्थ कर्णामृत' के रसपान से आप्यायित होंगे। इस काव्य की सूक्तियाँ अत्यन्त लोकप्रिय हैं।
- रामायण और महाभारत जैसे काव्यों के साथ ही कतिपय अन्य ऐतिहासिक काव्यों के सामान्य अध्ययन से भी छात्र समृद्ध होंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई -1. शिशुपालवधम् – प्रथम सर्ग (पद्य ०१-४५)।

इकाई - 2. शिशुपालवधम् – प्रथम सर्ग (पद्य ४६-७५)।

इकाई - 3. विक्रमाङ्कदेव-चरितम् – प्रथम सर्ग (पद्य ०१-६३)।

इकाई - 4. विक्रमाङ्कदेव-चरितम् – प्रथम सर्ग (पद्य ६४-११८)।

इकाई - 5. सामान्य अध्ययन – निम्नलिखित संस्कृत महाकाव्यों का सामान्य अध्ययन – रामायण, महाभारत, बुद्धचरित, शिशुपालवध, विक्रमाङ्कदेव-चरित और राजतरङ्गिणी।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –
  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।
  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।

4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत इकाई 3 में से एक प्रश्न/व्याख्या (08 अङ्क) संस्कृत-माध्यम से करना होगा तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. शिशुपालवधम् (प्रथमः सर्गः) – पं तारिणीश झा, रामनारायणलाल बेणीमाधव, प्रयागराज।
2. शिशुपालवधम् – पं जगन्नाथ शास्त्री, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
3. शिशुपालवधम् – रामजीलाल शर्मा, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
4. शिशुपालवधम् (प्रथमः सर्गः) – डॉ आद्याप्रसादमिश्र एवं डॉ चण्डिकाप्रसादशुक्ल, सं. साहित्य भण्डार, प्रयागराज।
5. शिशुपालवधम् (प्रथमः सर्गः) – जनार्दनशास्त्री पाण्डेय, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
6. शिशुपालवधम् (प्रथमः सर्गः) – डॉ जनार्दन गंगाधर रटाटे, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
7. विक्रमाङ्कदेवचरितम् (प्रथमः सर्गः) – पं तारिणीश झा, रामनारायणलाल बेणीमाधव, प्रयागराज।
8. विक्रमाङ्कदेवचरितम् (प्रथमः सर्गः) – श्रीहरगोविन्द शास्त्री, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
9. विक्रमाङ्कदेवचरितम् (प्रथमः सर्गः) – डॉ गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, वाराणसी।
10. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा – पाण्डेय एवं व्यास, साहित्य निकेतन, कानपुर।
11. संस्कृत साहित्य का इतिहास – आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी।
12. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी।
13. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास – प्रो राधावल्लभ त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
14. संस्कृत साहित्य का इतिहास – प्रीतिप्रभा गोयल, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।
15. History Of Classical Sanskrit Literature – A.B. Keith, Motilal Banarsidas, Delhi. हिन्दी अनुवाद सहित – मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. शिशुपालवधम् (सर्ग १-२) – मल्लिनाथकृत सर्वङ्कषा-टीका सहित हिन्दी-व्याख्या (डॉ केशवराव मुसलगाँवकर – https://www.jainfoundation.in/JAINLIBRARY/books/Shishupal_vadha_Mahakavyam_009569_std.pdf
2. महाकवि माघ और उनका शिशुपालवध महाकाव्य – https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/53072/1/Block-3.pdf
3. विक्रमाङ्कदेवचरितम् – संस्कृत के ऐतिहासिक महाकाव्य – https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/53072/1/Block-3.pdf
4. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा (पाण्डेय एवं व्यास) – https://ia801805.us.archive.org/5/items/dli.ernet.525515/525515-Sanskrit%20Sahitya%20Ki%20Rooprekha.pdf

एम.ए. (संस्कृत) तृतीयार्द्धसत्र

वर्ग 'अ' साहित्य

SANS-DSE-Gr.A-T305(C)

महाकवि कालिदास

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- कविता-कामिनी का विलास कहे जाने वाले संस्कृत-साहित्य के देदीप्यमान नक्षत्र कविकुलगुरू कालिदासकृत कुमारसम्भवम् महाकाव्य का रसास्वादन करवाना।
- प्रसादगुणोपेत वैदर्भी रीति में कविता करने में कालिदास अद्वितीय हैं, जिससे पद्य-श्रवण के समनन्तरमेव सद्यः अर्थावबोध सरलता व सहजता से हो जाता है, अतः एवंविध माधुर्य एवं लालित्यपूर्ण कालिदास-कविता से छात्रों का साक्षात्कार करवाना उद्देश्य है।
- अपर्णा पार्वती की कठोर तपस्या के माध्यम से पाठकों तक यह सन्देश पहुँचाना कि लक्ष्यप्राप्त्यर्थ क्रियमाण श्रम की पराकाष्ठा क्या हो सकती है।
- 'यस्य कीर्तिः स जीवति' को चरितार्थ करने वाले महाकवि कालिदास के नाटक 'मालविकाग्निमित्रम्' के द्वारा दो हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन समय की समाज-व्यवस्था, संस्कृति, कला, शिक्षाव्यवस्था इत्यादि की झाँकी प्रस्तुत करना।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- छात्र यथार्थतः यह जान पाएँगे कि कालिदास के लिए 'उपमा कालिदासस्य' – यह सूक्ति क्यों प्रयुक्त होती है और कैसे कालिदासीय उपमाएँ इतरकविभिन्न और बेजोड़ हैं।
- शङ्कर को पतिरूप में पाने के लिए तपस्यारत पार्वती की कथा को पढ़कर छात्र जान सकेंगे कि अविश्रान्त श्रम ही सिद्धि का एकमात्र साधन है – 'तपोमूलं हि साधनम्।'
- शिव के लिए तपश्चर्यारत तथा 'तपः क्व वत्से क्व च तावकं वपुः' अथवा 'वरेषु यद् बालमृगाक्षि मृग्यते तदस्ति किं व्यस्तमपि त्रिलोचने' इत्यादि प्रकारक वचनों को सुनकर भी संकल्प से अविचलित पार्वती को देखकर छात्रों को यह शिक्षा मिलेगी कि महान् लोग कार्यसिद्धि से पूर्व अपने कर्त्तव्यपथ से क्षणभर के लिए भी विरत नहीं होते।
- कुमारसम्भव के पारायण से छात्र अनेक सात्त्विक मूल्यों की शिक्षा ग्रहण करेंगे।
- मालविकाग्निमित्रम् नाटक के रूप में निबद्ध निश्छल और निर्दोष प्रेमकथा छात्रों की मनोभूमि का परिष्कार करेगी।
- कालिदास व तत्कृतिविषयक सामान्य अध्ययन से कालिदास के विषय में छात्रों की ज्ञान की परिधि में विस्तार होगा।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. कुमारसम्भवम् – पञ्चमः सर्गः (पद्य ०१–४०)

इकाई - 2. कुमारसम्भवम् – पञ्चमः सर्गः (पद्य ४१–८६)

इकाई - 3. मालविकाग्निमित्रम् – अङ्क ०१–०२

इकाई - 4. मालविकाग्निमित्रम् – अङ्क ०३–०५

इकाई - 5. सामान्य प्रश्न – कालिदास का स्थितिकाल, जन्मस्थान, रचनाकर्म, कालिदास की नाट्यकला, पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रन्थों की वस्तु-नेता-रस के आधार पर समीक्षा।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।

3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत कुमारसम्भवम् (इकाई 1) से 08 अङ्क की व्याख्या संस्कृत-माध्यम से प्रष्टव्य है तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. कुमारसम्भवम् (पञ्चमः सर्गः) – महामहोपाध्याय पं नवलकिशोर काङ्कर, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
2. कुमारसम्भवम् (पञ्चमः सर्गः) – डॉ श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
3. कुमारसम्भवम् (पञ्चमः सर्गः) – डॉ विनोदबिहारीशर्मा एवं डॉ जगदीशप्रसाद शर्मा 'कौण्डिन्य', हंसा प्रकाशन, जयपुर।
4. कुमारसम्भवम् (पञ्चमः सर्गः) – डॉ नेमिचन्द्र शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
5. कुमारसम्भवम् (पञ्चमः सर्गः) – डॉ प्रीतिप्रभा गोयल एवं डॉ कीर्ति भूषण, अरिहन्त प्रकाशन, जोधपुर।
6. मालविकाग्निमित्रम् – डॉ रमाकान्त पाण्डेय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
7. मालविकाग्निमित्रम् – मोहनदेव पन्त, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
8. मालविकाग्निमित्रम् – हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ ऑफिस, वाराणसी।
9. कालिदास-ग्रन्थावली – आ. पं. सीताराम चतुर्वेदी, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
10. कालिदास-ग्रन्थावली – ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. कुमारसम्भवम् (पञ्चमः सर्गः) पृष्ठ क्र. १ तः ६५ पर्यन्तं पठनीयम् – http://assets.vmou.ac.in/SA03.pdf
2. कुमारसम्भवम् (पञ्चमः सर्गः) – https://saraswatam.com/stgapi/public/uploads/category/pdf/1614872059859KUMARSAMBHAV%205%20SARG%207.02.pdf
3. मालविकाग्निमित्रम् – https://ia803402.us.archive.org/23/items/in.ernet.dli.2015.407470/2015.407470.Malvikagnimitra.pdf
4. कालिदास-ग्रन्थावली – https://ia801508.us.archive.org/8/items/in.ernet.dli.2015.427016/2015.427016.KalidasGranthvaliAC4658.pdf

एम.ए. (संस्कृत) तृतीयार्द्धसत्र

वर्ग 'ब' व्याकरणशास्त्र

SANS-DSE-Gr.B-T304

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- व्याकरणमहाभाष्योक्त व्याकरणाध्ययन के प्रयोजन यहाँ भी उद्देश्यत्वेन अभिप्रेत हैं।
- जो भी भाषा व्यवहार-भाषा नहीं है, उस भाषा में प्रवेश और विशेषतः गति के लिए व्याकरण-बोध आवश्यक है।
- लोक के समान ही व्याकरणशास्त्र में भी संज्ञाओं को जाने विना व्यवहार अशक्य है, अतः व्याकरणाध्ययन के समय प्रथमतः संज्ञाप्रकरण तथा परिभाषा-प्रकरण का बोध आवश्यक है।
- संस्कृत-भाषा के प्रयोग में कौशल्य प्राप्त्यर्थ सुँबन्त व तिङन्त प्रकरण का ज्ञान अनिवार्य है। इस हेतु सुँबन्त प्रकरण किंवा षड्लिङ्गप्रकरण (अजन्त पुँल्लिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग प्रकरण तथा हलन्त पुँल्लिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग प्रकरण) का आद्यन्त अध्ययनाध्यापन उद्दिष्ट है। इसी प्रकार क्रियापदों के ज्ञान के लिए तिङन्त प्रकरण शिक्ष्य है।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- छात्र संज्ञा और परिभाषा-प्रकरण को हृदयङ्गम कर सकेंगे, जो कि पाणिनीय-व्याकरण के अध्ययन के लिए प्राथम्येन अपेक्षित है।
- जो पद नहीं हैं, ऐसे शब्दों का संस्कृत भाषा के वाक्यों में प्रयोग नहीं हो सकता (अपदं न प्रयुञ्जीत)। सुँबन्त या तिङन्त होने से ही शब्द पद बन पाते हैं। सुँबन्त-प्रकरण के अधिगम से छात्र सुँबन्त-पद-निर्माण-पद्धति में अभ्यस्त होंगे और भाषिक व्यवहार में पदों (सुँबन्तों) का उचित प्रयोग कर सकेंगे।
- सुँबन्त-प्रकरण के साथ ही तिङन्त-प्रकरण के भी अधिगम से छात्र तिङन्त-पद-निर्माण-पद्धति में अभ्यस्त होंगे और भाषिक व्यवहार में पदों (तिङन्तों) का उचित प्रयोग कर सकेंगे।
- अजन्त पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग प्रकरण के अध्ययन से विद्यार्थियों में सुँबन्त प्रकरण के शब्दरूपों की सूत्र-दर-सूत्र समझ विकसित होगी और वे षड्लिङ्गप्रकरण के शब्दरूपों की ससूत्र सिद्धि कर सकेंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई -1. सिद्धान्त कौमुदी – संज्ञा, परिभाषा।

इकाई - 2. सिद्धान्त कौमुदी – सुबन्त प्रकरण (अजन्त पुँल्लिङ्ग, अजन्त स्त्रीलिङ्ग, अजन्त नपुंसकलिङ्ग)।

इकाई - 3. सिद्धान्त कौमुदी – भ्वादिगण (आरम्भ से 'णलुत्तमो वा' सूत्रपर्यन्त)।

इकाई - 4. सिद्धान्त कौमुदी – भ्वादिगण ('अतो हलादेर्लघोः' से भ्वादिप्रकरणपर्यन्त)।

इकाई - 5. सिद्धान्त कौमुदी – अदादिगण व जुहोत्यादिगण।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

  – खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

  – खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

  – खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।

3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत इकाई 2 से 08 अङ्क की सूत्र-व्याख्या/सिद्धियाँ संस्कृत-माध्यम से प्रष्टव्य हैं तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (बालमनोरमा-हिन्दीव्याख्या सहित) – गोपालदत्त पाण्डेय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
2. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (बालमनोरमा-तत्त्वबोधिनी सहितम्) गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी एवं परमेश्वरानन्द शर्मा, दिल्ली।
3. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी – जगदीशलाल शास्त्री एवं मधुबाला शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
4. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (मूलमात्रम्) – ॐ नमः शिवाय प्रकाशन, देवघाट धाम, तनहूँ।
5. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी ('बालमनोरमा' व्याख्यासहिता, प्रथमो भागः) – पण्डित श्रीगोपाल शास्त्री नेने, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, बनारस।
6. बालमनोरमा भ्रान्तिदिग्दर्शन – भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (मूलमात्रम्) – https://ia601705.us.archive.org/18/items/SiddhanaKaumudi_by_CK/%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%A7%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A4%95%E0%A5%8C%E0%A4%AE%E0%A5%81%E0%A4%A6%E0%A5%80%20%E0%A4%B8%E0%A4%AC%E0%A5%88_FINAL.pdf
2. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी ('बालमनोरमा' व्याख्यासहिता, प्रथमो भागः) – पण्डित श्रीगोपाल शास्त्री नेने, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, बनारस। https://ia801506.us.archive.org/23/items/in.ernet.dli.2015.486165/2015.486165.VAKARAYAN-SIDHANTH.pdf

एम.ए. (संस्कृत) तृतीयार्द्धसत्र

वर्ग 'ब' व्याकरणशास्त्र

SANS-DSE-Gr.B-T305

शिक्षा तथा प्रक्रिया

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- संस्कृत प्रधानतः एक ध्वन्यात्मक भाषा (Phonetic Language) है, अतः इसमें उच्चारण-शुद्धि का विशेष महत्त्व है; इस दृष्टि से वर्णोच्चारणविधि के परिज्ञान के लिए छात्रों को शिक्षा-ग्रन्थों का अध्ययन करवाने के उद्देश्य से 'वर्णोच्चारणशिक्षा' तथा 'पाणिनीय शिक्षा' नामक पुस्तकें पाठ्यक्रम में निर्धारित की गई हैं।
- संस्कृत भाषा के वाक्यों में सन्ध्यादियुक्त पदों का बाहुल्य रहता है, अतः पदच्छेदादि किये विना अर्थबोध नहीं हो सकता और शुद्ध उच्चारण के विना पदच्छेदादि सुकर नहीं; इसलिए वाक्यार्थबोध के लिए भी शिक्षा-ग्रन्थों का अध्ययन करवाना आवश्यक है।
- प्रक्रिया पद्धति से व्याकरणाध्ययन के इस काल में कौमुदी का अध्ययन किये विना व्याकरणमहाभाष्यादि में क्रियमाण श्रम भी व्यर्थ जाता है (कौमुदी यदि कण्ठस्था वृथा भाष्ये परिश्रमः, कौमुदी यद्यकण्ठस्था वृथा भाष्ये परिश्रमः), अतः कौमुदी-ज्ञान के उद्देश्य से उसका समास-प्रकरण यहाँ रखा गया है।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- शिक्षाग्रन्थद्वय के अधिगम तथा अभ्यास से छात्रों का उच्चारण शुद्ध होगा।
- उच्चारण-शुद्धि से भाषाधिगम सुकर होगा और उससे पुनः विषयबोध में लाभ होगा।
- वर्णोच्चारणदोषादि के ज्ञान और उनके निरास से भाषा परिष्कृत होगी और उससे छात्रों के व्यक्तित्व का भी परिष्कार होगा।
- अपनी बात को संक्षेप में और साररूप में प्रस्तुत कर देना ही वाक्कला है (मितञ्च सारञ्च वचो हि वाग्मिता)। समास-प्रकरण के आद्योपान्त अध्ययन से छात्र भाषा-प्रयोग में संक्षिप्तीकरण की कला में नैपुण्य प्राप्त कर सकेंगे।
- समास में कौशल अधिगत होने से छात्र समासबहुला गौडी इत्यादि काव्यशैलियों में निबद्ध बाणभट्टादि के काव्यों को सरलता से समझ पाने में सक्षम होंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. वेदाङ्ग शिक्षा

(अ) वर्णोच्चारणशिक्षा (सं. स्वामी दयानन्द)।

(आ) पाणिनीय शिक्षा (महर्षि पाणिनिकृत)।

इकाई - 2. सिद्धान्त कौमुदी – अव्ययीभाव समास प्रकरण।

इकाई - 3. सिद्धान्त कौमुदी – तत्पुरुष समास प्रकरण।

इकाई - 4. सिद्धान्त कौमुदी – बहुव्रीहि समासप्रकरण से एकशेष प्रकरण तक।

इकाई - 5. सिद्धान्त कौमुदी – सर्वसमासशेष से अलुक्समासप्रकरण तक।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।

2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत इकाई 2 से 08 अङ्क की सूत्र-व्याख्या/सिद्धियाँ संस्कृत-माध्यम से प्रष्टव्य हैं तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. वर्णोच्चारणशिक्षा - सम्पादक एवं व्याख्याकार, स्वामी दयानन्द सरस्वती, रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़, सोनीपत, हरियाणा।
2. वर्णोच्चारणशिक्षा - सम्पादक, स्वामी दयानन्द सरस्वती, अजमेर यन्त्रालय।
3. पाणिनीय शिक्षा - शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, चौखम्बा, वाराणसी।
4. पाणिनीय शिक्षा - डॉ अर्कनाथ चौधरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
5. पाणिनीय शिक्षा - प्रो. सत्यप्रकाश दुबे, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।
6. वर्णोच्चारण-शिक्षाशास्त्र- प्रो. विक्रमजीत, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
7. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (बालमनोरमा-सहित) – गोपालदत्त पाण्डेय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
8. वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी - बालमनोरमा लक्ष्मीटीका, सभापति शर्मा।
9. वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी बालमनोरमा-हिन्दी व्याख्या सहित - गोपालदत्त पाण्डेय।
10. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (मूलमात्रम्) – ॐ नमः शिवाय प्रकाशन, देवघाटधाम, तनहूँ।
11. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी ('बालमनोरमा' व्याख्यासहिता, प्रथमो भागः) – पण्डित श्रीगोपाल शास्त्री नेने, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, बनारस।
12. बालमनोरमा भ्रान्तिदिग्दर्शन – भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (बालमनोरमा-तत्त्वबोधिनीसहिता, द्वितीयो भागः) – https://www.jainfoundation.in/JAINLIBRARY/books/siddhant_kaumudi_part_02_006149_std.pdf
2. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (मूलमात्रम्) – https://ia601705.us.archive.org/18/items/SiddhanaKaumudi_by_CK/%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%A7%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A4%95%E0%A5%8C%E0%A4%AE%E0%A5%81%E0%A4%A6%E0%A5%80%20%E0%A4%B8%E0%A4%AC%E0%A5%88_FINAL.pdf

एम.ए. (संस्कृत) चतुर्थार्द्धसत्र

SANS-DCC-T402

संस्कृत व्याकरण तथा व्याकरण-दर्शन

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- जो भी भाषा व्यवहार-भाषा नहीं है, उस भाषा में प्रवेश और विशेषतः गति के लिए व्याकरण-बोध आवश्यक है। विभिन्न व्याकरणिक कोटियों में प्रत्ययों की महत्ता सुस्पष्ट है। अतः यहाँ तद्धितप्रत्यय-प्रकरण शिक्ष्य है।
- लघुसिद्धान्तकौमुदी का स्त्रीप्रत्यय-प्रकरण भी संक्षिप्त किन्तु भाषा-व्यवहार के लिए उपयोगी प्रकरण है, अतः उसका ज्ञान भी अपेक्षित है।
- संस्कृत-व्याकरणशास्त्र की परम्परा के त्रिमुनियों में अन्यतम तथा 'उत्तरोत्तरं मुनीनां प्रामाण्यम्' के अनुसार सर्वाधिक प्रामाणिक हैं महर्षि पतञ्जलि। तदीय पातञ्जल महाभाष्य के अध्ययन के विना व्याकरणाध्ययन अपूर्ण रहता है, अतः छात्रों को महाभाष्य से परिचित करवाना लक्षित है।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- छात्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के तद्धितप्रत्ययों के अर्थज्ञान और प्रयोग में सिद्ध होंगे।
- छात्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के स्त्रीप्रत्ययों के अर्थज्ञान और प्रयोग में सिद्ध होंगे।
- छात्र यह जान सकेंगे कि व्याकरणशास्त्र की परम्परा में पातञ्जल महाभाष्य का क्या स्थान है और महाभाष्य किस प्रकार व्याकरणिक चिन्तन की दृष्टि से अगाध गम्भीर है तथा रचना-सौष्ठव की दृष्टि से कितना प्राञ्जल है, जैसा कि भर्तृहरि ने अपने वाक्यपदीय में इस भाष्य के विषय में कहा भी है – 'अलब्धगाधे गाम्भीर्यादुत्तान इव सौष्ठवात्।'
- महाभाष्य के पस्पशाह्निक के अध्ययन के पश्चात् व्याकरणाध्ययन के प्रयोजन, व्याकरण का अर्थ, शब्द का नित्यानित्यत्व, शब्दार्थसम्बन्ध और उसमें शास्त्र व लोक की भूमिका, शब्द का महान् प्रयोग-क्षेत्र, शब्दज्ञान और शब्दप्रयोग में धर्माधर्मनिर्णय, वर्णसमवायोपदेश के प्रयोजन इत्यादि व्याकरण-विषयक अनेक प्रकार के रहस्यों का उद्घाटन होगा।
- छात्र पतञ्जलि की भाषा और विषय-प्रतिपादन की रुचिकर शैली से भी परिचित होंगे कि किस प्रकार महाभाष्य का गद्य साहित्यिक दृष्टि से अत्यन्त अकृत्रिम, मुहावरेदार, धारावाहिक और सरस है।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. लघुसिद्धान्तकौमुदी – तद्धित-प्रकरण (अपत्याधिकार व शैषिक)।

इकाई - 2. लघुसिद्धान्तकौमुदी – तद्धित-प्रकरण (ठगधिकार, भवनाद्यर्थक व मत्वर्थीय)।

इकाई - 3. लघुसिद्धान्तकौमुदी – स्त्रीप्रत्यय-प्रकरण।

इकाई - 4. महाभाष्य (पस्पशाह्निक) – 'अथ शब्दानुशासनम्' से लेकर शब्द के नित्यानित्यत्वप्रसङ्ग में 'उभयथापि लक्षणं प्रवर्त्यमिति' तक का अंश।

इकाई - 5. महाभाष्य (पस्पशाह्निक) – 'सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे' से लेकर प्रथमाह्निक-समाप्तिपर्यन्त।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।

2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत (इकाई 3 से) सूत्र-व्याख्या अथवा शब्द-सिद्धियाँ (08 अङ्क) संस्कृत-माध्यम से प्रष्टव्य हैं तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी – (भैमी व्याख्या, भाग-५) – भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली।
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी – महेश सिंह कुशवाहा, चौखम्बा प्रकाशन।
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी – अर्कनाथ चौधरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी – डॉ सुरेन्द्र देव स्नातक, चौखम्बा पब्लिशर्स।
5. लघुसिद्धान्तकौमुदी – धरानन्द शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
6. लघुसिद्धान्तकौमुदी – सत्यपाल सिंह, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली।
7. लघुसिद्धान्तकौमुदी – गीताप्रेस, गोरखपुर।
8. एम.ए. संस्कृत व्याकरण – डॉ श्रीनिवास शास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ।
9. व्याकरण-महाभाष्यम् (प्रथम आह्निकत्रय) – हिन्दी अनुवाद तथा विवरण सहित, चारुदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
10. व्याकरण-महाभाष्यम् (पस्पशाह्निकम्) - कैयटकृत 'प्रदीप' सहित हिन्दी व्याख्या : आ. मधुसूदनप्रसादमिश्र, प्रस्तावना : पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
11. महाभाष्यम् - प्रदीपोद्योत पर छाया टीका – पायगुण्डे।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी – (भैमी व्याख्या, भाग-५) – https://avg-sanskrit.org/avgclasses/LSK/000-Books/LSKBmV-5-Taddhita.pdf
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी से स्त्री-प्रत्यय – https://www.nios.ac.in/media/documents/bgp/Sr_Secondary_Hindi/Sankrit_Vyakaran_346/Book_01/346_Book1_H_L9.pdf

एम.ए. (संस्कृत) चतुर्थार्द्धसत्र

SANS-DCC-T403(A)

शास्त्रीय साहित्य तथा गद्य काव्य

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- पञ्चदशाधिकरणिक कौटिलीय अर्थशास्त्र विश्वप्रसिद्ध रचना है। तत्कालीन राजव्यवस्था, सुशासन, नागरिकों के अधिकार एवं कर्त्तव्य तथा नीतियों आदि की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपयोगिता पर विचार-विमर्श हेतु यह ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है। इस दृष्टि से इसका प्रथम अधिकरण पाठ्यक्रम में समाविष्ट किया गया है।
- कृत्याकृत्य, मन्त्राधिकार, राजदूतप्रेषण, राजा के कार्यव्यापार, राजभवन-निर्माण तथा आत्मरक्षाप्रबन्ध को जानने के उद्देश्य से भी यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है।
- हर्षचरित आख्यायिका श्रेणी का आदर्श गद्यकाव्य है। इसके पञ्चमोच्छ्वास में करुणरस का समुचित परिपाक हुआ है। इसके आस्वादन हेतु यह पठनीय है।
- कादम्बरी के निर्धारित पाठ्यांश में महाश्वेता का सुन्दर वर्णन है। महाश्वेता और पुण्डरीक का परस्पर आकर्षण वर्णित है। 'कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते' – इस उक्ति से यह स्पष्ट है कि कादम्बरी की कथा अत्यन्त सरस और मनोहर है, अतः उसका साक्षात्कार छात्रों को करवाना ही उद्दिष्ट है।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- विद्यार्थी अर्थशास्त्र जैसी प्राचीन कृति के गौरव से परिचित होंगे।
- संस्कृत में निबद्ध तथा दो हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन (मौर्यकालीन) राजनीतिशास्त्रविषयक एक ज्ञान-गम्भीर रचना वर्तमान समय में भी कितनी प्रासंगिक है, छात्र यह जानेंगे।
- अर्थशास्त्र के अध्ययन के माध्यम से छात्र तत्कालीन समाज-व्यवस्था, राज-व्यवस्था, कर-व्यवस्था, गूढचर-व्यवस्था इत्यादि विषयों का भी ज्ञानार्जन कर सकेंगे।
- हर्षचरित के पञ्चमोच्छ्वास के अध्ययन से अध्येता करुण रस के आस्वादन के साथ ही ऐतिहासिक तथ्यों से अवगत हो सकेंगे।
- कादम्बरी के निर्धारित पाठ्यांश में अवगाहन करके छात्र प्राचीन गद्यसाहित्य का रसास्वादन कर सकेंगे।
- विद्यार्थी महाश्वेतावृत्तान्त का पूर्णता से पारायण कर बाणभट्ट की विशिष्ट भाषा तथा उनके द्वारा प्रयुक्त गौडी व पाञ्चाली रीति से परिचित हो सकेंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. कौटिल्य का अर्थशास्त्र (प्रथम अधिकरण) अध्याय ०१–१० तक।

इकाई - 2. कौटिल्य का अर्थशास्त्र (प्रथम अधिकरण) अध्याय ११-२० तक।

इकाई - 3. हर्षचरितम् (पञ्चमोच्छ्वास) 'अन्यस्मिन्नहनि' से लेकर 'कथंकथमप्यतिष्ठदिति' पर्यन्त अंश।

इकाई - 4. कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त) 'तस्य च दक्षिणां मूर्तिमाश्रित्य' से लेकर 'निष्पन्दमतिष्ठम्' तक।

इकाई - 5. कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त) 'अथ ताम्बूलकरङ्कवाहिनी' से लेकर 'उन्मुक्तकण्ठमतिचिरमुच्चैः प्रारोदीत्' तक का ग्रन्थ।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

  – खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

  – खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

  – खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।

2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत इकाई 1 से 08 अङ्क के प्रश्न संस्कृत-माध्यम से प्रष्टव्य हैं तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. कौटिल्य अर्थशास्त्र (संस्कृत टीका सहित) – सं. टी. गणपतिशास्त्री, त्रिवेन्द्रम्।
2. कौटिल्य अर्थशास्त्र (हिन्दी टीका सहित) – वाचस्पति गैरोला, वाराणसी।
3. कौटिलीयम् अर्थशास्त्रम् (संस्कृत-हिन्दी-व्याख्योपेतम्) – डॉ रूपनारायण त्रिपाठी, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
4. कौटिलीय अर्थशास्त्र – उदयवीर शास्त्री, मेहरचन्द लक्ष्मणदास, दिल्ली।
5. हर्षचरितम् (सम्पूर्ण) – भावप्रकाशिका, अन्वय-भावार्थ-हिन्दीव्याख्या, गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
6. Harśacarita of Bānbhatta – P. V. Kāne, Motilal Banarasidas, Varanasi.
7. हर्षचरितम् (सम्पूर्ण) – जगन्नाथ पाठक, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
8. कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त) – 'शशिप्रभा' संस्कृत-हिन्दीव्याख्यायुत, डॉ जमुना पाठक, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
9. कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त) – डॉ देवर्षि सनाढ्य एवं श्री विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, आलोचक- डॉ विद्यानिवास मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
10. कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त) – 'प्रकाश' हिन्दीव्याख्योपेत, डॉ प्रद्युम्न पाण्डेय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. कौटिलीय अर्थशास्त्र (हिन्दी अनुवाद सहित) – उदयवीर शास्त्री – https://www.ebharatisampat.in/pdfs/ebharati-pdf-1645698367Arthasastra-Hindi-UdayvirShastri-LakshmanaDasa-Vol-1-1925_compressed.pdf
2. हर्षचरितम् (सम्पूर्ण) – जगन्नाथ पाठक, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – https://ia904504.us.archive.org/9/items/harshacharitam-in-hindi/Harshacharitam.pdf

   (इसमें केवल 'महाराज-मरण-वर्णन' नामक पञ्चमोच्छ्वास (पृ.२५०-२९८) से निर्धारित अंश पठनीय है।)

एम.ए. (संस्कृत) चतुर्थार्द्धसत्र

SANS-DCC-T403(B)

आधुनिक साहित्य

पाठ्यक्रमोद्देश्य :
(Course Objectives)

- नाट्यवस्तु की अविच्छिन्नता हेतु 'विवेकानन्दविजयम्' के अवशिष्ट अङ्क ८-१० का पारायण करवाना।
- पुण्यश्लोक, पौरस्त्यपाश्चात्यविद्याओं में नदीष्ण, निर्मानमोह, जितसङ्गदोष, हिन्दुधर्मधुरन्धर, भरतभू-वैजयन्ती को भुवन में उत्तोलित करने वाले सन्न्यासी, स्वामी विवेकानन्द के अद्भुत चरित के कुछ और पक्षों से छात्रों का साक्षात्कार करवाना भी उद्दिष्ट है।
- श्रीपादशिला पर तीन दिन की समाधि से उत्थित और भारत के उत्थान के लिए कृतसंकल्प स्वामी विवेकानन्द का सप्तसागरोल्लङ्घन करके ज्ञानदीप के प्रज्वालन के लिए अमेरिका प्रवास करके, वहाँ शिकागो में विश्वधर्मसम्मेलन में धर्मविजय करके पुनः भारतभूमि पर प्रत्यावर्तन करने तक की सत्य घटनाओं के नाट्यरूपान्तर से छात्रों का परिचय करवाना उद्दिष्ट है।
- 'कुसुमलक्ष्मीः' नामक उपन्यास के अवशिष्टांश के साथ ही पं. अम्बिकादत्तव्यास-विरचित संस्कृत साहित्य के प्रथम आधुनिक उपन्यास 'शिवराजविजयम्' के प्रारम्भिक अंश से छात्रों का परिचय करवाना तथा आधुनिक संस्कृत-नीतिमुक्तककाव्यपरम्परा की एक झलक दिखलाना।
- सामान्य अध्ययन के अन्तर्गत कतिपय आधुनिक संस्कृत कवियों का परिचय करवाना।

अधिगम-फलितांश :
(Learning Outcomes)

- छात्र प्रज्ञाभारती प्रो. श्रीधरभास्कर वर्णेकर के इस महानाटक के अध्ययन से ज्ञातास्वाद होकर उनके 'शिवराज्योदय' जैसे अन्य प्रसिद्ध काव्यों की ओर प्रवृत्त होंगे तथा उनके समग्र कृतित्व से परिचित होंगे।
- छात्र स्वामी जी के विलक्षण व्यक्तित्व से परिचय पाकर तत्प्रेरणा से स्व-व्यक्तित्व-विकास-परिष्कार कर सकेंगे।
- छात्र स्वामी विवेकानन्द द्वारा शिकागो विश्वधर्मसंसद् में दिये गये इतिहास-प्रसिद्ध भाषण को पढ़कर वेदों की अनादिता, आत्मा की अमरता, पुनर्जन्म की सत्ता, मुक्ति के लिए ज्ञान की आवश्यकता, मानवमात्र के प्रति समदर्शिता तथा भारतीय धर्म एवं संस्कृति की महत्ता का बोध प्राप्त कर सकेंगे।
- छात्र कुसुमलक्ष्मीः नामक उपन्यास के शेषांश के रसास्वादन के साथ-साथ कवि आनन्दवर्धन रत्नपारखी की उपन्यासविधा-नैपुणी से भी परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- छात्र आधुनिक कवि पं. विद्याधरशास्त्री के नीतिमुक्तक काव्य 'विद्याधरनीतिरत्नम्' के द्वारा बीकानेर क्षेत्र के संस्कृत-काव्यसर्जन से अवगत होंगे।
- छात्र आधुनिक काल के कतिपय संस्कृत रचनाकारों और उनके रचनाकर्म का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. विवेकानन्दविजयम् (श्रीधरभास्कर वर्णेकर) – अङ्क ८-१० तक।

इकाई - 2. शिवराजविजयम् (अम्बिकादत्त व्यास) – प्रथम विराम का प्रथम निःश्वास।

इकाई - 3. कुसुमलक्ष्मीः (आनन्दवर्धन रत्नपारखी) – द्वितीयः तृतीयश्च समुच्छ्वासः।

इकाई - 4. विद्याधरनीतिरत्नम् (पं. विद्याधर शास्त्री)।

इकाई - 5. सामान्य अध्ययन – निम्नलिखित आधुनिक संस्कृत कवियों का अध्ययन – पं. विद्याधर शास्त्री, प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, श्रीकलानाथ शास्त्री, पं. श्रीराम दवे, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, श्री गिरिधर शर्मा नवरत्न, डॉ. प्रवीण पण्ड्या।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत इकाई 4 से संस्कृत-व्याख्या (08 अङ्क) प्रष्टव्य है तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. विवेकानन्दविजयम् (मूलमात्रम्) – विवेकानन्द शिला-स्मारक प्रकाशन, चेन्नई।
2. विवेकानन्दविजयम् (हिन्दी-व्याख्या) – डॉ विक्रमजीत व डॉ भवानीशंकरशर्मा 'महाजनीय', हंसा प्रकाशन, जयपुर।
3. प्रज्ञाभारती श्रीधरभास्कर वर्णेकरः – लीना रस्तोगी, साहित्य अकादेमी, दिल्ली।
4. कुसुमलक्ष्मीः (हिन्द्यनुवादसहित) – डॉ कृष्णकुमार, साहित्य भण्डार, मेरठ।
5. शिवराजविजयम् (अम्बिकादत्त व्यास) – प्रथम विराम का प्रथम निःश्वास – डॉ रमाशङ्कर मिश्र, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
6. शिवराजविजयम् (अम्बिकादत्त व्यास) – प्रथम विराम का प्रथम निःश्वास - सर्वज्ञ भूषण, संस्कृत गङ्गा।
7. विद्याधरनीतिरत्नम् – सम्पादक व हिन्दी व्याख्याकार –डॉ विक्रम जीत, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
8. आधुनिक संस्कृत साहित्य – महामहोपाध्याय आचार्य दयानन्द भार्गव, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
9. राजस्थानस्य अभिनव-संस्कृत-साहित्यम् – राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर।
10. राजस्थान के संस्कृत कवि – राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर।
11. राजस्थान-गौरवम् – डॉ गंगाधरभट्ट, राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर।
12. नवोन्मेषः – सं. डॉ रामचन्द्र द्विवेदी, राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर।
13. साहित्यस्रष्टा पं विद्याधर शास्त्री – डॉ परमानन्द सारस्वत, बीकानेर।
14. सागरिका (संस्कृत-पत्रिका) – डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश।
15. सम्भाषण-सन्देशः (संस्कृत मासिक पत्रिका) – अक्षरम्, गिरिनगरम्, बेंगलूरु।
16. भारती (मासिक संस्कृत-पत्रिका) – भारती भवन कार्यालय, न्यू कॉलोनी, जयपुर।
17. स्वरमङ्गला (त्रैमासिक संस्कृत-पत्रिका) – राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर।
18. सारस्वत सुषमा (संस्कृत-पत्रिका) – सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।
19. संस्कृत प्रतिभा (संस्कृत-पत्रिका) – साहित्य अकादमी, दिल्ली।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. शिवराजविजयम् (अम्बिकादत्त व्यास) – https://ia601409.us.archive.org/29/items/in.ernet.dli.2015.403293/2015.403293.Shivraj-Vijay.pdf
2. श्रीधरभास्कर वर्णेकर : एक परिचय – https://www-warnekar-net.translate.goog/pradnyabharati?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc
3. विद्याधरनीतिरत्नम (मूलमात्रम्) – https://ia801708.us.archive.org/29/items/LWid_vidyadara-niti-ratnam-by-vidyadhar-shastri-1958-bikaner-shri-harnam-sanskrit-vidyalay/Vidyadara%20Niti%20Ratnam%20By%20Vidyadhar%20Shastri%20%201958%20Bikaner%20-%20Shri%20Harnam%20Sanskrit%20Vidyalay.pdf
4. कुसुमलक्ष्मीः (सम्पूर्णं, मूलमात्रम्) – https://ia804708.us.archive.org/17/items/in.ernet.dli.2015.406195/2015.406195.Kusumlaxmi.pdf

एम.ए. (संस्कृत) चतुर्थार्द्धसत्र

SANS-DCC-T403(C)

आयुर्वेद, ज्योतिष तथा नित्यकर्मविधि

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- भारतीय ज्ञान-परम्परा सर्वाधिक प्राचीन और समृद्ध है, जिसमें चिकित्सा-विज्ञान की परम्परा भी आती है। इस प्राचीन विज्ञान के मूलभूत सिद्धान्तों का, विशिष्ट उपचार शैली का परिचय कराना इस पाठ्यक्रम का उद्दिष्ट है।
- ऋतुचर्या, दिनचर्या आदि का स्वास्थ्य से प्रत्यक्ष सम्बन्ध सिद्ध है। ऋतु के अनुकूल सेवनीय पदार्थों का, पथ्यापथ्य का ज्ञान प्रदान कराना आवश्यक है, क्योंकि जो 'युक्ताहारविहार' है, वही स्वस्थ रह सकता है।
- सूर्य व चन्द्र का परिज्ञान, सूर्यग्रहण-चन्द्रग्रहण का यथार्थ ज्ञान कराना। ग्रहों की स्थिति, गति, प्रकार, प्रभाव आदि का ज्ञान करवाना।
- भारतीय संस्कृति में यज्ञों का महत्त्व असन्दिग्ध है – 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म।' किञ्च, सम्पूर्ण यज्ञीय विधि-विधान संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध है, अतः संस्कृत के विद्यार्थियों को यज्ञों का ज्ञान कराना अत्यावश्यक है।
- यज्ञ में वेद-मन्त्रों का उच्चारण होता है। मन्त्रोच्चारण में स्वर-वर्णादि की शुद्धि परमावश्यक है – 'मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह।' अतः मन्त्रादि के यथाविधि उच्चारण के बोध और तन्माध्यमेन वेद की रक्षा के लिए भी यज्ञ-विधान का शिक्षण अपेक्षित है।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- छात्र अनेक औषधीय पादपों का संरक्षण व दैनिक जीवन में अधिकाधिक उपयोग करना सीखेंगे।
- ग्रह, नक्षत्र आदि की गति के नियमों को जानेंगे तथा उनसे पृथ्वी पर होने वाले प्रभाव के परिणाम जानने में समर्थ होंगे।
- अग्निहोत्र के विषय में कहा गया है कि अग्निहोत्र स्वर्ग की नौका है – 'नौर्ह वा एषा स्वर्ग्या यदग्निहोत्रम्।' छात्र अग्निहोत्र से होने वाले लाभों से परिचित होंगे। छात्रों में पितृयज्ञ से वृद्धों के प्रति सेवा भाव का, बलिवैश्वदेव-यज्ञ से परोपकार-जीवदया-प्रकृतिप्रेम के भाव का, अतिथि-यज्ञ से गुरुजनादि श्रेष्ठों के प्रति श्रद्धादि के उदात्त भाव का विकास होगा।
- यज्ञ के वैज्ञानिक महत्त्व को समझने से पर्यावरण-संरक्षण के प्रति जागरूकता बढेगी व उसमें प्रवृत्ति होगी – 'यज्ञो वै भुवनस्य नाभिः।'
- स्तोत्रों की महिमा को समझने का सामर्थ्य उत्पन्न होगा, जिससे मानसिक व आध्यात्मिक शान्ति की अनुभूति होगी।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. अष्टाङ्गहृदयम् वाग्भट (सूत्रस्थान, अध्याय – ४)

इकाई - 2. अष्टाङ्गहृदयम् वाग्भट (सूत्रस्थान, अध्याय – ६)

इकाई - 3. बृहत्संहिता- वराहमिहिर (अध्याय ४-५)

इकाई - 4. नित्य कर्मविधि – दर्शेष्टि, पौर्णमासेष्टि, प्रातः ईशवन्दना, राष्ट्रवन्दना (राष्ट्रीय प्रार्थना) – आ ब्रह्मन्..., नवसंवत्सर यज्ञमन्त्र, यज्ञोपवीत मन्त्र, भोजन मन्त्र, शान्तिपाठ, मन्त्रपूर्ति, मन्त्रों का महत्त्व इत्यादि से सम्बन्धित प्रश्न।

इकाई - 5. स्तोत्रसाहित्य - अधोलिखित संस्कृत-स्तोत्रों का अर्थावबोधपूर्वक सस्वर गायनाभ्यास अपेक्षित है –

(१) शिवमहिम्नःस्तोत्रम् – श्रीपुष्पदन्तप्रणीतम्।

(२) शिवमानसपूजा – श्रीमच्छङ्करभगवत्पादाचार्यविरचितम्।

(३) गौरीदशकम् – श्रीमच्छङ्करभगवत्पादाचार्यविरचितम्।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –
  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।
  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत इकाई 5 से व्याख्या (08 अङ्क) संस्कृत-माध्यम से करणीय है तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. अष्टाङ्गहृदयम् - कविराज अत्रिदेव गुप्त, सं. वैद्य यदुनन्दन उपाध्याय, चौखम्भा संस्कृत सीरीज़, वाराणसी।
2. अष्टाङ्गहृदयम् - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी।
3. आयुर्वेद का वृहत् इतिहास अत्रिदेव विद्यालंकार, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
4. वृहत्संहिता – पं अच्युतानन्द झा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
5. नित्यकर्म-पूजाप्रकाश – पं लालबिहारी मिश्र, गीताप्रेस, गोरखपुर।
6. आदर्श नित्यकर्मविधि – स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती।
7. संस्कारविधि – स्वामी दयानन्द सरस्वती।
8. दुर्गासप्तशती – गीताप्रेस गोरखपुर।
9. आर्यपर्वपद्धति – विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई दिल्ली।
10. स्तोत्ररत्नावली – गीताप्रेस गोरखपुर।
11. शिवस्तोत्ररत्नाकर – गीताप्रेस, गोरखपुर।
12. देवीस्तोत्ररत्नाकर – गीताप्रेस, गोरखपुर।
13. ब्रह्मनित्यकर्म समुच्चय – शास्त्री दुर्गाशङ्कर ठाकर, मुम्बई।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. अष्टाङ्गहृदयम् (वाग्भट) – डॉ ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली – https://ia601200.us.archive.org/19/items/AstangaHrdayam_Hindi/Astanga-hrdayam_Hindi.pdf
2. वृहत्संहिता (वराहमिहिर) –https://ia803209.us.archive.org/32/items/brihat-samhita-/%E0%A4%AC%E0%A5%83%E0%A4%B9%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A4%BE%20Brihat%20Samhita%20B.P%20Mishra.pdf

3. नित्यकर्मपूजाप्रकाश – गीताप्रेस, गोरखपुर – https://ia802200.us.archive.org/2/items/HindiBookNityaKarmPoojaPrakashCompletebyGitaPress/Hindi%20Book-Nitya-Karm-Pooja-Prakash%28Complete%29by%20Gita%20Press.pdf
4. शिवमहिम्नःस्तोत्रम् (मूलपाठसहित सस्वर गायन, स्वर : श्रीरमेशभाई ओझा) – https://www.youtube.com/watch?v=kMoD081RxmQ
5. शिवमानसपूजा (मूलपाठसहित सस्वर गायन, स्वर : श्रीरमेशभाई ओझा) – https://youtu.be/kC2vqV9wt2g?si=r4IpQjRbdpKEEZ0l
6. शिवमानसपूजा (मूलपाठ तथा अर्थ सहित सस्वर गायन, स्वर : माधवी मधुकर) – https://youtu.be/zukqadAe9N8?si=78TgWuCdBHlpjiVY
7. गौरीदशकम् – https://youtu.be/7GsnT5t9Zjg?si=hZ_5ZsdFkJjLHyTK
8. गौरीदशकम् – https://youtu.be/eeEBEI5ErNk?si=YjQP_XuqNFaEjj6u

एम.ए. (संस्कृत) चतुर्थार्द्धसत्र

वर्ग 'अ' साहित्य
SANS-DSE-Gr.A-T404
संस्कृत-काव्यशास्त्र

पाठ्यक्रमोद्देश्य :
(Course Objectives)

- आचार्य मम्मट के काव्यलक्षण (तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि) में विशेष्य पद 'शब्दार्थौ' का प्रथम विशेषणपद है 'अदोषौ।' अतः काव्यदोष-परिज्ञान के बिना काव्यबोध सम्भव नहीं है। 'मुख्यार्थहतिर्दोषः रसश्च मुख्यः' इत्यादि से स्पष्ट है कि काव्य में मुख्यार्थ रस है और रसदोष के परिहार हेतु रसदोषों का ज्ञान आवश्यक है। इसी उद्देश्य से काव्यप्रकाश का सप्तमोल्लास पाठ्यक्रम में रखा गया है।
- काव्यदोष के पश्चात् 'शब्दार्थौ' के द्वितीय विशेषणपद 'सगुणौ' का बोध आवश्यक है। अतः काव्यगुणों के बोधार्थ काव्यप्रकाश का अष्टमोल्लास पठनीय है।
- काव्यात्मतत्त्वविषयक विचार करने वाले विभिन्न काव्यसंप्रदायों में 'ध्वनि' को काव्य का आत्मा सिद्ध करने वाला, एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है आनन्दवर्द्धनविरचित 'ध्वन्यालोक'। ध्वनिसिद्धान्त के परिज्ञान हेतु ध्वन्यालोक का प्रथम उद्योत पाठ्यक्रम में निर्धारित किया गया है।
- संस्कृत-काव्यशास्त्र के विद्यार्थियों को काव्यशास्त्रीय इतिहास और परम्परा की जानकारी देने के प्रयोजन से काव्यशास्त्र के इतिहास को पाठ्यक्रम में रखा गया है।

अधिगम-फलितांश :
(Learning Outcomes)

- विद्यार्थी काव्य के मुख्यदोष 'रसदोष' का सोदाहरण परिज्ञान कर काव्य-समीक्षा में सक्षम हो सकेंगे।
- काव्यरचना में रुचि व प्रवृत्ति वाले छात्र रसदोषों से बचने और रसविरोधपरिहारोपायादि के प्रयोग में समर्थ होंगे।
- विद्यार्थी काव्यगुणों के बोध के साथ ही गुणों और अलङ्कारों में पार्थक्य का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- ध्वन्यालोक के निर्धारित अंश के अध्ययन से विद्यार्थी ग्रन्थकार के व्यक्तित्व, कृतित्व, ग्रन्थप्रयोजन, ध्वनिविषयक विप्रतिपत्तियों, वाच्यार्थ एवं प्रतीयमान अर्थ की भिन्नता इत्यादि को जान सकेंगे
- इसी प्रकार व्यङ्ग्यार्थ का प्राधान्य, ध्वनिकाव्यलक्षण तथा ध्वनिविरोधी मतों – अभाववाद, भाक्तवाद एवं अलक्षणीयतावाद का खण्डन इत्यादि विषयों के ज्ञान को भी छात्र ध्वन्यालोक के अध्ययन से अर्जित कर सकेंगे।
- विद्यार्थी काव्यशास्त्र के इतिहास के अध्ययन से संस्कृतकाव्यशास्त्र की महती परम्परा तथा उसके प्रमुख चिन्तकों एवं ग्रन्थों से परिचित हो सकेंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम
(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. काव्यप्रकाश (मम्मट) – सप्तम उल्लास (रसदोषमात्र)।

इकाई - 2. काव्यप्रकाश (मम्मट) – अष्टम उल्लास।

इकाई - 3. ध्वन्यालोक (आनन्दवर्धन) प्रथम उद्योत, कारिका ०१ से ०९ पर्यन्त।

इकाई - 4. ध्वन्यालोक (आनन्दवर्धन) प्रथम उद्योत, कारिका १० से १९ पर्यन्त।

इकाई - 5. काव्यशास्त्रेतिहास – प्रमुख चिन्तक एवं ग्रन्थ।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत काव्यप्रकाश सप्तमोल्लास से एक प्रश्न/व्याख्या (08 अङ्क) संस्कृत-माध्यम से करणीय है तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. काव्यप्रकाश – वामनाचार्य झळकीकर, निर्णयसागर प्रेस, मुम्बई।
2. काव्यप्रकाश – आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि, चौखम्बा
3. काव्यप्रकाश – रामसागर त्रिपाठी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
4. काव्यप्रकाश – श्रीनिवास शास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ।
5. काव्यप्रकाश – डॉ सत्यव्रत सिंह, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
6. काव्यप्रकाशः (सोलह टीकाओं सहित) – ज्योत्स्ना मोहन, नाग प्रकाशक, दिल्ली।
7. ध्वन्यालोक (सम्पूर्ण) – आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी।
8. ध्वन्यालोक – लोकमणि दाहाल, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
9. ध्वन्यालोक (लोचनटीका-समेत) – डॉ रामसागर त्रिपाठी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
10. ध्वन्यालोक – डॉ कृष्णकुमार, साहित्य भण्डार, मेरठ।
11. ध्वन्यालोक – कृष्णचन्द्र चतुर्वेदी, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
12. रससिद्धान्त की शास्त्रीय समीक्षा – प्रो सुरजनदास स्वामी, जोधपुर।
13. रसालोचनम् – डॉ ब्रह्मानन्द शर्मा, शरण पुस्तक भण्डार, जयपुर।
14. काव्यदोष : उद्भव और विकास (खण्ड १-२) – डॉ माधोदास व्यास।
15. Sanskrit Poetics – S. K. De
16. भारतीय साहित्यशास्त्र – आचार्य बलदेव उपाध्याय, प्रसाद परिषद्, वाराणसी।
17. भारतीय साहित्यशास्त्र कोश – डॉ राजवंश सहाय हीरा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना।
18. अलंकारशास्त्र की परम्परा – डॉ राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. काव्यप्रकाश (सम्पूर्ण, व्याख्या - डॉ श्रीनिवास शास्त्री) – https://ia804706.us.archive.org/13/items/in.ernet.dli.2015.545697/2015.545697.Mamta-Chariya.pdf
2. काव्यप्रकाश-खण्डनम् (महामहोपाध्याय-खुश्फहम्-सिद्धिचन्द्रगणि-रचितम्) – https://www.jainfoundation.in/JAINLIBRARY/books/Kavya_Prakash_Khandana_002506_HR.pdf
3. ध्वन्यालोक (सम्पूर्ण उद्योत १-४) – आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि (सम्पादन व भूमिका : डॉ नगेन्द्र) – https://ia600209.us.archive.org/18/items/Dhvanyalokah/dhvanyaloka_hindi.pdf
4. ध्वन्यालोक-प्रथमोद्योत (अभिनवगुप्त-विरचित-लोचनटीका-सहित) – https://ia804708.us.archive.org/28/items/in.ernet.dli.2015.407729/2015.407729.Dhwanyalok-Udhot-1_text.pdf
5. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख सम्प्रदाय – https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/24262/1/Unit-5.pdf
6. रस सम्प्रदाय और उसके प्रमुख आचार्य – https://hindisarang.com/ras-siddhant/

एम.ए. (संस्कृत) चतुर्थार्द्धसत्र

वर्ग 'अ' साहित्य

SANS-DSE-Gr.A-T405(A)

लघु शोध-प्रबन्ध/परियोजना

(Dissertation/Project)

पाठ्यक्रम-विवरण

(Course Description)

विद्यार्थी को लघुशोध-प्रबन्ध(Dissertation)-लेखन या परियोजना-कार्य (Project Work) के लिए एक ऐसा विषय-क्षेत्र दिया जाएगा, जिस पर विद्यार्थी और उसके पर्यवेक्षक के मध्य पारस्परिक सहमति होगी। विभागीय बैठक में एतत्सम्बन्धी व्यापक विषय-क्षेत्रों पर विचार-विमर्श कर उन्हें अन्तिम रूप दिया जाएगा और विधिवत् रूप से अधिसूचित किया जाएगा। शोध-प्रबन्ध/परियोजना-कार्य के नियम भी समय-समय पर विद्यार्थी को बताए जाएँगे। कुल 150 अङ्कात्मक लघुशोध-प्रबन्ध/परियोजना-कार्य के बाह्य व आन्तरिक मूल्याङ्कन हेतु अङ्कभार-विभाजन इस प्रकार होगा –

लिखित प्रस्तुति (Written Presentation) : 120 अङ्क

वाक्परीक्षा/मौखिकी (Viva-Voce) : 30 अङ्क

आन्तरिक मूल्याङ्कन के लिए मौखिकी का सञ्चालन विभागीय समिति द्वारा किया जाएगा, जिसमें विभागाध्यक्ष/विभाग-प्रभारी एवं पर्यवेक्षक सहित सभी सदस्य होंगे। पर्यवेक्षक, समिति द्वारा सर्वसम्मति से लिए गए निर्णय को अतिक्रान्त नहीं करेगा और न ही वह निर्णय को प्रभावित करेगा। प्रबन्ध-प्रस्तुति व मौखिकी की तिथियों की सूचना विद्यार्थियों को यथोचित समय पर दे दी जाएगी और विद्यार्थियों के मौखिकी-प्राप्ताङ्कों को परीक्षा-नियमों और विनियमों में निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार विश्वविद्यालय के परीक्षा-अनुभाग को प्रेषित किया जाएगा। लघुशोध-प्रबन्ध लगभग 80 से 100 पृष्ठों का होगा, जिसे सुपाठ्य हस्तलिखित या टङ्कित (Font-Size 12, Single Space) स्वरूप में प्रस्तुत किया जाएगा। शोध-प्रबन्ध/परियोजना की प्रस्तुति विश्वविद्यालय के साहित्यिक चौर्य से सम्बद्ध नियमों को पूरा करने के पश्चात् ही सम्भव होगी। परीक्षार्थी को अपने प्रबन्ध या परियोजना के साथ नियमानुसार अचौर्य-प्रमाणपत्र संलग्न करना होगा। एतदतिरिक्त अपेक्षित सम्बन्धित सूचनाएँ विभाग द्वारा विद्यार्थियों को यथासमय दे दी जाएँगी।

एम.ए. (संस्कृत) चतुर्थार्द्धसत्र

वर्ग 'अ' साहित्य
SANS-DSE-Gr.A-T405(B)
नाटक तथा नाट्यशास्त्र

पाठ्यक्रमोद्देश्य :
(Course Objectives)

- रामकथामूलक नाटक की सम्पूर्णता के लिए तथा राम-सीता के चरित्र की महिमा, उनके आदर्श, धर्म व न्याय की महत्ता को प्रख्यापित करने हेतु उत्तररामचरित नाटक के अवशिष्ट तीन अङ्क पाठ्यक्रम में निर्धारित किए गए हैं।
- महाभारतकथामूलक नाटक की सम्पूर्णता-प्राप्ति के लिए तथा भीम-द्रौपदी-युधिष्ठिर के चरित्राङ्कन, गौडी रीति व ओजःप्रधान गुणों के परिज्ञानार्थ वेणीसंहार नाटक के अवशिष्ट अन्त्य तीन अङ्क यहाँ पठनीय हैं।
- भरतमुनि का रससूत्र सदैव गहन विवेचन का विषय रहा है। रस ही काव्य का प्राणस्थानीय होता है। इसका सम्यक् ज्ञान साहित्य के विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है। एतदर्थ नाट्यशास्त्र का षष्ठ अध्याय निर्धारित किया गया है।
- दश प्रकार के रूपकों में नाटक प्रमुखतम विधा है। इसके स्वरूपज्ञानार्थ तृतीय प्रकाश की ०१ से ३८ कारिकाएँ पाठ्यक्रम में निर्धारित हैं।
- दशविध रूपकों में नाटक के अलावा अन्य रूपकों के स्वरूपज्ञान हेतु तृतीय प्रकाश की ३९ से ७६ कारिकाएँ अध्येय हैं।

अधिगम-फलितांश :
(Learning Outcomes)

- विद्यार्थी साहित्यिक, धार्मिक व पौराणिक ज्ञान के साथ नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा प्राप्त करने के साथ अपने भाषिक कौशल में भी अभिवृद्धि कर सकेंगे ।
- इस अध्ययन से विद्यार्थी साहित्य व पौराणिक ज्ञान के साथ करुण, वीर और अद्भुत रस की त्रिवेणी में अवगाहन कर रसास्वादन कर सकेंगे।
- विद्यार्थी इस अध्ययन से रससम्बन्धी समस्त विवेचनाओं और तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त कर विश्लेषण कर सकेंगे।
- इस अध्ययन से विद्यार्थी नाटक के समस्त अङ्गों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे। वे पूर्वरङ्ग, आमुखलक्षण, आमुख के प्रकार तथा अङ्गों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- दशरूपक के अधीती विद्यार्थी रूपकों के समस्त प्रकारों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। उनमें रूपकों को समझने की क्षमता विकसित होगी।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई -1. उत्तररामचरितम् – भवभूति (०५-०७ अङ्क)।

इकाई - 2. वेणीसंहारनाटकम् – भट्ट नारायण (०४-०६ अङ्क)।

इकाई - 3. नाट्यशास्त्रम् – अध्याय ६ मात्र।

इकाई - 4. दशरूपकम् – तृतीय प्रकाश (०१-३८ कारिका)।

इकाई - 5. दशरूपकम् – तृतीय प्रकाश (३९–७६ कारिका)।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –
  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।
  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत इकाई 1 से एक प्रश्न/व्याख्या (08 अङ्क) संस्कृत-माध्यम से करणीय है तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. उत्तररामचरितम् – तारिणीश झा, रामनारायणलाल बेनीप्रसाद, प्रयागराज।
2. उत्तररामचरितम् – श्रीशेषराज शर्मा शास्त्री काव्यतीर्थः, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ ऑफिस, वाराणसी।

3. उत्तररामचरितम् – डॉ रमाकान्त त्रिपाठी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी।
4. उत्तररामचरितम् – डॉ शिवबालक द्विवेदी, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
5. वेणीसंहारनाटकम् – पं तारिणीश झा, रामनारायण बेणीमाधव, प्रयागराज।
6. वेणीसंहारनाटकम् – रमाशंकर त्रिपाठी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
7. वेणीसंहारनाटकम् – पं परमेश्वरदीन पाण्डेय, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
8. वेणीसंहारनाटकम् – डॉ ठक्कन मिश्र, परिमल प्रकाशन, दिल्ली।
9. वेणीसंहारनाटकम् – डॉ बालगोविन्द झा, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
10. वेणीसंहारनाटकम् – आचार्य माधव जनार्दन रटाटे, भारतीय बुक कॉरपोरेशन, दिल्ली।
11. नाट्यशास्त्रम् – सं. डॉ पारसनाथ द्विवेदी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
12. नाट्यशास्त्रम् (प्रथम, द्वितीय, षष्ठाध्याय) प्रो ब्रजमोहन चतुर्वेदी, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली।
13. नाट्यशास्त्रम् (प्रथमो भागः, अध्याय १-७) – डॉ रविशंकर नागर, परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली।
14. नाट्यशास्त्रम् (प्रारम्भिकाध्यायद्वयमात्रम्) – पं श्रीजगन्नाथशास्त्री तैलङ्ग, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
15. नाट्यशास्त्रम् – सं. बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ ऑफिस, वाराणसी।
16. नाट्यशास्त्रम् – काशी संस्कृत ग्रन्थमाला, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
17. नाट्यशास्त्रम् – काव्यमाला संस्करणम्, सं. पं केदारनाथ, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
18. भारतीय नाट्यशास्त्र की परम्परा एवं विश्व रंगमञ्च – राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रतिभा पब्लिकेशन।
19. नाट्यशास्त्रसोपानम् (प्रश्नोत्तरात्मकम्) – डॉ शिवप्रसाद द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
20. नाट्यशास्त्रम् (प्रथम-द्वितीयाध्यायौ) – सं. डॉ श्रीकृष्ण 'जुगनू', चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ ऑफिस,वाराणसी।
21. दशरूपकम् – डॉ रामजी उपाध्याय, भारतीय विद्या संस्थान, वाराणसी।
22. दशरूपकम् – श्रीनिवास शास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ।
23. दशरूपकम् – डॉ रमाशङ्कर त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
24. दशरूपक – लोकमणि दाहाल, चौखम्बा अमरभारती, वाराणसी।
25. दशरूपकम् – डॉ भोलाशंकर व्यास, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
26. अभिनव भारती (अभिनव गुप्त) – दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. उत्तररामचरितम् (तारिणीश झा) – https://ia801405.us.archive.org/6/items/in.ernet.dli.2015.400856/2015.400856.Uttarramcharitam.pdf
2. वेणीसंहारनाटकम् (चौखम्बा अमरभारती) – https://ia601506.us.archive.org/28/items/in.ernet.dli.2015.400877/2015.400877.Venisamhara-Nataka.pdf
3. दशरूपकम् – https://archive.org/details/Dasarupaka
4. नाट्यशास्त्रम् (अध्याय- १,२,३) – https://ia904603.us.archive.org/33/items/in.ernet.dli.2015.487502/2015.487502.Naatyashashtram.pdf
5. नाट्यशास्त्रम् (अध्याय ६, मूलमात्रम्) – https://sanskritdocuments.org/doc_z_misc_major_works/natya06.pdf

एम.ए. (संस्कृत) चतुर्थार्द्धसत्र

वर्ग 'अ' साहित्य

SANS-DSE-Gr.A-T405(C)

प्राचीन काव्य

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- श्रीहर्ष-विरचित 'नैषधीयचरितम्' महाकाव्य संस्कृत-काव्यों की वृहत्त्रयी में परिगणित है। वृहत्त्रयी के महाकाव्यों के मूलपाठ से छात्रों का यत्किञ्चित् साक्षात्कार आवश्यक है, इस दृष्टि से नैषध महाकाव्य के प्रथमसर्ग को पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।
- नैषध महाकाव्य में मुख्यतः तो नल-दमयन्ती का अतिरम्य प्रेमाख्यान है, किन्तु यह काव्य जीवन-दर्शन का प्रतिपादक काव्य भी है, अतः काव्यरसास्वाद और जीवन-दर्शनबोध – इस उभयविध प्रयोजन से नैषध अध्येय है।
- अद्वैत वेदान्त का 'खण्डनखण्डखाद्य' सदृश प्रौढ ग्रन्थ रचने वाले श्रीहर्ष के नैषध के विषय में कहा जाता है कि 'नैषधं विद्वदौषधम्' अर्थात् नैषध महाकाव्य विद्वत्ता की कसौटी है, विद्वानों के लिए औषधि है, रसायन है, टॉनिक है। ऐसे काव्य की एक झलक छात्रों को देखनी चाहिए, इस उद्देश्य से भी इस काव्य का एक सर्ग अध्येतव्य है।
- प्रबन्धात्मक श्रव्यकाव्यों में 'चम्पू' यह एक भिन्न काव्यविधा है, जिसमें गद्य और पद्य का मिश्रण रहता है – 'गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते।' चम्पू विधा का परिचय करवाने के लिए यहाँ 'चम्पूभारतम्' काव्य का आंशिक अध्ययन निर्धारित किया गया है।
- प्राचीन संस्कृत साहित्य से परिचय के निमित्त कतिपय काव्यों का सामान्य अध्ययन अपेक्षित है, इनमें दो वृहत्त्रयी में परिगणित काव्य (किरातार्जुनीयम् व नैषधीयचरितम्) हैं, दो लघुत्रयी में गण्य काव्य (रघुवंश व कुमारसम्भव) हैं तथा एक भट्टिकवि का रावणवध (भट्टिकाव्य) नामक काव्य है।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- अधीतभारवि, अधीतमाघ छात्रों का श्रीहर्ष को पढने के साथ ही वृहत्त्रयी का आंशिक अध्ययन सम्पन्न हो जाएगा।
- पुण्यश्लोक राजा नल के गुणानुवाद से प्रेरणा ग्रहण करके छात्र अपना व्यक्तित्व-विकास कर सकेंगे।
- छात्र 'नैषधे पदलालित्यम्' तथा 'नैषधं विद्वदौषधम्' जैसी उक्तियों के स्वारस्य को सोदाहरण समझ सकेंगे।
- श्रीहर्ष की भाषा-शैली के साथ ही छात्र यह भी जान पाएँगे कि कवि ने 'ग्रन्थग्रन्थिरिह क्वचित्क्वचिदपि' यह गर्वोक्ति क्यों की?
- नैषध के अधीती 'उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः' इस प्रशस्ति के औचित्यानौचित्य को समझ सकेंगे।
- छात्र चम्पूविधा से परिचित होने के साथ ही एक रम्य पौराणिक कथाश्रित चम्पूकाव्य का रसास्वाद भी कर सकेंगे।
- कतिपय काव्यों के सामान्य अध्ययन से प्राचीन-संस्कृत साहित्य की समझ और बढ़ेगी।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई -1. नैषधीयचरितम् - श्रीहर्ष (प्रथम सर्ग) पद्य ०१–५० तक।

इकाई - 2. नैषधीयचरितम् - श्रीहर्ष (प्रथम सर्ग) पद्य १०७–१४५ तक।

इकाई - 3. चम्पूभारतम् - अनन्तभट्ट (प्रथम स्तबक) पद्य ०१–३७ (गद्यांश सहित)।

इकाई - 4. चम्पूभारतम् - अनन्तभट्ट (प्रथम स्तबक) पद्य ३८–८४ (गद्यांश सहित)।

इकाई - 5. सामान्य अध्ययन – निम्नलिखित संस्कृत महाकाव्यों का सामान्य अध्ययन – किरातार्जुनीयम्, नैषधीयचरितम्, भट्टिकाव्यम्, कुमारसम्भवम्, रघुवंशम्।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –
  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।
  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत इकाई 1 से व्याख्या (08 अङ्क) संस्कृत-माध्यम से करणीय है तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग) – मोहनदेव पन्त, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
2. नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग) – श्री बद्रीनाथ मालवीय, रामनारायणलाल विजयकुमार, प्रयागराज।
3. नैषधीयचरितम् (सम्पूर्णम्) शेषराज शर्मा 'रेग्मी' – चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
4. नैषधमहाकाव्यम् (प्रथमः सर्गः) – शिवबालक द्विवेदी, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
5. नैषधीयचरितम् – आ. रामचन्द्र मिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
6. चम्पूभारतम् – काशीनाथ पाण्डुरङ्ग परब एवं वासुदेव लक्ष्मणशास्त्री पणशीकर, निर्णयसागर प्रेस, मुम्बई।
7. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा – पाण्डेय एवं व्यास, साहित्य निकेतन, कानपुर।
8. संस्कृत साहित्य का इतिहास – आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी।
9. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी।
10. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास – प्रो राधावल्लभ त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
11. संस्कृत साहित्य का इतिहास – प्रीतिप्रभा गोयल, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।
12. संस्कृत सुकवि समीक्षा – आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
13. History Of Classical Sanskrit Literature – A.B. Keith, Motilal Banarsidas, Delhi. हिन्दी अनुवाद सहित – मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. नैषधीयचरितम् (सर्ग १-१०) हिन्दी व्याख्या – आचार्य शेषराज शर्मा 'रेग्मी' – https://www.jainfoundation.in/JAINLIBRARY/books/naishadhiya_charitam_032779_std.pdf
2. नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग) – https://www.jainfoundation.in/JAINLIBRARY/books/naishadhiya_charitam_01_032783_hr6.pdf
3. श्रीहर्ष और नैषधीयचरित – https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/84539/1/Unit-1.pdf
4. नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग, पद्य १-३५) – https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/84542/1/Unit-2.pdf
5. नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग, पद्य ३६-७०) – https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/84543/1/Unit-3.pdf
6. नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग, पद्य ७१-१०५) – https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/84544/1/Unit-4.pdf
7. नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग, पद्य १०६-१४५) – https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/84545/1/Unit-5.pdf
8. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा (पाण्डेय एवं व्यास) – https://ia801805.us.archive.org/5/items/dli.ernet.525515/525515-Sanskrit%20Sahitya%20Ki%20Rooprekha.pdf

एम.ए. (संस्कृत) चतुर्थार्द्धसत्र

वर्ग 'अ' साहित्य

SANS-DSE-Gr.A-T405(D)

महाकवि कालिदास

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- सहृदयजन जन्मजन्मान्तर में भी जिस कालिदास की कविता सुनते रहने की कामना करते हैं ('कालिदास कविता सम्भवतु मे जन्मजन्मनि'), उस महाकवि की कविता 'रघुवंश' की रसानुभूति छात्रवर्ग को कराना।
- राम के अयोध्या प्रत्यागमन के पश्चात् लोकापवाद के वशीभूत होकर राम द्वारा प्राणप्रिया सीता के परित्याग से सम्बद्ध मार्मिक प्रसङ्ग का पाठ्यरूपेण प्रस्तुतीकरण।
- स्नातक से परास्नातकोपाधि पर्यन्त कालिदास की सब रचनाओं का समग्रता से अध्ययन नहीं तो उनके किञ्चिद् किञ्चिद् मूलपाठ से छात्रों का साक्षात्कार हो सके, इस उद्देश्य से यहाँ 'ऋतुसंहार' का अंश रखा गया है।
- 'ऋतुसंहार' के प्रथम सर्ग के द्वारा ग्रीष्मर्तु का हृदयहारी वर्णन तथा षष्ठ सर्ग के द्वारा मनोहारी वसन्तर्तु वर्णन छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करना।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- 'क इह रघुकारे न रमते?' इस उक्ति को अनेकशः सुन-पढ़-लिख चुके छात्र रघुवंश के अन्तर्गत की समीक्षा करके जान पाएँगे कि अन्यान्य रचनाओं के रहते हुए भी कालिदास 'रघुकार' के अभिधान से ही क्यों प्रसिद्ध हुए।
- अधीतकाव्यशास्त्र छात्र यह भी जान सकेंगे कि कालिदास ने कहाँ, कितने अंश में भारतीय काव्यशास्त्र के प्रसिद्ध प्रस्थान का अनुगमन किया है और कहाँ उसकी मर्यादा तोड़कर अपना पृथक् पथ-निर्माण किया है – 'मुरारेस्तृतीयः पन्थाः।'
- रघुवंश के चतुर्दश सर्ग में भी 'वाच्यस्त्वया मद्वचनात्स राजा ... किं तत्सदृशं कुलस्य?' इत्यादि अनेक प्रसिद्ध श्लोक हैं, छात्र उनको पढ़कर, कण्ठस्थ करके यथावसर उपयोग कर सकेंगे।
- 'ऋतुसंहार' की एक गीतिकाव्य अथवा खण्डकाव्य के रूप में साहित्यशास्त्रीय समीक्षा छात्र कर पाएँगे।
- भारतवर्ष, इस भूमण्डल पर ऐसा स्थान है, जहाँ विविध प्रकार की षड् ऋतुएँ क्रम से आती हैं, कालिदास ने अपने गीतिकाव्य के १-६ सर्गों में इन षड्ऋतुओं का क्रमिक वर्णन किया है। छात्र यहाँ ग्रीष्मर्तु और वसन्तर्तु के सर्वाङ्गपूर्ण चारु-चित्रण का साक्षात्कार कर सकेंगे।
- ऋतुसंहार में 'निदाघकालोऽयमुपागतः प्रिये' से प्रारम्भ ग्रीष्मवर्णन में अनेक सुन्दर स्मरणीय शृङ्गारिक पद्य हैं और वसन्तवर्णन में भी 'सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते' जैसे सकृत् श्रवण-पठन मात्र से कण्ठाग्र हो जाने वाले पद्य हैं; छात्र इन्हें जानकर व्यवहार में यथावश्यक स्वैर प्रयोग कर सकेंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. रघुवंशम् – चतुर्दश सर्ग (पद्य ०१–४५)।

इकाई - 2. रघुवंशम् – चतुर्दश सर्ग (पद्य ४६–८७)।

इकाई - 3. ऋतुसंहारम् – प्रथम सर्ग।

इकाई - 4. ऋतुसंहारम् – षष्ठ सर्ग।

इकाई - 5. सामान्य प्रश्न – कालिदास के गीतिकाव्य एवं महाकाव्यों की साहित्यशास्त्रीय समीक्षा (यथा सौन्दर्य-वर्णन, ऋतु-वर्णन, प्रकृति-वर्णन, विलाप-वर्णन, रसालङ्कार इत्यादि) तथा कालिदासकालीन धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थिति।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत रघुवंशम् (इकाई 1) से 08 अङ्क की व्याख्या संस्कृत-माध्यम से प्रष्टव्य है तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. रघुवंशमहाकाव्यम् (चतुर्दशः सर्गः) – डॉ गङ्गासागर राय, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
2. रघुवंशमहाकाव्यम् (सम्पूर्ण) – मल्लिनाथकृत सञ्जीवनी टीका सहित हिन्दी व्याख्या, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
3. ऋतुसंहारम् – श्री लक्ष्मीप्रपन्नाचार्य, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
4. ऋतुसंहार –मूलचन्द्र पाठक, विद्या विहार प्रकाशन।
5. ऋतुसंहारकाव्यम् – आचार्य बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, कालिदास अकादेमी, उज्जैन।
6. कालिदास-ग्रन्थावली – आ. पं. सीताराम चतुर्वेदी, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
7. कालिदास-ग्रन्थावली – ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. रघुवंशमहाकाव्यम् (सम्पूर्ण) – मल्लिनाथकृत सञ्जीवनी टीका सहित हिन्दी व्याख्या – https://www.jainfoundation.in/JAINLIBRARY/books/raghuvansh_mahakavya_032598_std.pdf
2. कालिदास-ग्रन्थावली – https://ia801508.us.archive.org/8/items/in.ernet.dli.2015.427016/2015.427016.KalidasGranthvaliAC4658.pdf

एम.ए. (संस्कृत) चतुर्थार्द्धसत्र

वर्ग 'ब' व्याकरणशास्त्र
SANS-DSE-Gr.B-T404
वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- व्याकरणमहाभाष्योक्त व्याकरणाध्ययन के प्रयोजन यहाँ भी उद्देश्यत्वेन अभिप्रेत हैं।
- जो भी भाषा व्यवहार-भाषा नहीं है, उस भाषा में प्रवेश और विशेषतः गति के लिए व्याकरण-बोध आवश्यक है।
- संस्कृत-वाक्यरचना में प्रायः सन्धिकार्य का प्राचुर्य देखा जाता है, अतः व्याकरणाध्ययन में सन्धि-प्रकरण का बोध आवश्यक है।
- संस्कृत-भाषा के प्रयोग में कौशल्य प्राप्त्यर्थ सुँबन्त व तिङन्त प्रकरण का ज्ञान अनिवार्य है। इस हेतु सुँबन्त प्रकरण किंवा षड्लिङ्गप्रकरण (अजन्त पुँल्लिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग प्रकरण तथा हलन्त पुँल्लिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग प्रकरण) का आद्यन्त अध्ययनाध्यापन उद्दिष्ट है। इसी प्रकार क्रियापदों के ज्ञान के लिए तिङन्त प्रकरण शिक्ष्य है।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- छात्र सन्धि-प्रकरण को हृदयङ्गम करेंगे, जो कि पाणिनीय-व्याकरण के अध्ययन के लिए प्राथम्येन अपेक्षित है।
- जो पद नहीं हैं, ऐसे शब्दों का संस्कृत भाषा के वाक्यों में प्रयोग नहीं हो सकता (अपदं न प्रयुञ्जीत)। सुँबन्त या तिङन्त होने से ही शब्द पद बन पाते हैं। सुँबन्त-प्रकरण के अधिगम से छात्र सुँबन्त पद-निर्माण-पद्धति में अभ्यस्त होंगे और भाषिक व्यवहार में पदों (सुँबन्तों) का उचित प्रयोग कर सकेंगे।
- सुँबन्त-प्रकरण के साथ ही तिङन्त-प्रकरण के भी अधिगम से छात्र तिङन्त-पद-निर्माण-पद्धति में अभ्यस्त होंगे और भाषिक व्यवहार में पदों (तिङन्तों) का उचित प्रयोग कर सकेंगे।
- हलन्त पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग प्रकरण के अध्ययन से विद्यार्थियों में सुँबन्त प्रकरण के शब्दरूपों की सूत्र-दर-सूत्र समझ विकसित होगी और वे षड्लिङ्गप्रकरण के शब्दरूपों की ससूत्र सिद्धि कर सकेंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. सिद्धान्त कौमुदी – सन्धिप्रकरण।

इकाई - 2. सिद्धान्त कौमुदी – सुँबन्तप्रकरण (हलन्त पुँल्लिङ्ग, हलन्त स्त्रीलिङ्ग, हलन्त नपुंसकलिङ्ग प्रकरण)।

इकाई - 3. सिद्धान्त कौमुदी – दिवादिगण एवं स्वादिगण।

इकाई - 4. सिद्धान्त कौमुदी – तुदादिगण एवं रुधादिगण।

इकाई - 5. सिद्धान्त कौमुदी – तनादिगण से चुरादिगण।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।

2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत इकाई 1 से 08 अङ्क के प्रश्न संस्कृत-माध्यम से प्रष्टव्य हैं तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (बालमनोरमा-हिन्दीव्याख्या सहित) – गोपालदत्त पाण्डेय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
2. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (बालमनोरमा-तत्त्वबोधिनी सहितम्) गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी एवं परमेश्वरानन्द शर्मा, दिल्ली।
3. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी – जगदीशलाल शास्त्री एवं मधुबाला शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
4. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (मूलमात्रम्) – ॐ नमः शिवाय प्रकाशन, देवघाटधाम, तनहूँ।
5. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी ('बालमनोरमा' व्याख्यासहिता, प्रथमो भागः) – पण्डित श्रीगोपाल शास्त्री नेने, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, बनारस।
6. बालमनोरमा भ्रान्तिदिग्दर्शन – भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (मूलमात्रम्) – https://ia601705.us.archive.org/18/items/SiddhanaKaumudi_by_CK/%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%A7%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A4%95%E0%A5%8C%E0%A4%AE%E0%A5%81%E0%A4%A6%E0%A5%80%20%E0%A4%B8%E0%A4%AC%E0%A5%88_FINAL.pdf
2. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी ('बालमनोरमा' व्याख्यासहिता, प्रथमो भागः) – पण्डित श्रीगोपाल शास्त्री नेने, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, बनारस। https://ia801506.us.archive.org/23/items/in.ernet.dli.2015.486165/2015.486165.VAKARAYAN-SIDHANTH.pdf

एम.ए. (संस्कृत) चतुर्थार्द्धसत्र

वर्ग 'ब' व्याकरणशास्त्र

SANS-DSE-Gr.B-T405(A)

लघु शोध-प्रबन्ध/परियोजना

(Dissertation/Project)

पाठ्यक्रम-विवरण

(Course Description)

विद्यार्थी को लघुशोध-प्रबन्ध(Dissertation)-लेखन या परियोजना-कार्य (Project Work) के लिए एक ऐसा विषय-क्षेत्र दिया जाएगा, जिस पर विद्यार्थी और उसके पर्यवेक्षक के मध्य पारस्परिक सहमति होगी। विभागीय बैठक में एतत्सम्बन्धी व्यापक विषय-क्षेत्रों पर विचार-विमर्श कर उन्हें अन्तिम रूप दिया जाएगा और विधिवत् रूप से अधिसूचित किया जाएगा। शोध-प्रबन्ध/परियोजना-कार्य के नियम भी समय-समय पर विद्यार्थी को बताए जाएँगे। कुल 150 अङ्कात्मक लघुशोध-प्रबन्ध/परियोजना-कार्य के बाह्य व आन्तरिक मूल्याङ्कन हेतु अङ्कभार-विभाजन इस प्रकार होगा –

लिखित प्रस्तुति (Written Presentation) : 120 अङ्क

वाक्परीक्षा/मौखिकी (Viva-Voce) : 30 अङ्क

आन्तरिक मूल्याङ्कन के लिए मौखिकी का सञ्चालन विभागीय समिति द्वारा किया जाएगा, जिसमें विभागाध्यक्ष/विभाग-प्रभारी एवं पर्यवेक्षक सहित सभी सदस्य होंगे। पर्यवेक्षक, समिति द्वारा सर्वसम्मति से लिए गए निर्णय को अतिक्रान्त नहीं करेगा और न ही वह निर्णय को प्रभावित करेगा। प्रबन्ध-प्रस्तुति व मौखिकी की तिथियों की सूचना विद्यार्थियों को यथोचित समय पर दे दी जाएगी और विद्यार्थियों के मौखिकी-प्राप्ताङ्कों को परीक्षा-नियमों और विनियमों में निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार विश्वविद्यालय के परीक्षा-अनुभाग को प्रेषित किया जाएगा। लघुशोध-प्रबन्ध लगभग 80 से 100 पृष्ठों का होगा, जिसे सुपाठ्य हस्तलिखित या टङ्कित (Font-Size 12, Single Space) स्वरूप में प्रस्तुत किया जाएगा। शोध-प्रबन्ध/परियोजना की प्रस्तुति विश्वविद्यालय के साहित्यिक चौर्य से सम्बद्ध नियमों को पूरा करने के पश्चात् ही सम्भव होगी। परीक्षार्थी को अपने प्रबन्ध या परियोजना के साथ नियमानुसार अचौर्य-प्रमाणपत्र संलग्न करना होगा। एतदतिरिक्त अपेक्षित सम्बन्धित सूचनाएँ विभाग द्वारा विद्यार्थियों को यथासमय दे दी जाएँगी।

एम.ए. (संस्कृत) चतुर्थार्द्धसत्र

वर्ग 'ब' व्याकरणशास्त्र

SANS-DSE-Gr.B-T405(B)

व्याकरण महाभाष्य तथा प्रक्रिया

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- व्याकरणमहाभाष्योक्त व्याकरणाध्ययन के प्रयोजन यहाँ भी उद्देश्यत्वेन अभिप्रेत हैं।
- जो भी भाषा व्यवहार-भाषा नहीं है, उस भाषा में प्रवेश और विशेषतः गति के लिए व्याकरण-बोध आवश्यक है।
- संस्कृत-व्याकरणशास्त्र की परम्परा के त्रिमुनियों में अन्यतम तथा सर्वाधिक प्रामाणिक (उत्तरोत्तरं मुनीनां प्रामाण्यम्) हैं महर्षि पतञ्जलि। तदीय पातञ्जल महाभाष्य के अध्ययन के विना व्याकरणाध्ययन अपूर्ण रहता है, अतः छात्रों को महाभाष्य से परिचित करवाना लक्षित है।
- संस्कृत-भाषा के प्रयोग में कौशल्य प्राप्त्यर्थ प्रक्रिया भाग का ज्ञान अनिवार्य है। इस हेतु यहाँ दो प्रक्रियाओं – आत्मनेपद-प्रकरण तथा परस्मैपद-प्रकरण का आद्यन्त अध्ययनाध्यापन उद्दिष्ट है।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- छात्र यह जान सकेंगे कि व्याकरणशास्त्र-परम्परा में पातञ्जल महाभाष्य का क्या स्थान है और महाभाष्य किस प्रकार व्याकरणिक चिन्तन की दृष्टि से अगाध गम्भीर है तथा रचना-सौष्ठव की दृष्टि से कितना प्राञ्जल है, जैसा कि भर्तृहरि ने वाक्यपदीय में इस भाष्य के विषय में कहा भी है – 'अलब्धगाधे गाम्भीर्यादुत्तान इव सौष्ठवात्।'
- महाभाष्य के पस्पशाह्निक के अध्ययन के पश्चात् व्याकरण-विषयक अनेक प्रकार के रहस्यों का उद्घाटन होगा।
- महाभाष्य के द्वितीयाह्निक को पढ़ने के पश्चात् वर्णसमाम्नाय-माहेश्वरसूत्र और प्रत्याहार-विषयक अनेक प्रकार की शङ्काओं का समाधान हो सकेगा।
- छात्र पतञ्जलि की भाषा और विषय-प्रतिपादन की रुचिकर शैली से परिचित होंगे।
- महाभाष्य की उपयोगिता, उसकी ऐतिहासिक महत्ता तथा पतञ्जलि-कालीन भारतीय समाज की स्थिति का भी ज्ञान छात्रों को हो सकेगा।
- आत्मनेपद व परस्मैपद प्रकरण के अध्ययन से छात्र इन दोनों पदों के निमित्तों का ज्ञान पाकर उसमें अभ्यस्त होंगे और भाषिक व्यवहार में क्रियापदों का उचित प्रयोग कर सकेंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

इकाई - 1. महाभाष्य – प्रथमाह्निक (पस्पशाह्निक) – प्रदीप-उद्योत सहित।

इकाई - 2. महाभाष्य – द्वितीय आह्निक (प्रत्याहाराह्निक) – प्रदीप-उद्योत सहित।

इकाई - 3. सामान्य अध्ययन – महाभाष्य की शैली, उपयोगिता एवम् ऐतिहासिक महत्त्व तथा पतञ्जलिकालीन भारत में सामाजिक स्थिति।

इकाई - 4. सिद्धान्तकौमुदी – परस्मैपदप्रकरण।

इकाई - 5. सिद्धान्तकौमुदी – आत्मनेपदप्रकरण।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

  – खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

  – खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

  – खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।

2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश का ही उत्तर संस्कृत माध्यम से प्रष्टव्य है।
4. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

विशेष : प्रश्नपत्र के खण्ड 'ब' के अन्तर्गत इकाई 1 से 08 अङ्क के प्रश्न संस्कृत-माध्यम से प्रष्टव्य हैं तथा खण्ड 'अ' के अन्तर्गत 05 प्रश्नों (10 अङ्क) के उत्तर संस्कृत माध्यम से अपेक्षित हैं।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. व्याकरण-महाभाष्यम् (प्रथम आह्निकत्रय) – हिन्दी अनुवाद तथा विवरण सहित, चारुदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
2. व्याकरण-महाभाष्यम् (पस्पशाह्निकम्) - कैयटकृत 'प्रदीप' सहित हिन्दी व्याख्या : आ. मधुसूदनप्रसादमिश्र, प्रस्तावना : पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
3. महाभाष्यम् - प्रदीपोद्योत पर छाया टीका – पायगुण्डे।
4. पतञ्जलिकालीन भारत – प्रभु दयाल अग्निहोत्री, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली।
5. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (बालमनोरमा-हिन्दीव्याख्या सहित) – गोपालदत्त पाण्डेय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
6. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (बालमनोरमा-तत्त्वबोधिनी सहितम्) गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी एवं परमेश्वरानन्द शर्मा, दिल्ली।
7. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी – जगदीशलाल शास्त्री एवं मधुबाला शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
8. बालमनोरमा भ्रान्तिदिग्दर्शन – भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-Books) :

1. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (बालमनोरमा-तत्त्वबोधिनीसहिता, द्वितीयो भागः) – https://www.jainfoundation.in/JAINLIBRARY/books/siddhant_kaumudi_part_02_006149_std.pdf
2. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (मूलमात्रम्) – https://ia601705.us.archive.org/18/items/SiddhanaKaumudi_by_CK/%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%A7%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A4%95%E0%A5%8C%E0%A4%AE%E0%A5%81%E0%A4%A6%E0%A5%80%20%E0%A4%B8%E0%A4%AC%E0%A5%88_FINAL.pdf

E-RESOURCES (USEFUL LINKS)

1. E-PATHSHALA
2. NATIONAL DIGITAL LIBRARY
3. NATIONAL KNOWLEDGE NETWORK
4. NATIONAL ACADEMIC DEPOSITORY
5. SWAYAM
6. SWAYAM PRABHA
7. NCERT
8. DIKSHA PORTAL FOR TEACHERS

SANSKRIT E-JOURNALS (OPEN SOURCE)

1. Ananta –International Journal of Sanskrit Research - ISSN 2394-7519
2. Jahanvi Sanskrit E-Journal – ISSN 0976-8645
3. Prachi Pragya- ISSN 2348 – 8417-A Peer Reviewed Online Journal in Sanskrit
4. Sanskrit Vimarsha /E-Journal
5. National Journal of Hindi & Sanskrit - ISSN- 2454-9177
6. Journal of Sanskrit Samhitya Siddhana- ISSN No - 2454-3926
7. E-Journal of Vedic Studies

🌸🌸🌸 समाप्तम् 🌸🌸🌸